'जायसवाल जागृति'

संरक्षक

स्व. श्री हरिश्चन्द्र जायसवाल, दिल्ली
श्री जवाहर लाल जायसवाल, पूर्व सांसद
श्री अजय कुमार जायसवाल, नयी दिल्ली
श्री मती कविता जायसवाल, नोएडा
श्री पी. जायसवाल, नई दिल्ली
श्री रामप्यारे गुप्त, नई दिल्ली
श्री दयाशंकर जायसवाल, नई दिल्ली
श्री लोटन प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री हरिश्चन्द जायसवाल, बाली नगर, दिल्ली
श्री ओम प्रकाश आर्य, नई दिल्ली
स्व. श्री एस.पी गुप्त, नई दिल्ली
स्व. श्री त्रियुगी नारायण गुप्त, नोएडा
श्री जगराम जायसवाल, दिल्ली
स्व. श्री रामेश्वर दयाल कर्णवाल, नजीबाबाद
श्री भोला प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री पन्नालाल जायसवाल, अहमदाबाद
श्री सुधीर कुमार 'मनहर' जायसवाल, दिल्ली
श्री जयनारायण चौकसे, श्यामला हिल्स, भोपाल
स्व. श्री बी.डी. दखने, उद्योगपति, नागपुर
श्री आनन्द कुमार भमोरे, अमरावती (महाराष्ट्र)
श्री सत्यनारायण जायसवाल (सरपंच), नवाबगंज
श्री छोटेलाल गुप्त जायसवाल, दिल्ली
श्री शंकरलाल जायसवाल, दिल्ली
डा. सत्यप्रकाश जायसवाल, दिल्ली
श्री विजय वालिया, (फरीदाबाद)
स्व. श्री कुंदनलाल जायसवाल, गोरखपुर
श्री ललित जायसवाल, गाजियाबाद
श्री प्रकाश चौधरी, बड़ी सादड़ी, (चित्तोड़गढ़)
श्री राधेश्याम जायसवाल, गाजियाबाद
स्व. श्री गोवर्धनलाल जायसवाल, शामगढ़ (म.प्र.)
श्री रमेश जायसवाल, दिल्ली
श्री मेघराज प्रसाद, दिल्ली
श्री माखन चौधरी, (नोएडा)
श्री सुरेन्द्र कुमार किशनलाल जायसवाल (नांदेड़)
श्री संजीव कुमार चौधरी, दिल्ली
श्री स्वामीनाथ जायसवाल (छत्तीसगढ़)
श्री राजीव कुमार जायसवाल (कटिहार, बिहार)
स्व. श्री बद्रीप्रसाद जायसवाल, (गोरखपुर)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (गुड़गांव)
श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (द्वारिका, दिल्ली)
श्री मुकेश रंजन जायसवाल (साहिबाबाद)
श्री किशोर जायसवाल (दिल्ली)
डॉ. अरुण कुमार गुप्ता (बंगलौर)
डॉ. श्रीमती आभा गुप्ता एवं श्री नितिन जी एन.आर.आई. (अमेरिका)
डॉ. अशोक चौधरी, संचालक, जनकल्याण एवं अध्यक्ष, इनटक

(शेष पृष्ठ 4 पर)

मूल्य 5 रु० प्रति

'जायसवाल जागृति'

(अखिल भारतीय संस्था के रूप में पंजीकृत सामाजिक संस्था 'जायसवाल जागृति', का सर्वाधिक लोकप्रिय त्रैमासिक मुख-पत्र)

वर्ष:30 कार्तिक-चैत्र विक्रमी सम्वत् 2080 अक्टुबर-मार्च 2023-24 अंक: 4–1

अनुक्रमणिका

1.	प्रधान सम्पादक की लेखनी से "सबके राम, हम सभी के राम"	–प्रधान सम्पादक	4–5
2.	जायसवाल जागृति का होली मंगल मिलान आयोजन	–बृजमोहन जायसवाल	6
3.	जायसवाल जागृति का 30 वर्ष का सफर	–प्रधान सम्पादक	6–7
4.	जायसवाल (कलवार) समाज का इतिहास है क्षत्रिय	–डॉ. अशोक चौधरी	8
5.	जायसवाल जागृति के उत्थान के लिए दिखी	–रवि जायसवाल सयोंजक	8
6.	राजराजेश्वर श्री सहस्ताजुन के मंदिर दक्षिण भारत के सम्मानित राजनेता गण कलचुरि	–कलचुरी वंश का इतिहास	9–14
7.	महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय– एक विलक्षण व्यक्तित्व	–गिरिधर मालवीय	14–17
8.	शिकागो सार –	–विवेकानन्द संस्थाना	17–18
9.	खुद का निर्माण : जीवन की गुणवत्ता आप के हाथ	–अजय जायसवाल	18–19
10.	बीमारी का कारण क्या पनीर भी है	–अनिल कुमार जायसवाल	20
11.	हम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता है	–ज्ञान योग	20–21
12.	तूफान में ही लीडर की असल परीक्षा होती है	–रयान रोज लैंस्की	21–22
13.	काम करने वालों की हमेशा कद्र होती है		22
14.	मौलिक विचारो को हमेशा प्रोत्साहन दें	–टूटी टाइगर्ली	22–23
15.	गरिमामय बुढ़ापे के लिए सख्ती से ले वित्तीय फैसले	–नारायण कृष्णमूर्ति	23–24
16.	जानिए कितने का होना चाहिए जीवन व स्वास्थ्य बीमा	–स्वीटी मनोज जैन	24–25
17.	बेटी बचाओ, परिवार बचाओ : एक राष्ट्रीय कर्तव्य	–डॉ. राधेश्याम बंधु	25–27
18.	बदलते भारत की तकदीर हैं आज की नारियां	–पवन जायसवाल	28
19.	भागो मत दुनियाँ को बदलो	–डॉ. राधेश्याम बंधु	28
20.	समझौते की छतरी	–डॉ. राधेश्याम बंधु	29
21.	शब्द	–अवधेन्द्र कुमार	29
22.	कहानी : जूता पालिस करने वाला बना कलेक्टर	–अवधेन्द्र कुमार	30–33
23.	मेरी बेटियां मेरा गर्व	–कविता त्यागी	34
24.	सौभाग्य और समृद्धि का प्रतीक है 'महावर'	–परिणय विशेष	34
25.	सुर्य ने विश्वकर्मा की बात मान ली		34–35
26.	देवराज इन्द्र नें ली युधिष्ठिर की परीक्षा	–आशुतोष गर्ग	35
27.	श्री टी. एन. गुप्ता जी नही रहे	–प्रधान सम्पादक	36
28.	कलवार समाज की सभा में बोले सी.एम.	–कुमार रवि जायसवाल	37
29.	कलवार समाज ने कई रत्न देश को दिये : मुख्यमंत्री	–विशेष सवांदाता	38
30.	**CM Attends Kalwar Samaj Meet at Dhekiajuli**	Special Report	39
31.	**End of era of Extremism in Assam: Himanta**	Special Report	39
32.	आजीवन सदस्यता आवेदन पत्र		40
33.	कुर्यात सदामंगलम (वैवाहिकी)		41–49
34.	जायसवाल जागृतिः महत्वपूर्ण सूचनाएं		50

सम्पादक-मंडल
मार्गदर्शन व आशीर्वादः स्वर्गीय श्री पन्नालाल जायसवाल जी
प्रधान सम्पादकः नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल
कार्यकारी संपादकः मीनू गुप्ता जायसवाल एवं अनिल कुमार जायसवाल
सम्पादक मण्डलः के.के. भगत व शिव प्रसाद जायसवाल,
वैवाहिकी प्रभारी,
पत्रिका प्रेषण विज्ञापन व समन्वय प्रभारी : बृजमोहन जायसवाल
साहित्य प्रभारी : राधेश्याम बन्धु
समन्वय सहप्रभारी : जुगल किशोर गुप्ता

पंजीकृत कार्यालय
19-C, MIG, DDA FLATS, GULABI BAGH
NEW DELHI-110007 दूरभाष 011-41687467
(M 9818426123)

पत्रिका में प्रकाशित किसी लेख/रचना का उत्तरदायित्व स्वयं लेखक/रचनाकार का है, सम्पादक-मंडल अथवा प्रकाशक का नहीं।

श्री विश्वमोहन प्रसाद (महाप्रबन्धक, एन.टी.पी.सी. नोएडा)
श्री मदन भाई जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री संजय जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री कमल नारायण - सरलादेवी जायसवाल (इंदौर)
डॉ. ए.के. जायसवाल (एम्स दिल्ली)
श्री दीपक जायसवाल (नागपुर-महाराष्ट्र)
श्री हुकुमचंद गिरधारीलाल जायसवाल (इंदौर)
श्री ब्रजेश कुमार (एडवोकेट, दिल्ली)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (वरिष्ठ एडवोकेट, पटना)
श्री राजीव रंजन राजेश (एडवोकेट, दिल्ली)
श्रीमती सरला गुप्ता अ.भा.जा. सर्व. महिला अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता (अध्यक्ष, नेपाल कलवार कल्याण महासंघ)
श्री सुरेश प्रसाद चौधरी (गाजियाबाद)
श्रीमती सुनीता अखिलेश सुवालका (उदयपुर)
श्री नवीन प्रकाश जायसवाल (अलवर)
श्री सुनील कुमार जायसवाल (सांवेर रोड, इन्दौर)
श्री राकेश रमन जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजय कुमार जायसवाल (इलाहाबाद)
डा. एन. शिवासुबहनण्यन (तमिलनाडु)
श्रीमती रीता जायसवाल (वाराणसी)
न्यायाधीश डॉ. संतोष कुमार जायसवाल (मुंबई)
डॉ. अनिल कुमार जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजयपाल सिंह अहलूवालिया (सफीदों-हरियाणा)
श्री राजकुमार गुप्त (लखनऊ)
श्री मोहन सिंह अहलूवालिया (ग्वाला गद्दी, खेड़ी, रायपुररानी, पंचकुला)
श्री रमेश कुमार अहलूवालिया (रिवजराबाद, यमुनानगर, हरियाणा)
श्री अमृत गुप्ता पुत्र श्रीमती मंजू गुप्ता (दिल्ली)
श्री सत्य देव गुप्त,(जायसवाल) पटना
श्री के.डी. चौधरी (दिल्ली)
श्री नन्द लाल गुप्ता (दिल्ली)
श्री शंकर चौधरी, दिल्ली
स्व. श्री पन्नालाल जायसवाल, दिल्ली
स्व. श्री राजाराम जायसवाल, दिल्ली
श्री शिवकशोर जायसवाल, दिल्ली
श्री मनोज कुमार शाह, फरीदाबाद
श्री अशोक जायसवाल, कौशांबी
श्री कृष्ण कुमार भगत, वैशाली
श्री अंजनी कुमार जायसवाल, दिल्ली
श्री सुधीर कुमार जायसवाल, गाजियाबाद

अधिष्ठाता

स्व श्री मोतीलाल जायसवाल, नई दिल्ली
श्री विक्रमजीत सिंह, अहलूवालिया, नई दिल्ली
सरदार अजीत सिंह, अहलूवालिया
स्व श्री रमाकांत जायसवाल, मुम्बई
स्व श्री हंसराज जायसवाल, दिल्ली
श्री गुलाब सिंह एवं श्री अरुण कुमार जायसवाल, दिल्ली
श्री शिवनाथ गुप्ता, दिल्ली
श्री दीपनारायण जायसवाल, लखनऊ
स्व. श्री जवाहर लाल जायसवाल, नई दिल्ली
(स्वामी हरिहरानंद) श्री हरिश्चंद्र धनेटवाल

सम्पादकीय

प्रधान सम्पादक की लेखनी से,
आदरणीय सुधी पाठकगण
"सबके राम, हम सभी के राम"

''**प्रण से प्राण प्रतिष्ठा**'' तक की यात्रा उतार-चढ़ाव से परिपूर्ण है। त्रेता में राजा दशरथ के राजभवन में अवतरित 'राम' आयोध्या जी की आज शोभा बढ़ा रहे है। माँ कौशल्या के दुलारे राम आज सभी के ईष्टदेव हैं। मर्यादा पुरषोत्तम राम त्याग, प्रेम, समर्पण, सदभाव् व विरक्त के पर्यायवाची बन गए हैं। मर्यादा को आत्मसात करना कोई राम से सीखे। पिता राजा दशरथ का एक आदर्श आज्ञाकारी, पुत्र, माँ कौशल्या का दुलारा बेटा, सीता मईया का प्रियतम पति, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न का स्नेह व प्रेम से भरा बड़ा भाई, हनुमान की भक्ति से प्रभावित ईष्टदेव, ऋषियों के भक्ति से ओत प्रोत भगवान, राक्षसों का नाश करने वाले प्रभु राम। जीवन को आदर्श बनाना तथा त्याग व तपस्या सीखने के लिए 'राम' ही हैं, केवल 'राम'।

हम सभी सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते, हमेशा राम का नाम ही लेते है। यहाँ तक की कोई दुखद घटना हो या खुशी का अवसर हो हम लोगो का अनायास ही राम

का नाम मुँह पर आ जाता है। हमारी बोलचाल में राम नाम समाया है। 16 संस्कारों में अंतिम संस्कार स्वर्गवास के समय होता है उस समय भी राम नाम सत्य है कहा जाता है। इस प्रकार मानव जीवन राम के नाम के बगैर अपूर्ण हैं।

वर्ष 1528 में आक्रान्ता बाबर की शह पर मीर बाकी ने वर्ष 1528 में भगवान राम का मंदिर विधवंस कर मस्जिद निर्माण किया। लगभग 495 वर्षों से भगवान राम अपने जन्म स्थान पर विधिवत रूप से आने की बाट खोज रहे थे। राजा विक्रमादित्य द्वारा निर्मित मन्दिर को मुगल शासकों द्वारा तोड़ने के पश्चात् कई बार हिन्दूओं ने दूबारा प्रयास किया किन्तु सफलता नहीं मिली। एक अनुमान के अनुसार लगभग कई लाख लोगों ने अपने प्राण की आहुति दे दी किन्तु आयोध्या में भगवान राम का मन्दिर नहीं निर्माण कर सके। निर्मोही अखाड़ा के महंत रघुवर दास ने 19 जनवरी 1885 में राम चबुतरे का पहला केस दर्ज़ कराया। भारत देश को आजादी वर्ष 1947 में मिलने के पश्चात् वर्ष 1949 में अचानक बाबर के द्वारा निर्मित मस्जिद में भगवान राम प्रकट को गए। भगवान राम के विग्रह की पूजा-पाठ प्रारम्भ हो गया किन्तु मंदिर निर्माण का सपना साकार नहीं हो सका। वर्ष 1985 में ताला खुला, लोगों के मन में एक आशा की किरण जगी। देश के हिन्दू संगठनों का आन्दोलन तेज हो गया, हिन्दू जागृत हो गए व 6 दिसम्बर 1992 को बाबरी मस्जिद के रूप में खड़ा ढाँचा (स्ट्रक्चर) को हिन्दू कार-सेवकों ने धराशायी कर दिया। हिन्दू कार-सेवकों में अति उत्साह था उन्होंने तुरन्त अस्थायी (टेम्पारेरी) निर्माण कर तिरपाल में रामलला के विग्रह रख पूजा-अर्चना प्रारम्भ कर दी। उस समय पूरे देश में काफी बड़ी राजनीतिक उथल-पुथल हुई किन्तु भगवान राम की कृपा से राम भक्तों की इच्छा पूरी हो गयी।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय में याचिकाओं की निरन्तर सुनवाई हुई, आर्कलोजिलक सर्वे आफ इण्डिया (ए.एस. आई.) ने अयोध्या जी में बाबरी मस्जिद के अवशेषों व खुदाई में पाए गए अवशेषों का गहन परिक्षण की अवशेषों व खुदाई में पाए गए अवशेषों का गहन परिक्षण कर अपनी विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुतिकरण की, सभी पक्षों की लम्बी बहस, तर्क-वितर्क, इतिहास, साक्ष्य व पौराणिक अभिलेखों को सुनने व अध्यन करने के पश्चात् भारत के सर्वोच्च न्यायलय के पाँच न्यायाधीशों ने सामुहिक रूप से भगवान राम का जन्म अयोध्या जी में माना तथा भगवान राम के अयोध्या जी में जन्म स्थान के लिए 2.77 एकड़ भूमि हिन्दू ट्रस्ट को 9 नवम्बर 2019 में सौपी। माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के पश्चात् राम मन्दिर का शिलान्यास दिनांक 5 अगस्त 2020 को सन्त, महात्माओं की उपस्थिति में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा किया गया। इस भव्य, दिव्य व नव्य मन्दिर का बहुत कम समय में लगभग 3½ वर्षों में निर्माण पूर्ण हुआ।

22 जनवरी 2024 दिन सोमवार को भगवान राम के बाल विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हुई तथा पूरे देश में सभी ने अपने घर में दीपावली मनाई। इस भव्य मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के पवित्र व शुभ अवसर पर देश ही नहीं बल्कि विश्व के अनेकानेक देशों– कैल्फोर्निया, मैक्सिको, सिडनी, न्युजर्सी, मारिशस, न्युयॉर्क, पेरिस, लन्दन तथा अन्य देशों में एक उत्सव के रूप में मनाया गया।

नागर शैली में निर्मित भगवान रामलला का यह मंदिर 360 फीट लम्बा, 250 फीट चौड़ा तथा 161 फीट ऊचाँ है। मंदिर में 392 खम्बे है व तीन तल के इस भव्य मंदिर के प्रत्येक तल की ऊचाई 20 फीट है तथा 44 प्रवेश द्वार है। 70 एकड़ में फैले प्रागणं में 32 सिढ़ियों पर चलकर मुख्य भवन में राम लला के बालरूप विग्रह का दर्शन सुलभ है। बालरूप राम जी के विग्रह को कर्नाटका के अरूण योगीराज जी ने काले पाषाण में तराश कर भव्य मूर्ति का निर्माण किया जो कि अद्भूत व दिव्य है।

हम सभी भाग्यशाली हैं कि हमारे पूर्वजों ने जो सपना देखा था, उसे साकार होते हुए हमने 22 जनवरी 2024 को अपनी आँखों से देखा। यह पल जीवन का स्वर्णीम पल रहा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस राम मन्दिर को देश के सम्मान से जोड़ा तथा अपने उद्बोधन में देव से देश तथा राम से राष्ट्र की भावना को जागृत किया। अयोध्या जी में भव्य मंदिर में भगवान राम लला के बालरूप विग्रह का दर्शन लाभ प्राप्त करने हेतु लगभग ढाई लाख से तीन लाख लोग देश के कोनें-कोनें से पहुंच रहे है। राम लला के बालरूप विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा पर जायसवाल जागृति के सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, शुभचिन्तकों तथा संरक्षकगण व अधिष्ठाताओं का हार्दिक अभिनन्दन, जय श्री राम।

प्रधान सम्पादक

जायसवाल जागृति की 'होली मंगल मिलन' आयोजन

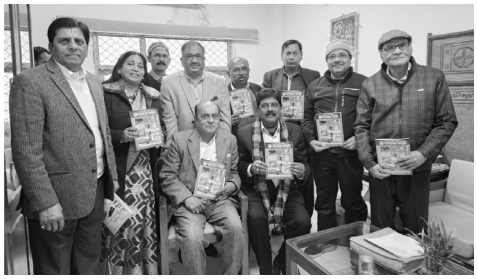

श्री शंकर चौधरी, उप सचिव, रसायन व पेट्रोलियम के कार्यालय में दिनांक 5 फरवरी व 20 फरवरी 2024 को होली मंगल मिलन कार्यक्रम आयोजित किये जायें, विषय पर बैठक हुई। बैठक में डॉ. अशोक चौधरी, अध्यक्ष, श्री ब्रजेश कुमार, उपाध्यक्ष (विधि व्यवस्था), श्री बृजमोहन जायसवाल, महासचिव, श्री अनिल कुमार जायसवाल, कार्यकारी सम्पादक, श्री मनोज कुमार शाह, राष्ट्रीय सचिव, (संगठन विस्तार), श्रीमति पूनम चौधरी गुप्ता, कार्यक्रम संयोजिका, श्री राधेश्याम बंधु, साहित्य प्रभारी, श्री नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल, प्रधान सम्पादक तथा श्री सुनिल कुमार जायसवाल उपस्थित थे। बैठक में दिनांक 10 मार्च 2024 को होली मंगल मिलन का भव्य कार्यक्रम आयोजित करनें का निर्णय लिया गया तथा जायसवाल जागृति पत्रिका के जुलाई-सितम्बर अंक का विमोचन किया गया। अध्यक्ष जी नें कार्यक्रम कों सफल बनानें के लिए सार्थक प्रयास करनें व अधिक से अधिक स्वजातीय लोगों को निमंत्रित करने का अनुरोध किया। इस अवसर पर सास्कृंतिक कार्यक्रम करानें हेतु श्रीमति पूनम चौधरी गुप्ता को दायित्व दिया गया। सभी कार्यकारिणी सदस्यों को रुपये 2500/- सहयोग राशि के रूप में जायसवाल जागृति सस्थां के खाते में जमा करनें का भी अनुरोध किया गया। सर्वप्रथम नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल, प्रधान सम्पादक ने रु. 2500/- नकद देकर धन संग्रह का श्री गणेश किया। इसके पश्चात् श्री शंकर चौधरी जी तथा श्री शम्भूनाथ चौधरी जी ने रु. 5100/- की धनराशि का चेक दिया। श्रीमति पूनम चौधरी गुप्ता ने शाल च पटका देनें की घोषणा की।

श्री मनोज शाह जी ने स्मृति चिन्ह देने का दिया। नर्बदेश्वर जी ने कई स्वजातीय संस्थाओं द्वारा होली मिलन कार्यक्रम के दृष्टिगत एक प्रभावशाली प्रस्तुति हेतु सुझाव दिया।

बृजमोहन जायसवाल, महासचिव

जायसवाल जागृति की तीस वर्ष की अद्‌भुत यात्रा

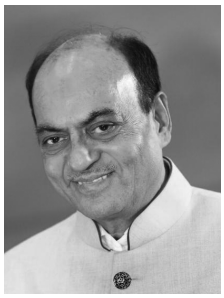

सर्वप्रथम जायसवाल जागृति पत्रिका के मुद्रण के तीस वर्ष की सफल एवं सुखद यात्रा पूर्ण करने पर हमारी हार्दिक अभिनन्दन और बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका को यह बधाई अपूर्ण रहेगी, जब तक हम परम स्वर्गीय श्रद्धेय श्री पन्ना लाल जी, परम आदरणीय स्वर्गीय श्री राजाराम जी एवं परम आदरणीय स्व. श्री बाल्मीकि चौधरी जी व अन्य महापुरूषों का आभार प्रकट नहीं करते हैं। आज से तीस वर्ष पूर्व जब वाई-फॉई, इंटरनेट तथा अन्य वैज्ञानिक आधुनिक संसाधन उपलब्ध नहीं थे, उस विषम परिस्थितियों में इन महान विभुतियों ने "जायसवाल समाज" को नई दिशा, रोशनी व जागृत करने हेतु एक कठिन असम्भव संकल्प लिया तथा उसे साकार करने के लिए तन-मन-धन से कार्य किया। ये महान विचारक व समाज सेवक मूलरूप से उत्तर प्रदेश व बिहार से दिल्ली शहर में सरकारी संस्थानों में सेवक के रूप में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत थे किन्तु इनके अन्तः करण में जायसवाल समाज के परिवारों में नव ऊर्जा व चेतना उत्पन्न करने की ललक थी, सपना था जो इन्हें समाज के उत्थान के लिए कुछ करने के लिए सदैव प्रेरित करता था। चूँकि मैं स्वयं 36 वर्ष सरकारी सेवक रहा हूँ तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी सरकारी उपक्रम में सलाहकार के रूप में तीन वर्ष प्रदान किया है। इसलिए मैं यह भलीभाँति समझता हूँ कि सरकारी सेवक को अपने व्यस्ततम समय में से परिवार को समय देने के पश्चात् समाज सेवा के लिए समय निकालना कितना कठिन कार्य है।

मैं जायसवाल जागृति पत्रिका के तीस वर्ष पूर्ण होने तक की इस कठिन एवं दुर्गम यात्रा को सफलतापूर्वक उत्कृष्ट स्तर पर पहुंचाने के लिए इन तीनों मनिषियों एवं अन्य महापुरुषों का हृदय की अंतिम छोर से आभार प्रकट करता हूँ।

सामाजिक पत्रिका का प्रकाशन आज से तीस वर्ष पूर्व काफी कठिनाई एवं संघर्ष से भरा होता था, उस समय पत्रिका के मुद्रण के लिए दूर-दराज से विषय-वस्तु को इकट्ठा करना, विषय-वस्तु को संकलित कर, क्रमबद्ध कर आकर्षक प्रस्तुतीकरण, प्रस्तावना व स्वतंत्र सम्पादकीय लेख लिखना इत्यादि तथा पत्रिका के मुद्रण के पश्चात् पत्रिका का समुचित वितरण एवं धन की व्यवस्था एक असम्भव कार्य था, उक्त को इन तीनों भविष्य द्रष्टाओं द्वारा संभव करना, यह अपने आप में वंदनीय एवं सराहनीय कार्य रहा है।

जायसवाल जागृति पत्रिका की एक अहम् विशेषता यह भी रही है कि इस पत्रिका में परिवार के सभी सदस्यों हेतु कुछ न कुछ यथा कहानी, हास्य-व्यंग, कविता, लेख, ऐतिहासिक घटना, स्वास्थ्य विषयक, उपयोगी सामग्री, नारी सशक्तिकरण व जीवन गाथा विषय वस्तु रही है, जिस कारण पूरे परिवार के लिए पत्रिका बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई है। यह पत्रिका विवाह योग्य लड़के-लड़कियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण विवरण व सूचना देकर समाज की बहुत बड़ी सेवा व सहायता की है जो कि प्रशंसनीय है। पत्रिका में उपयोगी सामग्री तथा वास्तविक वैवाहिक सूचना के कारण भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में ही नहीं अपितु विदेशों में भी इस पत्रिका की मांग व सम्मान बढ़ा है तथा लोगों द्वारा बहुत पसंद की गई है। पत्रिका की वर्तमान में 500 प्रतियों का प्रकाशन पत्रिका की सर्वव्यापी उपयोगिता तथा सार्थकता का ज्वलन्त प्रमाण है। मैं स्वयं को आदरणीय स्वर्गीय श्री राजाराम का विशेष आभारी हूँ कि इन्होंने ही मेरी पुत्री प्रिय आकृति के लिए श्री अजीत कुमार जायसवाल, उद्योगपति कोलकाता के सुपुत्र प्रिय श्री कुबेर के वैवाहिक विवरण ही नहीं उपलब्ध कराया,बल्कि मेरी परिचर्चा कराने में भी सहयोग किया, जिसके फलस्वरूप शुभविवाह इस परिवार में सम्पन्न हुआ। जबकि कभी भी इन्होंने अन्य समाजसेवकों की भाँति 300-400 शादियाँ कराने का दम्भ नहीं भरा।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि किसी पत्रिका का प्रकाशन करना आसान कार्य नहीं है किन्तु किसी पत्रिका का निरन्तर प्रकाशन, वर्ष दर वर्ष प्रकाशन करते जाना तथा इस प्रकार तीस वर्ष तक यात्रा पूरी कर पाना एक सुखद एवं चिरस्मरणीय अनुभूति है। हमने कई स्थानों तथा दिल्ली राज्य से ही कई पत्रिकाओं का प्रकाशन होते देखा है जो कि कुछ महीनों व वर्षों में ही दम तोड़ दी, कारण जो भी हो, हम उसका परीक्षण उवं विवेचना इस अवसर पर नहीं करना चाहते हैं। हम तो केवल यह विचार स्थिर करना चाहते हैं कि इस पत्रिका का सफलतापूर्ण मुद्रण, प्रकाशन व वितरण प्रबंधन आदरणीय स्वर्गीय श्री पन्ना लाल जी तथा स्वर्गीय श्री राजाराम जी द्वारा किया गया तथा वर्तमान में श्री के.डी. चौधरी, श्री के. एन. गुप्ता तथा श्री अशोक जायसवाल जी के नेतृत्व में डॉ. अशोक चौधरी, अध्यक्ष व श्री बृजमोहन जायसवाल महासचिव एवं वर्ष 1994 से इस महान पत्रिका के अग्रसर करने में सस्थापकों को सहयोग प्रदान करने वाले सम्पादक मण्डल के सर्वश्री के. एन. गुप्ता, डॉ. राधेश्याम बंधु, माखन चौधरी, अवधेन्द्र कुमार, मीनू गुप्ता जायसवाल, अनिल कुमार जायसवाल, के.के. भगत, शिवकुमार जायसवाल तथा जुगलकिशोर गुप्ता व अन्य महानुभावों का साथ ही वर्तमान टीम के सभी सदस्यों के कठिन समर्पण एवं तपस्या का प्रतिफल है जिसके लिए इन सभी महानुभावों का प्रशंसा एवं आभार प्रकट करना हमारा धर्म ही नहीं अपितु परम पुनीत कर्त्तव्य भी है। इन सभी के समर्पण व प्रेरणा से प्रभावित एवं प्रेरित होकर ही मेरी धर्मपत्नी श्रीमति कविता इस महान पत्रिका की वर्ष 1996 में संरक्षक बनी।

विगत वर्षों में हमारे समाज में हुई विभिन्न उथल-पुथल की घटनाओं में भी यह पत्रिका साक्षी रही है। हमने यथासंभव निष्पक्ष भाव से न केवल अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किये हैं। अपितु प्रबुद्ध सामाजिक बंधुओं से सार्थक बहस के माध्यम से सर्वसम्मत निष्कर्षों तक पहुँचने का भरसक प्रयास किया है।

देश के समस्त स्वजातीय संगठनों कि मूर्घन्य नेतृत्व, मनीषियों, साहित्यकारों, कवियों, एवं चिन्तनशील महानुभावों से हम आग्रह करते है कि वे अपने प्रतिभाशाली रचनाओं से हमें तथा समाज को लाभन्वित करके निरन्तर आपकी अपनी ही पत्रिका का स्तर विषय-वस्तु एवं कलेवर की दृष्टि से बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान दें।

जायसवाल जागृति के तीस वर्ष पुर्ण होने के शुभ अवसर पर संकल्प लें कि "स्वर्ण जयंती" वर्ष तक जायसवाल जागृति पत्रिका का व्यापक प्रचार-प्रसार करते हुए वर्तमान में 500 प्रतियों के प्रकाशन से उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए 20,000 प्रतियां प्रकाशन किये जाने का संकल्प। जायसवाल जागृति के तीस वर्ष पूर्ण होने पर हमारी सभी पाठकों एवं शुभचिंतकों को हार्दिक शुभकामना है। साथ ही पत्रिका को इस उच्च स्तर पर पहुँचाने वाले आदरणीय स्वर्गीय श्री पन्ना लाल जी, स्वर्गीय श्री राजाराम जी एवं स्वर्गीय श्री बाल्मिकी चौधरी जी का आभार प्रकट करता हूँ तथा बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी से प्रार्थना के साथ, मेरा स्पष्ट विचार है कि :

तुफान से दीपक बचा कर लाया हूँ,
अंधेरे में रोशनी करने आया हूँ।
कठिन समय के मशाल जला कर लाया हूँ,
कोई माने या ना मानें एक लम्बी सफर कर आया हूँ।
समाज को रोशन करने की चाहत है,
दिल में कुछ कर दिखाने का जज्बा है।
हम रहे या न रहे कोई बात नहीं,
हमारा जिक्र हो ना हो कोई बात नहीं।
तेरा नाम हर शख्त के यही चाहत है,
तु आसमां में चमके मेरी यही इबादत है।
बाल्मिकी के पन्ना व राजाराम की दुआए मेरे साथ है,
सुना है दुआओं में बड़ा असर है।
खाक से ताज तक पहुंचा देती है दुआएं,
अगर तुझे शक है तो मुझको ही देख ले।''
"हममें हवा का रूख बदलने का हौसला भी है, ताकत भी,
दिल से निभाते हैं अगर कोई वादा कर लिए हमने।
सफर अपना किसी तूफान की डर से नहीं रूकता,
इरादा कर लिया तो इरादा कर लिया हमने।।"

नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल, प्रधान सम्पादक

जायसवाल (कलवार) समाज का इतिहास है क्षत्रिय

कलचुरि वंश (कलवार, कलाल, कलार जायसवाल) का इतिहास गौरवशाली रहा है। भारत के प्राचीनतम राजवंशों में से एक प्रमुख राजवंश है–कलचुरि वंश, जिसका पौराणिक पुरातात्विक व ऐतिहासिक आधार विद्यमान है।

विभिन्न ग्रन्थों में कलचुरियों को हैहय वंशी चक्रवर्ती सम्राट राज राजेश्वर सहस्त्रार्जुन का वंशज बताया गया है, जिनकी गौरव गाथा पुराणों में आख्यापित है। पौराणिक व अन्य ग्रन्थों में श्री सहस्त्रार्जुन व उनके पुत्रों का जितना गुणगान मिलता है उतना अन्य किसी सम्राट का नहीं मिलता। श्री सहस्त्रार्जुन के वंशजों ने हजारों वर्ष तक भारत व पृथ्वी के अन्य भू-भागों पर राज किया है इसलिए श्री सहस्त्रार्जुन को अपना आराध्य देव मानने वाले केवल भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में करोड़ों लोग हैं। जिनमें हिन्दू, सिख, ईसाई, व जैन धर्म को मानने वाले भी है। यदु एवं महारानी सुघात्री के पांच पुत्र सहस्त्रजीत, क्रोष्ट, अबल, अजित व लघु द्वारा इनमें आगे चलकर सहस्त्रजीत से हैहय वंश एवं क्रोष्टु से यादव वंश चला। यहां आते आते चन्द्रवंश (सोमवंश) चौदह शाखाओं में विभाजित हो गया। सहस्त्रजीत (सहस्त्राद) का पुत्र सतजीत था। सतजीत के तीन पुत्र हय, हैहय और वैनुहय हुए। इनमें से हैहय प्रतापी सम्राट था। जिससे हैहय वंश चला, जिसकी यश गाथा पुराणों में पायी जाती है। वंशावली के अनुसार हैहय का पुत्र धर्मनेत्र, धर्मनेत्र का पुत्र कुन्ती (कर्त), कुन्ती का पुत्र संमजिनेय (संहजन), संमजिनेय का पुत्र महिष्मान (जिन्होंने महिष्मति की स्थापना की), महिष्मान का पुत्र भद्रसेन (भद्रश्रेस्ण), भद्रसेन का पुत्र दुर्दम, दुर्दम का पुत्र कनक हुआ। महाराजा कनक के चार पुत्र कृतवीर्य, कृताग्नि, कृतवर्मा और कृतौजा थे। कृतवीर्य के पुत्र अर्जुन हुए जो कार्तवीर्यार्जुन, सहस्त्रार्जुन एवं सहस्त्रबाहु आदि नामो से तीनों लोक में प्रसिद्ध हुए।

अशोक चौधरी, अध्यक्ष
जायसवाल जागृति

जायसवाल समाज के उत्थान के लिए दिखी एकजुटता

– कल्याण, नवभारत न्यूज नेटवर्क। अखिल भारतीय जायसवाल महोत्सव का आयोजन 3 व 4 जनवरी को सरस्वती देवी स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स मालाड पश्चिम में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। डोंबिवली निवासी संस्था के पदाधिकारी त्रिलोकीनाथ जायसवाल ने बताया कि इस कार्यक्रम ने देश भर के जायसवाल समाज को मुंबई उपनगरीय में एक छत के नीचे लाया. महोत्सव का आयोजन, रूट मोबाइल, जायसवाल यूथ फेडरेशन व समाज की अन्य संस्थाओं द्वारा मिलकर किया गया।

जायसवाल महोत्सव गतिविधियां: अखिल मुंबई जायसवाल सभा के महामंत्री त्रिलोकी नाथ जायसवाल ने बताया कि कार्यक्रम में नौकरी मेले, चिकित्सा शिविर, कैरियर मार्गदर्शन, निवेश, प्रेर भाषण, महिला आत्म रक्षा कार्यशाला, पतंग उत्सव, नृत्य प्रदर्शन, हास्य कवि सम्मेलन, युवक युवती परिचय, समाज के राजनैतिक सामाजिक व उद्योगपतियों का सम्मान एवं अन्य गतिविधियां शामिल रहीं। कार्यक्रम के मुख्य अधिति 008 महामंडलेश्वर स्वामी संतोषानंद महाराज ने ऐसे कार्यक्रम पूरे देश में आयोजित करने की आवश्यकता बताई। इस समय श्रीपाद नाईक, कृपा शंकर सिंह, प्रकाश चौधरी, कृष्णप्रकाश, पंकज जायसवाल, सीआईडी फेम दया नाईक आदि उपस्थित थे।

त्रिलोकी नाथ जायसवाल

बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनांए

जायसवाल जागृति के सुधी पाठको, सरक्षंक, अधिष्ठाता, विज्ञापनदाता व शुभचिंतकों को महाशिवरात्रि, रंगों के त्योंहार होली, नव सम्वत 2081, नवरात्रि पर्व पर नौ देवीयों की असीम कृपा हो। आप सभी को बहुत-बहुत हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आप सभी त्यौहारों को हर्षोल्लास से मनाएं तथा ये त्यौहार आप सभी के जीवन में अपार खुशियां व समृद्धि लाये। यदि कोई विशेष अनुभव हो तो हमसे अवश्य साझा करनें का कष्ट करें।

सम्पादक मण्डल
जायसवाल जाग्रति

दक्षिण भारत के सम्मानित राज नेता गण

मदुराई – दिनांक सत्ताईस – अठ्ठाईस जनवरी को भारत रत्न के कामराज नाडार कॉलेज मदुरई तमिलनाडु में नाडार महाजन संगम के बहत्तरवाँ वार्षिक अधिवेशन एवं भारतीय कल्चुरि जायसवाल सम्बर्गीय महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आयोजित बैठक में दक्षिण भारत के सम्मानित राज नेता गण, राज्यपाल तेलांगना माननीया तमिली साई सुन्दर राजन, पूर्व मुख्यमंत्री जी, फिल्म प्रडूसर सम्मानीय शरत कुमार जी, सांसद गण, विधायक गण, फिल्म जगत की हस्तियाँ, कलाकार समाज सेबियों एवं लाखों की तादात में बन्धु बहिने मातायौं के बीच हर्ष उल्लास के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। उक्त कार्यक्रम के शुभ अवसर पर झाँसी से बी के जे एस एम के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, पंचायती राज ग्राम प्रधान व सरपंच संगठन राष्ट्रीय अध्यक्ष दयाराम राय ने बतौर विशिष्ट अतिथि प्रति भाग किया तथा इस अवसर पर नाडार महाजन संगम के मुख्य आयोजक, अध्यक्ष के करिक्य कोलराज जी एवं बी के जे एस एम के राष्ट्रीय अध्यक्ष, इसरो के पूर्व डायरेक्टर महान् वैज्ञानिक डॉक्टर एन शिवा सुब्रमनियम जी व राष्ट्रीय सचिव मुरूगेशन जी ने दयाराम राय को अंग वस्त्र प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया तथा मंच आसीन राष्ट्रीय अध्यक्ष दयाराम राय को करीब दस-बारह मिनट अपनी बात रखने का समय दिया गया।

दयाशंकर राय
राष्ट्रीय अध्यक्ष

राजराजेश्वर श्री सहस्त्रार्जुन के मंदिर

श्री सहस्त्रार्जुन की प्राचीन "मूर्तियाँ" व "मंदिर" बहुत अधिक नहीं पाये जाते हैं क्योंकि हैहयवंशी कलचुरि राजाओं ने भगवान श्री कार्तवीर्यार्जुन के आराध्य भगवान शंकर को अधिक प्रचारित किया व शिवालय अधिक बनाए हैं। यही कारण है कि कलचुरि राजवंशों के सिक्कों पर, श्री सहस्त्रबाहु जी के चित्र न होकर, उनके आराध्य देव "शिव" के प्रतीक चिन्हों को अधिक स्थान दिया गया। जबकि दूसरी और भृगुवंशियों ने श्री सहस्त्रबाहु जी के समकालीन परशुराम जी को "भगवान परशुराम" के रूप में प्रचरित कर "भगवान" बना दिया। श्री सहस्त्रबाहु के प्राचीन मंदिर भारत के उत्तर पश्चिम व मध्य क्षेत्र में पाये जाते हैं, जिनकी संख्या बहुत कम है। लेकिन अब जब से समाज बन्धुओं को अपने आराध्य देव श्री सहस्त्रार्जुन की महिमा का ज्ञान हुआ है तो श्री सहस्त्रार्जुन ने मंदिरों व मूर्तियों की संख्या में वृद्धि आरम्भ हो गयी है।

भारत में श्री सहस्त्रार्जुन जी के प्रमुख मंदिर

राजराजेश्वर-महेश्वर मंदिर महेश्वर- पुराविदों की मान्यता के अनुसार हैहय वंशियों व कलचुरियों का तीर्थ स्थल माहिष्मती वर्तमान खरगोन जिले के नर्मदा तट पर स्थित, आज का महेश्वर नगर है। हैहयवंशी चक्रवर्ती सम्राट महाराजा ययाति की नौवीं पीढ़ी में उत्पन्न परम तेजस्वी "माहिष्मान" नाम के सम्राट हुए थे। अपने नाम से "माहिष्मती" नगरी बसाई और अपनी राजधानी बनाया। कालांतर में इस वंश के चक्रवर्ती सम्राटों राज्यकाल में महिष्मती विश्व प्रसिद्ध राजधानी हो गई। विभिन्न युगों में एक प्रमुख सांस्कृतिक एवं राजनैतिक केन्द्र, राजवंशों व सम्राटों की प्रमुख कार्यस्थली रही है। इन सम्राटों में सर्वशिरोमणि हैहय कुलभूषण, चक्रवर्ती सम्राट सुरदर्शन-चक्रावतार श्री कार्तवीर्यार्जुन सहस्त्रार्जुन हुये। महिष्मती इनकी राजधानी रही। आज भी उनके समाधिस्थल 'राजराजेश्वर मंदिर' में उनकी देवतुल्य पूजा होती है। इस मंदिर में घी के ग्यारह "नन्दा दीपक" अखण्ड रूप से सैकड़ों वर्षों से प्रज्जवलित हैं। इसे बड़ा ही सिद्ध स्थल माना जाता है। यहां पर भक्तों की मनोकामना आज भी उसी तरह पूरी होती है, जिस प्रकार उनके जीवनकाल

त्रेतायुग में होती थी। यह राजराजेश्वर मंदिर महेश्वर में नर्मदा तट के समीप किले के अंदर स्थित है। मंदिर की स्थापत्य कला से उसके कलचुरि कालीन (लगभग 11वीं शती) के होने का आभास होता है। यह मंदिर लगभग 150×100 फीट के प्रांगण के बीच में पूर्वाभिमुखी स्थित है। मंदिर के चारों कोनों पर शिव पंचायत मंदिर स्थित है। उत्तर पूर्वी कोने पर गणपतिजी ऋद्धि-सिद्धि सहित विराजमान हैं। उत्तर पश्चिम कोने पर सूर्यनारायण मंदिर, दक्षिण पश्चिम कोने पर विष्णु मंदिर व दक्षिण पूर्वी कोने पर माँ दुर्गा का मंदिर स्थ्त है। मंदिर के ठीक सामने नंदी व गणपति की छोटी डेरी बनी हुई है।

मंदिर के गर्भगृह के मध्य में शिवलिंग स्थापित है। इस शिवलिंग के उत्तर में गणपतिजी व पश्चिम में पार्वतीजी की मूर्तियाँ स्थित हैं। दक्षिण में घी के 11 दीपक स्थित हैं। मंदिर के मध्य में शिवलिंग के पीछे अष्टधातु की शिव पार्वती की चलित मूर्ति स्थित है।

घी के 11 दीपक तांबे के बने हुये हैं, जिनकी क्षमता लगभग 2 किलो घी की है। छोटी अंगली के बराबर मोटाई रूई की लगभग एक फीट लम्बी बत्तियाँ बनाकर दीपकों में रखी जाती हैं। जो 3-4 दिन तक चलती हैं। "उषा ट्रस्ट" द्वारा सीमित यात्रा में दीपकों के लिये घी दिया जाता है, लेकिन दर्शनार्थियों द्वारा भारी मात्रा में घी चढ़ाया जाता है।

यह मंदिर प्रात: '6 बजे से 12 बजे' तक व शाम 4 से रात 10 बजे तक खुला रहता है। दोपहर में 12 बजे से 4 बजे के बीच महंत से निवेदन करने पर मंदिर खोलकर दर्शन करा दिये जाते हैं। महंत मंदिर से थोड़ी दूरी पर ही रहते हैं। प्रति वर्ष यहां पर कार्तिक शुक्ल सप्तमी को "भगवान सहस्त्रार्जुन की जयंती" मनाई जाती है।

श्री सहस्त्रार्जुन जयंत के दिन प्रात: 6 बजे की काकड़ा आरती में उपस्थित होकर भक्त राजराजेश्वर के प्रति श्रद्धा प्रगट करते हैं। प्रात: आरती के समय मंदिर क विद्युत सज्जा बंद कर दी जाती है। प्रत्येक भक्त हाथों में शुद्ध घी की प्रज्जवलित बत्तियों का दीप लेकर स्वयं भगवान की आरती करते हैं। उस समय की शोभा निराली होती है।

मंदिर में स्थित अष्ट धातु की शिव पार्वती की चलित मूर्ति को एक पालकी में बिठाकर नगर में सवारी निकाली जाती है। रात को मंदिर में रोशनी की जाती हैं। आरती के बाद प्रसाद वितरण होता है।

महेश्वर पहुँच मार्ग- मध्यप्रदेश के खरगोन जिले का "महेश्वर" इन्दौर से व्हाया धामनोद होकर 90 किलोमीटर दूर है व खण्डवा से व्हाया बड़वाह होकर महेश्वर की दूरी 100 किलोमीटर है। धामनोद से महेश्वर की दूरी 13 कीलोमीटर व बड़वाह जाने आने कि लिये इन्दौद से हर आधे घंटे में बसें उपलब्ध हैं।

श्री सहस्त्रबाहु मंदिर नागदा (उदयपुर, राजस्थान)- नागदा जिला उदयपुर, (राजस्थान) के इस मंदिर को वर्तमान में "सास-बहु" का मंदिर कहा जाता है। जो कि सहस्त्रबाहु का अपभ्रंश है। नागदा का सहस्त्रबाहु (सास-बहु) मंदिर अलंकरण शैली में पूर्णरूपेण विकसित मंदिर है। इसमें, जरा हटकर बने एक मकर तोरण से प्रवेश किया जाता है। मंदिर में पंचरथ गर्भगृह, अंतराल, मंडप और पार्श्वद्वार से युक्त व जंगलों से घिरा हुआ अर्धमंडप है। गर्भगृह व मंदिर के मंडप के चार केन्द्रीय स्तंभ हैं और उतने ही मकर तोरण हैं। शैलीगत विशेषताओं के आधार पर इन्हें दसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में निर्मित माना जा सकता है। (संदर्भ- उत्तर भारत के मंदिर- लेखक- कृष्णदेव)।

राजराजेश्वर कार्तवीर्यार्जुन मंदिर ग्वालियर (म.प्र.)- भगवान सहस्त्रबाहु का अपभ्रंश शब्द "सास-बहु" के तीन मंदिर भारत में विद्यमान हैं- नागदा (उदयपुर-राजस्थान), ग्वालियर दुर्ग एवं ग्वालियर संभाग के कराहल तहसील जिला-शिवपुरी (मध्यप्रदेश)।

गोपगिरि के पहाड़ों- चट्टान के ऊपर निर्मित दुर्ग का इतिहास इसा की पांचवीं शताब्दी से पूर्व का है। यहां स्थित अनेक स्मृति चित्रों में से दुर्ग के उत्तर पूर्वी खण्ड के परकोटा के निकट "सास-बहु" नाम से विख्यात दो मंदिर ग्वालियर-दुर्ग में स्थित गूजरा महल से लगभग एक मील की दूरी परउपस्थित हैं। इसमें एक मंदिर बड़ा है और दूसरा छोटा। ये दोनों मंदिर एक-दूसरे से इतने निकट हैं कि जन-मानस के हृदय पटल पर "सास-बहु" के रूप अच्छादित हैं। वस्तुत: हैहयवंश में उत्पन्न सप्त द्वीपेश्वर महाराजा कार्तवीर्य अर्जुन यानि सहस्त्रबाहु की स्मृति में निर्मित ये मंदिर ही जन-साधारण की भाषा में "सास-बहु"

कहलाने लगे। शौधकर्ताओं ने सास-बहु शब्द को सहस्त्रबाहु का अपभ्रंश शब्द बताया है। कलचुरि समाज द्वारा इस मंदिर का नाम ठीक करने की मांग केन्द्र सरकार से की गयी है। गवालियर दिल्ली-मुम्बई रेलमार्ग पर प्रमुख रेलवे स्टेशन है।

कराहल जिला शिवपुरी (मध्यप्रदेश)- में भी "सास-बहु" के नाम से श्री सहस्त्रबाहु जी का मंदिर है। यह मंदिर गवालियर से नजदीक है। नागदा ग्वालियर व कराहल के तीनों मंदिर लाल बलुआ पत्थर से निर्मित हैं व स्थापत्य कला का अद्भुत नमूने हैं।

"सास-बहु" मंदिर के प्रवेश द्वार के छज्जों पर महाभारत की कथा वस्तु बहुत बारीक व मनोरंजक ढंग से कुरेदी गई है। सभा मण्डप के तोरण तथा स्तंभों पर सुंदर एवं कलात्मक प्रतिमायें हैं। बाहरी दीवाल पर बायीं ओर शिव पार्वती तथा विष्णु की प्रतिमाएँ विद्यमान हैं।

भगवान कार्तवीर्यार्जुन मंदिर पुष्पा नगर भोपाल- भारतीय संस्कृति एवं हिंदू धर्म में देवी देवताओं के भजन, पूजन एवं मंदिरों के निर्माण का बहुत अधिक महत्त्व है। यही कारण है कि व्यक्ति अपने-अपने आराध्य देवी-देवताओं के मंदिरों का निर्माण कराते हैं, इसी भावना को लेकर भोपाल में श्री जयनारायण चौकसे एवं स्व. श्री सुरेश चौकसे बंधुओं ने पुष्पानगर कालोनी रेलवे स्टेशन के पास में मंदिर बनावाकर पाँच देवी देवताओं की स्थापना की 1. भगवान श्री सहस्त्रबाहु, 2. भगवान शंकर, 3. दुर्गा जी, 4. राधाकृष्ण एवं 5. हनुमान जी। मंदिर का मुख पूर्व की ओर है, जिसमें लगभग 3 फुट ऊँची संगमरमर की सुंदर मूर्ति स्थापित की गई है। मंदिर में भगवान श्री सहस्त्रबाहु के समक्ष घी के अखण्ड ज्योति प्रज्जवलित की गई है, यह ज्योति महेश्वर मंदिर की हजारों वर्षों से प्रज्जवलित अखण्ड ज्योति से लाई गई है।

श्री सहस्त्रबाहु मंदिर- शाहपुरा भोपाल- समाज के सहयोग से श्री राजाराम शिवहरे, सुनील मालवी व साथियों द्वारा स्थापित इस मंदिर में भगवान श्री सहस्त्रबाहु की प्रतिमा की नियमित पूजा-अर्चना होती है, भगवान की कार्तवीर्यार्जुन के जन्म दिवस पर यहां धूमधाम से आयोजन किया जाता है। रात्रि में "शाहपुरा-झील" में "सहस्त्र दीपदान" आकर्षण का केन्द्र रहता है। हर माह यहां सामाजिक बंधुओं द्वारा सामुहिक पूजा-पाठ व भण्डारे का आयोजन किया जाता है। इस मंदिर के रख-रखाव का कार्य युवा कलचुरि सभा द्वारा किया जाता है।

श्री सहस्त्रबाहु मंदिर- कलचुरि भवन भोपाल- श्री सहस्त्रबाहु कलचुरि महासभा (कलार समाज) भोपाल द्वारा निर्मित "कलचुरि भवन" के पास, श्री सहस्त्रबाहु, दुर्गा माँ, शिव परिवार की भव्य मूर्तियाँ क्रमशः श्री मयंक मोहन चौकसे (एडवोकेट), श्री गोकुल आर्य, श्री नरेन्द्र चौकसे लाम्बाखेड़ा भोपाल के स्नेहिल सौजन्य से स्थापित हुयी हैं। श्री सहस्त्रबाहु की पूर्णस्वरूप की 31/2 फीट की संगमरमर की प्रतिमा के साथ माँ दुर्गा व शिव परिवार की संगमरमर की प्रतिमायें आकर्षण के साथ भक्तगणों को फलदायी व आनन्द दायी हैं। मंदिर के सौंदर्यकरण, रखरखाव का कार्य श्री सहस्त्रबाहु कलचुरि महासभा (कलार-समाज) भोपाल द्वारा किया जाता है।

भोपाल शहर के मध्य एकान्त पार्क (अरेरा कालोनी) के पास स्थित इस मंदिर में प्रायः हर माह कोई न कोई आयोजन आयोजित किया जाता है, जिसमें न केवल भोपाल वरन् आसपास के क्षेत्रों/जिलों के भक्तगण भाग लेकर, अपने "अराध्य देव" का आशीर्वाद लेते हैं।

श्री राजराजेश्वर मंदिर-मण्डला- वर्तमान में इस मंदिर को "राजराजेश्वरी मंदिर" कहा जाता है। मंदिर के गर्भ ग्रह में देवी की मूर्ति स्थापित हैं गर्भगृह के प्रवेश द्वार के ऊपर बीच में एक गणेश प्रतिमा स्थापित है जिसके आधार पर डॉ. विवेक दत्त झा ने मंदिर का निर्माण काल 12वीं शताब्दी माना है। गर्भगृह के अंदर तीन छोटी-छोटी नदियाँ निर्मित की गई हैं। बीच में मढ़िया में वर्तमान में, सफेद पत्थर की "सिंह वाहिनी दुर्गा" की मूर्ति रखी है। दोनों ओर की दो मढ़ियों में क्रमशः "चतुभुर्जी लक्ष्मी" तथा "अठ्ठारभुजी महिषासुर मर्दिनी देवी" की प्रतिमाएँ हैं। दोनों प्रतिमाएँ लगभ 13वीं शताब्दी की लाल कसौटी पत्थर की अत्यंत कलापूर्ण हैं।

सूक्ष्म अवलोकन से ऐसा प्रतीत होता है कि बीच की राजराजेश्वरी देवी की मूल प्रतिमा यहां से स्थानांतरित कर दी गई है। जिसके नाम पर इस मंदिर का नाम राजराजेश्वरी मंदिर है। उल्लेख है कि गोंडा राजा निजामशाह (सन् 1749 से 1780) ने बिलासपुर तथा मण्डला के बीच

"राजाधार" की पहाड़ी से अपनी कुलदेवी की मूर्ति लाकर यहाँ स्थापित की थी। मंदिर के गर्भगृह की दीवाल के बाहर मंदिर के प्रदक्षिणा पथ पर अनेक देवी देवताओं की मूर्तियाँ हैं। नर्मदा, दुर्गा, सहस्त्रबाहु, विष्णु, रामसीता, दत्तात्रेय, लक्ष्मी, सूर्य, आदि प्रमुख हैं। सहस्त्रबाहु की दो मूर्तियाँ एक लाल पत्थर की तथा दूसरी सफेद संगमरमर की हैं।

मण्डला के इस मंदिर की प्रदक्षिणा में श्री सहस्त्रबाहु की मूर्ति स्थापित होना यह सिद्ध करता है कि श्रीराजराजेश्वर कार्तवीर्य का मंदिर यहां पर प्राचीन काल में था जिसमें निजाम शाह या अन्य किन्हीं गोंड शासकों ने गर्भगृह से सहस्त्रबाहु की मूर्ति हटाकर वहाँ पर अपनी कुल देवी की स्थापना की और मंदिर का नाम मामूली फेर बदल से राजराजेश्वर से राजराजेश्वरी मंदिर प्रसिद्ध हुआ।

राजवंश के पतन के बाद विजयी शासक उस राज्य की प्राचीन संस्कृति नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं इस कृत्य का जीवंत उदाहरण मण्डला का राजराजेश्वर मंदिर है। (संदर्भ- मण्डला के किले का इतिहास लेख- श्री गिरजाशंकर अग्रवाल)

श्री कार्तवीर्यार्जुन चौक इन्दौर- दिनांक 23 सितम्बर 2003 का दिन था, जब पहली बार शौर्य के प्रतीक, बल, समृद्धि के प्रतीक, सुशासन के प्रतीक, पितृपुरुष व आराध्य राजराजेश्वर महाराज कार्तवीर्यार्जुन की प्रतिमा, वरिष्ठ समाजसेवी श्री बलीराम दखनें नागरपुर की प्रेरणा व श्रीमती अर्चना जायसवाल के प्रयासों से, इन्दौर के प्रमुख खजराना गणेश मंदिर रिंग रोड़ चौराहे पर लगाई गई। रोटरी सौन्दर्यीकरण व प्रतिमा निर्माण का सम्पूर्ण कार्य महिला सभा इन्दौर द्वारा "सहस्त्रबाहु चौराहा निर्माण समिति" बनाकर किया गया।

श्री राजराजेश्वर कार्तवीर्यार्जुन मंदिर गीता भवन इन्दौर- इन्दौर में स्थित गीता भवन अपने आप में एक तीर्थस्थल है। इसके एक ही परिसर में भगवान कार्तवीर्यार्जुन, श्री गणेश, शिव, वासुदेव, श्रीराम, हनुमान, माँ दुर्गा, की नयनाभिराम मूर्तियाँ हैं, जहाँ लगभग पूरे 12 महीने अनुष्ठानों और धार्मिक पर्वों का क्रम बना रहता है। सेठ भोलाराम जायसवाल रेशम वाला लेन इन्दौर एवं उनके परिवार द्वारा गीता भवन परिसर में "राजराजेश्वर भगवान कार्तवीर्यार्जुन" की भव्य प्रतिमा की 6 नवम्बर 1989 को प्राण प्रतिष्ठा की गई।

अर्जुनेश्वर तीर्थ गऊबच्छघाट भेड़ाघाट जबलपुर या श्री राजराजेश्वर ऋद्धि सिद्धि पीठ हीरापुर, जिला जबलपुर (म.प्र.)- जबलपुर के भेड़ाघाट प्रसिद्ध पर्यटन स्थल के समीप हीरापुर ग्राम में श्री राजराजेश्वर ऋद्धि सिद्धि सिद्ध पीठ की स्थापना गजबेना सेवा समिति द्वारा की गई है। पीठ का भूमि पूजन 18 मार्च 1999 को तथा निर्माण कार्य 12 अप्रैल 1999 अक्षय तृतीया से आरम्भ हुआ। श्री कार्तवीर्यार्जुन भगवान शंकर द्वारा दिये गये वरदान के अनुसार भगवान शंकर स्थित रूप में "अर्जुनेश्वर" नाम से यहाँ निवास करते रहे, जो मनुष्य यहाँ प्रार्थना कर देवताओं को तृप्त कर पितृगण का श्राद्ध करता है, उसके पितृ साठ जहार वर्षों तक तृप्त रहते हैं। जो यहाँ अर्जुनेश्वर की पूजा करता है- वह ज्ञानी, दानी, धनी, गुणी होकर, अंत में चिरकाल तक शिवलोक में निवास करता/करती है। यह भी मान्यता है कि "गंग सप्तवी" को गंगा जी, नर्मदा जी से भेद करने अर्जुनेश्वर तीर्थ आती है। (जो अक्षय तृतीया के बाद शुक्ल पक्ष बैसाख में पड़ती है।)

पहुँच मार्ग-यह विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भेड़ाघाट के चौराहे से शहपुरा रोड पर 4 किमी. हीरापुर (बँधा) ग्राम से दक्षिण में नर्मदा की ओर शांत एकान्त वातावरण में स्थित है।

सहस्त्रबाहु मंदिर 1031 हाथीताल जबलपुर- कलचुरि संत श्री रमेश कुमार चौकसे ने अपने निवास पर श्री सहस्त्रबाहु की भव्य प्रतिमा स्थापित की है। जहाँ नित्य पुजा-अर्चना होती है।

सहस्त्रार्जुन मंदिर सहसपुर (छत्तीसगढ़)- राजराजेश्वर श्री कार्तवीर्यार्जुन सहस्त्रबाहु के वंशज राजा यशोराज ने अपने पूर्वज भगवान सहस्त्रार्जुन के नाम पर यह नगर बसाया और इसे अपनी राजधानी बनाया। यह दुर्ग से 60 मील (लगभग 90 किमी.) दूर है। यहां मंदिर तालाब और "सहस्त्रार्जुन" की सुंदर मूर्ति है। यहां के प्राप्त शिलालेख में हैहयवंशी राजा यशोराज, रानी लक्ष्मी देवी पुत्र कुमार भोजदेव और राजदेव तथा पुत्री कुमारी जालसादेवी का उल्लेख है। लेख में सन् 934 पड़ा है जो संभवत: हयाब्द या कलचुरि संवत होना चाहिये।

श्री सहस्त्रबाहु मंदिर गंज बासौदा (म.प्र.)- यह दिल्ली-मुम्बई रेल मार्ग का प्रमुख कस्बा है यहाँ एक सुंदर मंदिर में श्री सहस्त्रार्जुन की भव्य प्रतिमा स्थापित है। यहां नियमित पूजा अर्चना की जाती है।

शिवपुरी में ही सहस्त्रार्जुन की प्रतिमा- शिवपुरी मध्यप्रदेश नगर के प्रमुख चौराहे पर भगवान् सहस्त्रार्जुन की भव्य प्रतिमा स्थापित की गई है। कलचुरि समजा द्वारा यहाँ अनेक धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम किए जाते हैं।

राजराजेश्वर मंदिर हाथरस (उ.प्र.)- यहाँ मंदिर में भी कार्तवीर्यार्जुन की सुन्दर प्रतिमा है। प्रत्येक सप्ताह यहाँ हवन-पूजन होता है। इस आयोजन में समाज बंधु भागीदारी का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

श्री सहस्त्रबाहु मंदिर झाँसी (उ.प्र.)- शंकर सिंह का बागीचा में भगवान सहस्त्रबाहु का मंदिर है। यहाँ सहस्त्रबाहु जयंती पर सवा लाख दीप बत्तियों से महाआरती की जाती है।

श्री द्वारिकाधीश का श्री कार्तवीर्य रूप मथुरा (उ. प्र.)- प्रतिवर्ष विजयादशमी पर्व पर नवमीं की अंतिम घड़ी व दशमी की प्रथम घड़ी (अर्थात नवमीं-दशमीं के संक्रांति काल) में श्री द्वारिकाधीश जी के दर्शन, श्रृंगार सुदर्शन चक्रावतार कार्तवीर्य जी के रूप में होते हैं यह वर्ष में एक दुर्लभ समय होता है। इस दुरदर्शन- चक्र के भीतर सूक्ष्म अक्षरों में सुदर्शन कवच लिखा हुआ है।

राजराजेश्वर मंदिर प्रीथमपुर (धार)- मध्यप्रदेश के धार जिले में छत्रछाया कॉलोनी में कलचुरि समाज के द्वारा भव्य मंदिर का निर्माण कराया गया है जिसमें राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुन की सबसे बड़ी मूर्ति स्थापित की गई है। श्री सहस्त्रार्जुन भगवान की यह मूर्ति 6 फिट ऊँची व 4 1/2 फिट चौड़ी है। सहस्त्रार्जुन की इतनी भव्य व विशाल मूर्ति अन्य किसी मंदिर में नहीं है। वर्ष 2001 में निर्मित यह मंदिर दर्शनीय है।

श्री सहस्त्रबाहु मंदिर सीहोर (म.प्र.)- भोपाल से 40 किलोमिटर दूर सीवन नदी के किनारे भगवान सहस्त्रबाहु का भव्य मंदिर है। यहाँ नियमित पूजा अर्चना होती है।

श्री सहस्त्रबाहु मंदिर भागलपुर (उत्तर प्रदेश)- यहां भी सहस्त्रबाहु की का भव्य मंदिर है।

श्री सहस्त्रबाहु मंदिर खैरागढ़, जिला बलिया (उत्तर प्रदेश)- यहां सहस्त्रबाहु का किला भी है। वर्तमान में देश के विभिन्न प्रदेशों में समाजबन्धुओं द्वारा श्री सहसत्रार्जुन के मंदिर जाते रहे हैं। सबसे बड़ी जागृति यह है कि देश में जहां भी समाज के सामुदायिक भवन व धर्मशालाएं बन रही हैं वहाँ राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुन की मूर्ति स्थापित की जा रही है। वर्ष 2016 की शुरूआत राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुन की पीतल की मूर्ति बनाये जाने व पूजा स्थल पर रखकर दैनिक पूजन से हुई है। प्रत्येक समाजबन्धु अपने घर पर सहस्त्रार्जुन की पीलत की मूर्ति रखने में रूचि प्रदर्शित कर रहे हैं।

श्री राजराजेश्वर कार्तवीर्यार्जुन मंदिर नेपाल- नेपाल राज्य के अंतर्गत अमलेशगंज के मार्ग पर परवानीपुर समेरा के बीच लगभग 8 कि.मी. पूर्व की ओर श्री राजराजेश्वर कार्तवीर्यार्जुन का अति प्राचीन मंदिर स्थित है।

दक्षिण भारत में भगवान सहस्त्रबाहु का बढ़ता प्रभाव

1. धनवन्तरि आरोग्य पीठम बेलाजपेठ (केरल) में भी सहस्त्रबाहु जी के दो दुलर्भ, विग्रह चित्र स्थापित हैं।
2. शाहाबाद (कर्नाटक) में शाहबाद में सोमवंशी क्षत्रिय बिरादरी के केवल 15-20 परिवार निवास करते हैं, किन्तु वहां श्री चन्द्रकान्त बुरवुरे व उनके साथियों ने शाहबाद, तहसील चितापुर, जिला गुलबर्गा (कर्नाटक) में 5000 वर्गफीट क्षेत्र में 2 करोड़ की लागत से ही सहस्त्रबाहु के मंदिर का निर्माण का संकल्प लिया है।

श्री सहस्त्रबाहु के स्मारक

मंदिरों के साथ-साथ भारत वर्ष के कोने-कोने में स्थित भगवान श्री सहस्त्रबाहु व उनसे संबंधित घटनाओं को उजागर करते हैं, जिससे उनके काल की घटनाओं की प्रमाणिता बढ़ती है, कुछ स्मारक अग्रलिखित हैं:-

1. **हैहय कुण्डकुरूक्षेत्र**- इसे "परशुराम"
2. **बाहुदानद सहस्त्रबान (यू.पी.)**- यह स्थान उत्तर प्रदेश के बदायूँ जिला में है। इसे आजकल "सहस्त्रवान" अथवा "सहसवान" कहते हैं। यह अपने समय में एक विशाल नगर था। यहाँ एक सहस्त्रवान नाम की कृत्रिम नदी है। जिसका निर्माण सम्राट सहस्त्रबाहु द्वारा कराया गया था।
3. **सहस्त्रबाहु की भीटे (म.प्र. व यू.पी.)**- भोपाल के निकट साँची की पहाड़ियों के समीप "सहस्त्रबाहु के भीटे" अत्यंत प्रसिद्ध हैं। रायबरेली (उ.प्र.) के सलबन ग्राम के पूर्व कुछ मील की दूरी पर एक बड़ा बीहड़ है, जिसमें एक भीटा सहस्त्रबाहु के नाम पर पाया जाता है।

4. सहसराह नगर (बिहार)- बिहार प्रांत का सहसराम नगर जो पूर्वी रेल्वे के मुगलसराय गया मार्ग पर बसा हुआ है। कहा जाता है कि उसे सम्राट सहस्त्रबाहु ने बसाया था। यहां से 7 मील दक्षिण की और पहाड़ी पर बना हुआ "सहस्त्रबाहु का तालाब" व "सहसत्रबाहु का तालाब" व "काली जी का मंदिर" भी सहस्त्रबाहु के स्मारक हैं।

5. हँडिया (म. प्र.)- होशंगाबाद जिले में हँडिया एक कस्बा है। जनश्रुति है कि क जमगग्नि ऋषि से महाराज सहस्त्रबाहु की भेंट यहीं हुई थी। (संदर्भ ग्रंथ-हैहय वंश का इतिहास प्रथम खण्ड लेखक-पुत्तू लाल करूणेश एवं श्री गोपाल सिंह)।

6. सहस्त्रार्जुन ताल तेवर जबलपुर (म.प्र.)- राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 12 पर जबलपुर से 13 कि.मी. की दूरी पर तेवर ग्राम (प्राचीन त्रिपुरी) के एक वृहद् प्राचीन "सहस्त्रार्जुन तालाब" है। त्रिपुरी राजराजेश्वर कार्तवीर्यार्जुन के वंशज कलचुरियों की राजधानी थी। कलचुरियों ने यहां 6वीं सदी से 12वीं सदी तक राज किया। वर्तमान में यह तालाब "सास-बहु" के तालाब के नाम से जाना जाता है।

7. सहस्त्रबाहु कुण्ड- उत्तरकाशी के जनपद के बड़कोट नगर पंचायत बाजार में सहस्त्रबाहु कुण्ड है। यह कुण्ड पहले जमींदोज था। सन् 1997 में स्थानीय लोगों ने इस स्थान को खुदवाया जिसमें यह कुण्ड प्राप्त हुआ। कहा जाता है कि इस कुण्ड को सहस्त्रबाहु ने बनवाया था। इस स्थान की सुन्दरता अद्भुत है। वर्तमान में यह कुण्ड सूखा हुआ है।

8. दैनिक भास्कर समाचार पत्र में 13.11.2015 को प्रकाशित अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से 40 किलोमीटर दूर रायसेन जिले के रिछावर ग्राम में राज्य पुरातत्व विभाग को एक हजार साल पुरानी परमार व कलचुरि शैली की प्रतिमाएँ मिली हैं। इससे यह साबित होता है कि भोपाल के आसपास के क्षेत्र में भी परमार वंश के साथ-साथ महाकौशल के कलचुरि राजवंश का राज था। इस प्रकार अभी तक उपलब्ध जानकारी के अनुसार देश के अनेक क्षेत्रों में श्री सहस्त्रार्जुन भगवान के मंदिर व उनके काल के स्मारक विद्यमान है। इनकी जानकारी में विस्तार की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता।

कलचुरी वंश का इतिहास

भारत रत्न महामना के जन्म दिन पर विशेष

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय-एक विलक्षण व्यक्तित्व

गिरिधर मालवीय

भारतीय वर्ष में 19वीं शताब्दी इस देश के लिए वरदान बनकर आई जब देश ने अनेक ऐसे सपूत पैदा किए जिनके प्रयासों से ही सदियों से गुलामी का अभिशाप झेल रहा यह राष्ट्र पुनः आत्म सम्मान के साथ जीने के सपने को साकार करता 15 अगस्त 1947 से स्वतंत्र राज्य का गौरव प्राप्त कर सका, देश के इन महान सपूतों में 25 दिसंबर, 1861 को जन्में पं. मदन मोहन मालवीय का नाम भी जुड़ा हुआ है, फिर भी कुछ हद तक इसे एक विडम्बना ही मानना चाहिए कि इस देश में उनका नाम अधिकांश लोग उन्हें "काशी हिन्दू विश्वविद्यालय" के संस्थापक तथा एक महान शिक्षाविद् के रूप में ही जानते हैं। शिक्षा के अतिरिक्त मालवीयजी एक महान देश भक्त, राजनेता, अद्भुत वक्ता, सुविख्यात निर्भीक पत्रकार, समाज सुधारक, हिन्दी के सबसे बड़े प्रवर्तक तथा पोशक, अपने समय के प्रयाग उच्च न्यायालय के शीर्ष के एक सफलतम अधि वक्ता, आर्थिक सुधारों के प्रखर चिन्तक तथा अत्यंत कोमल हृदय वाले संवेदनशील मिष्टभागी आदर्श आचरण के व्यक्तित्व के धनी महानुभाव थे, जिसकी वजह से उन्हें "महामना" कहा गया, उन्होंने कभी तुच्छ वस्तुओं की इच्छा नहीं की और न ही कभी तुच्छ भावनाओं को मन में स्थान दिया। उन्हें अपने द्वारा किसी भी किए गए महत्वपूर्ण अथवा अच्छे कार्यों की अन्य लोगों को जानकारी हो इसका प्रयास करना तो दूर उन्होंने उलटा यह तरीका अपनाया था कि उनके द्वारा किए गए व पूरे कर दिए गए सद्कार्यों का कोई प्रचार न करे। अपने द्वारा संपादित कार्य की ओर उन्मुख हो जाते थे। उनके नाम का उल्लेख कहीं न हो इस बात पर वह इतना बल देते थे कि उन्होंने अपने बनाए अपने घरों के बाहर भी अपना नाम कभी नहीं लिखवाया। संभवतः यही कारण है कि अन्य सभी क्षेत्रों में

उनके योगदान के विषय में देशवासियों को अधिक जानकारी नहीं है। उनके कुछ उन पहलुओं पर मैं प्रकाश डालने का प्रयास करता हूँ जिसकी जानकारी अधिकांश लोगों को नहीं है।

महामना का हिन्दी प्रेम

महामना के हिन्दी-प्रेम की चर्चा के पूर्व यह उल्लेख करना असंगत न होगा कि उनका हिन्दी के प्रति समर्पण किसी विवषता या असमर्थता के कारण नहीं था। महामना संस्कृत तथा हिंदी भाषा में भी धाराप्रवाह व्याख्यान करने में प्रवीण थे। अंग्रेजी पर तो उनका ऐसा अधिकार था कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी तथा उस समय के भारतवर्ष के ख्याति प्राप्त अंग्रेजी भाषा के परिमार्जन के लिए उस आलेख को महामना के पास इस आशय से भेज देते थे कि वह उस आलेख की भाषा में यदि कोई संशोधन करना चाहें तो उसे कर दें। राउन्ट टेबल कॉन्फ्रेन्स में जब महामना लंदन गए तो वहाँ के अंग्रेज नेता यह मानने को तैयार नहीं होते थे कि महामना ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में नहीं पढ़े हुए हैं क्योंकि उन्हें लगता था कि महामना जिस तरह की विशुद्ध अंग्रेजी जिस प्रकार से बोलते हैं वैसी अंग्रेजी केवल ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पढ़े छात्र ही बोल पाते थे। यह तो महामना का देश-प्रेम व हिंदी के प्रति उनकी अटुट निष्ठा थी कि उन्होंने हिंदी इस देश की राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा बने, इसके लिए संकल्प बद्ध होकर हिंदी की पैरवी व उनके प्रचार-प्रचार के लिए अपना सप्रतिम योगदान दिया।

19वीं शताब्दी में भारतीय जनमानस में पराधीनता की कचोट से स्वतंत्रता की ललक जाग उठी थी। "सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी, बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नई जवानी थी। गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी, दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी" चरितार्थ हो उठा था।

ऐसे वातावरण में इस प्राप्त के बुद्धि जीवियों के लिए यह भी बर्दाश्त करना असम्भव होने लगा था कि यहाँ की सुसंस्कृत तथा समृद्ध भाषा हिंदी होते हुए भी पराधीन होने के कारण प्रदेश की जनता को समस्त राजकीय कार्यों में विदेशी भाषा फारसी अथवा अंग्रेजी का ही प्रयोग करना पड़ता था। फलत: 19वीं शताब्दी के मध्य तक आते-आते अनेक स्वाभिमानी देशभक्त बुद्धिजीवियों ने इस बात का बीड़ा उठाया कि प्रदेश में विदेशी भाषा की जगह "निज भाषा" के प्रयोग की शासकीय अनुमति मिल जाये। इस कड़ी में एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयोग राजा शिव प्रसाद 'सितारेहिन्द' द्वार भी सन् 1868 में किया गया जो उर्पयुक्त विदेशी लिपियों के हिमायतियों के विरोध के कारण सफल न हो सका।

सन् 1884 ई. में "हिन्दी-उद्धारिणी-प्रतिनिधि-मध्य-सभा" प्रयाग में खुली, जिसका उद्देश्य नागरिकों को उसका अधिकार दिलाना था। मालवीय जी ने इसमें जी खोलकर काम किया, व्याख्यान दिए, लेख लिखे और अपने मित्रों को भी इस काम में भाग लेने के लिए उत्प्रेरित किया। उन्होंने इस सम्बन्ध में विवेचना द्वारा यह जाना कि सन् 1868 ई. में राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द ने कचहरियों में नगरी के प्रवेश के लिए प्रयत्न किया था किन्तु उनको सफलता न मिली। उन्ही की भांति बहुतों ने तब छिटपुट यत्न किया, पर सभी असफल द्वारा काशी में स्थापित 'नागरी प्रचारिणी सभा' भी नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार में लगी थी, किन्तु समुचित मार्गदर्शन प्राप्त न होने के कारण उसकी स्थिति बिगड़ रही थी। मालवीय जी ने नागरी प्रचारिणी सभी की गतिविधियों में आरम्भ से ही अत्यधिक रुचि ली तथा नागरी प्रचारिणी सभा को भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार के कार्य में गतिशील बनाकर उसे एक प्रकार से पुनर्जीवित कर दिया।

आज इस देश के लोगों को सम्भवत: इस बात का अहसास भी न होगा कि भारतवर्ष में हिन्दी को विश्वविद्यालयों में एक विषय के रूप में कोई भी मान्यता प्राप्त नहीं थी। मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी को सर्वप्रथम एक विषय के रूप में मान्यता दी। आज हिन्दी की पढ़ाई सारे विश्वविद्यालयों में प्रचलित है। हिन्दी साहित्य के पुरोधा पं. रामचन्द्र शुक्ल, पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', लाला भगवानदीन आदि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के ही रत्न थे। आश्चर्य होता है कि हिन्दी के क्षेत्र में इतना अधिक योगदान करने के बाद भी हिन्दी के प्रवर्तक के रूप में महामना को क्यों नहीं जाना जाता।

आज महामना को साधारण रूप से लोग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक के रूप में ही जानते हैं। उनकी पहली कर्म-भूमि प्रयाग थी, भारतवर्ष की इस पुण्य भूमि, प्रयाग को आदि काल से ही भारत की संस्कृति तथा भारत के महापुरुषों के अपने क्षेत्र में पुष्पित व पल्लवित होते रहने का श्रेय प्राप्त रहा है। प्रत्येक वर्ष माघ के महीने

में "तीरथ सकल" यहाँ आ बसते हैं जिनके आकर्षण में देश-विदेश के अनेक संत, विद्वान व आस्थावान् जन-समुदाय की यहाँ भीड़ लग जाती है। प्रत्येक 12वें वर्ष कुम्भ तथा छठे वर्ष अर्ध कुम्भ पर तो ऐसा लगता है कि पूरा भारत की प्रयाग में उतर आया है। सतयुग से ही महर्शि भारद्वाज का प्रयाग में आश्रम तथा वहाँ याज्ञवल्क्य मुनि द्वारा राम-चरित्र का उजागर होना पूरे देश को ज्ञात है। आधुनिक काल में भी देश के कई सपूतों ने यहाँ जन्म लेकर देश को स्वतंत्र कराने के अतिरिक्त अनेक प्रकार से सामाजिक उत्थान का कार्य कर देश की अद्भूत सेवा की है। इस नगर के ऐसे सपूतों में महामना मालवीय जी का नाम सहज ही लोगों को आकर्षित करता है। अत: यहाँ उनका संक्षिप्त जीवन परिचय व प्रयाग के प्रति उनके योगदान की कुछ चर्चा करना भी अनुपयुक्त न होगा।

महामना का जन्म प्रयाग के आधुनिक मालवीय नगर में 25 दिसंबर, 1861 को हुआ था। बचपन से ही महामना की भारतीय संस्कृति तथा सनातन धर्म के प्रति गहरी आस्था थी। "धर्मज्ञानोपदेश पाठशाला" में संस्कृत के विद्यार्थी बालक मदन मोहन को, चौक के गिरजाघर के सामने एक पादरी महोदय का लोगों को यह उपदेश देना की प्रयाग के उस स्थान के वासी उनका धर्म स्वीकार कर लें, बर्दाशत न हुआ तथा उन पदरी महोदय के वक्तव्य (सर्मन) के तुरंत बाद ही लोगों का ध्यान अपनी तरफ आकृष्ट कर एक स्टूल पर खड़े होकर तथा कागज़ का भोपूं मुँह में लगाकर वह लोगों को अपने तर्क से आगाह करता कि हर व्यक्ति अपने ही देश व धर्म के प्रति निष्ठा रखे। इस बालक के तर्क तथा वक्तृता से प्रभावित हो उन्हीं पादरी महोदय ने बालक मदन मोहन की क्षमता को पहचाना तथा मित्र भाव से समझाते हुए यह बतलाया कि यदि तुम वास्तव में अपने देश व धर्म की सेवा करना चाहते हो तो अंग्रेजी पढ़कर आगे बढ़ो, जिनकी नेक सलाह से प्रभावित हो महामना ने अंग्रेजी की पढ़ाई आरंभ की।

महामना की पूरी शिक्षा प्रयाग में हुई। उन्होंने यहाँ के म्योर सेन्ट्रल कॉलेज से बी.ए. की परीक्षा पास की जिसकी परीक्षा देने के लिए अन्य विद्यार्थियों के समान उन्हें भी कलकत्ता जाना पड़ा था। अपने विद्यार्थी काल में ही महामना नाटकों में स्त्री पात्र पोर्षिया या शकुन्तला का अभिनय करने के अतिरिक्त, "फक्कड़ सिंह" के नाम से "जैन्टिलमैन" का खाका खींचते हुए अंग्रेजों पर व्यंगात्मक नुक्कड़ नाटक व कविताएँ लिखा करते थे, इन नुक्कड़ नाटकों द्वारा जेन्टिलमैन (अंग्रेज़ साहबों) का मज़ाक बनाते हुए वह अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध अपनी सोच प्रकट किया करते थे। उनके इसी जज्बे का देखते हुए उनके गुरु, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में संस्कृत की प्राचार्य पंडित आदित्य राम भट्टाचार्यजी मालवीय जी को 25 वर्ष की युवावस्था में ही 1886 में कलकत्ता में हो रहे "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस" के अधिवेशन में ले गए। कांग्रेस के संस्थापक ह्यूम साहब ने उस सत्र के ब्यौरे में लिखा कि जिस वक्तव्य पर सबसे अधिक तालियाँ बजीं तथा जिसे बहुत सराहा गया वह व्याख्यान इलाहाबाद के एक 25 वर्षीय नवयुवक का जो नाता देश को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक क्षेत्र में स्वावलम्बी व स्वतंत्र करने में जुड़ा वह उनके जीवन पर्यन्त वर्ष 1946 तक चलता रहा जब उन्होंने अपना शरीर छोड़ा, देश की इस सेवा में महामना ने 1885 से प्रारंभ के 25 वर्षों तक अपना कार्य-क्षेत्र प्रयाग ही रखा। उन्हें इस बात का भी पूरा ध्यान था कि भारत को स्वतंत्र होने के साथ ही विश्व के आधुनिक देशों के समान ही विकसित राष्ट्र का स्वरूप प्राप्त करना होगा। इसी उद्देश्य से उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आधुनिकतम वैज्ञानिक शिक्षा की पूरी व्यवस्था की थी। भारतवर्ष का पहला इंजीनियरिंग कॉलेज काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में ही बना था। प्रयाग के विज्ञान परिषद से भी वह जुड़े रहे तथा 12 वर्षों तक वे इसके उप-सभापति भी रहे।

महामना मालवीय जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होंने देश की विभिन्न प्रकार से जो सेवाएं की हैं उनका आकलन एक वक्तव्य में होना संभव नहीं है। संक्षेप में कहा जाए तो उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी नए मापदंड स्थापित किए। कलकत्ता की 1886 की कांग्रेस में उनके वक्तव्य से प्रभावित होकर राजा रामपाल सिंह उन्हें अपने साप्ताहिक पत्र "हिन्दोस्थान" का संपादन करने के लिए कालाकाँकर ले आए। मालवीय जी की देख रेख में यह समाचार पत्र साप्ताहिक से दैनिक बन गया। कालान्तर में मालवीय जी ने प्रयाग से "लीडर", "अभ्युदय", "मर्यादा" तथा दिल्ली से "हिन्दुस्तान टाइम्स" तथा इसका हिन्दी संस्करण "हिन्दुस्तान" अखबार चलाकर उसका संपादन किया। पहले पत्र-पत्रिकाओं में छपे लिखों का मानदेय, सम्पादक अपनी इच्छानुसार निर्धारित करते हुए किसी को दो रुपये, किसी को पाँच रुपये इत्यादि, जो मन में आ जाए, किया करते थे। मालवीय जी ने पहली बार यह

निर्णय कराया कि लेखकों को मानदेय उनके लेख के विस्तार से अनुरूप कॉलम में जीतना लेख का विस्तार है (कॉलम वाइस) दिया जाएगा।

महामना आस्थावान, धार्मिक व्यक्ति होते हुए भी उदार विचारधारा के धनी थे। समाज में व्यक्त छुआ-छुत के वह विरोधी थे। उन्होंने अछूतोद्धार आन्दोलन चलाकर काशी में अछुतों को अपने पास बैठाकर मंत्र दीक्षा दी तथा देश के विभिन्न हिस्सों में जाकर अछूतोद्धार आन्दोलन चलाकर इस कुप्रथा को समाप्त करने का आहन्न किया।

देश के आर्थिक विकास पर उनके बताए मंत्र आज भी प्रासंगिक हैं। 1918 के कांग्रेस अधिवेशन के आर्थिक सम्मेलन का उनका वक्तव्य आज भी अर्थशास्त्रियों द्वारा पढ़ा जाता है। उनके अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों का विवरण जानने के लिए उन पर लिखी अनेक पुस्तकों को परिशीलन करना होगा। इतना उल्लेख करना पर्याप्त होगा कि उनके संबंध देश के मुस्लिम नेताओं से बहुत अच्छे थे तथा मुस्लिम नेता बेझिझक यह कहा करते थे कि यदि उनका राजनीतिक मामलों में बातचीत का सिलसिला मालवीयजी से होता तो निश्चय ही उनका आपस में एकमत हो जाता।

अपन राजनीतिक व सामाजिक जीवन के पहले 25 वर्षों में ही वाराणसी जाने के पूर्व, महामना ने इलाहाबाद में सन् 1901 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले हिन्दू छात्र जो मांसाहार से परहेज करते थे, के निवास के लिए "हिन्दू बोर्डिंग हाउस" की स्थापना कराई जो आज भी यहाँ के विश्वविद्यालय का सबसे बड़ा छात्रावास है। इसके अतिरिक्त प्रयाग के "हिन्दी साहित्य सम्मेलन", "भारतीय भवन लाइब्रेरी", "ऑल इण्डिया सेवा समिति", "मिन्टो पार्क", तथा "लीडर" अखबार की स्थापना करके इन सबके माध्यम से भारत की जनता में "अपने देश में अपना राज" तथा "सत्यमेव जयते" के अपने प्रसिद्ध नारे को जन जन के बीच पहुँचा कर देश को उन्होंने भारतवर्ष को अंग्रेजी हुकूमत की दासता से मुक्त करने के अभियान में स्वतंत्रता पूर्व कांग्रेस के चार अधिवेशनों के अध्यक्ष होने के एकमात्र भारतीय होने के नाते जिस प्रकार इस देश की सेवा की, उसे इस देश के निवासी सदैव आदरपूर्वक स्मरण करते हुए उनके जन्म के इस 150वें वर्ष को उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए मनाएंगे– ऐसी ही सारे देश को आशा है।

पूर्व न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

शिकागो सार

स्वामी विवेकानन्द जी के जन्म दिवस पर विश्व युवा दिवस पर विशेष प्रस्तुति

11 सितंबर 1983 को विश्वधर्म सम्मेलन में अमेरिका द्वारा किए गए स्वागत के उत्तर में स्वामी विवेकानंद के भाषा का संक्षिप्त रूप....

मेरे प्रिय अमेरिकावासी भाइयों और बहनों!

आपने जिस सौहार्द और स्नेह के साथ हम लोगों का स्वागत किया है, उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से पूर्ण हो रहा है। संसार में संन्यासियों की सबसे प्राचीन परंपरा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूं, धर्मों की माता की आरे से धन्यवाद देता हूं और सभी संप्रदायों एवं मतों के कोटि-कोटि हिंदुओं की ओर से भी धन्यवाद देता हूं।

मैं इस मंच पर से बोलने वाले उन कतिपय वक्ताओं के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूं, जिन्होंने प्राची के प्रतिनिधियों का उल्लेख करते समय आपको यह बतलाया है कि सुदूर देशों के यह लोग सहिष्णुता का भाव विविध देशों में प्रचारित करने के गौरव का दावा कर सकते हैं।

मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूं, जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति, दोनों की ही शिक्षा दी हैं। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं।

मुझे ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।

मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता है कि हमने अपने वक्ष में यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट को स्थान दिया था, जिन्होंने दक्षिण भारत आकर उसी वर्ष शरण ली थी, जिस वर्ष उनका पवित्र मंदिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया था। ऐसे धर्म का अनुयायी होने में मैं गर्व का अनुभव करता हूं, जिसने महान जरशुस्त्र

जाति (पारसी) के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है।

भाइयों, मैं आप लोगों को एक स्तोत्र की कुछ पंक्तियां सुनाता हूं, जिनकी आवृत्ति मैं बचपन से कर रहा हूं और जिनकी आवृत्ति प्रतिदिन लाखों मनुष्य किया करते हैं:

रुचिनां वैचित्र्यादृजु कुटिलनानापथजुषाम्।

नृणामेको गयस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

अर्थात जैसे विभिन्न नदियां भिन्न-भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार हे प्रभो! भिन्न-भिन्न रूचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जाने वाले लोग अंत में तुझमें ही आकर मिल जाते हैं।

यह सभा, जो अभी तक आयोजित सर्वश्रेष्ठ पवित्र सम्मेलनों में से एक हैं, स्वत: ही गीता के इस अद्‌भूत उपदेश का प्रतिपादन एवं जगत के प्रति उसकी घोषणा है:

ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भजायहम्।

मम वर्त्मानुवर्तंते मनुष्या: पार्थ सर्वशः॥

अर्थात जो कोई मेरी ओर आता है, चाहे किसी प्रकार से हो, मैं उसको प्राप्त होता हूं। लोग भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अंत में मेरी ही ओर आते हैं।

सांप्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशज ध र्मांधता इस सुंदर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज कर चुकी है। यह शक्तियां पृथ्वी को हिंसा से भरती रही हैं, उसको बारंबार मानवता के रक्त से नहलाती रही हैं, सभ्यताओं की विध्वस्त करती और देश के लोगों को निराशा के गर्त में डालती रही हैं।

यदि ये वीभत्स दानवी न होतीं तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता, लेकिन अब उनका समय आ गया है और मैं आंतरिक रूप से आशा करता हूं कि आज सुबह इस सभा के सम्मान में जो घंटाध्वनि हुई है, वह समस्त धर्मांधता का, तलवार या लेखनी के द्वारा होने वाले सभी उत्पीड़नों का तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले मानवों की पारस्परिक कटुता का मृत्युनिनाद सिद्ध हो।

विवेकानन्द ट्रस्ट, कन्याकुमारी

खुद का निर्माण: जीवन की गुणवत्ता आपके हाथ

जीवनशैली के चलते होने वाली कई तरह की बीमारियां आजकल शहरी युवाओं में आम होती जा रही हैं। हालांकि अगर खानपान और दिनचर्या में थोड़ा सुधार कर लिया जाए तो न सिर्फ इनसे बचा जा सकता है, बल्कि अपने जीवन की गुणवत्ता भी बढ़ाई जा सकती है।

कहते हैं - इलाज से बेहतर है एहतियात। अगर अपने जीवन में गुणवत्ता लानी है तो इस कहावत पर अमल करना जरूरी ही नहीं, अनिवार्य है। ऐसी कई बीमारियां जिनके बारे में कहा जाता है कि वे अब महामारी का रूप ले चुकी हैं या ले रही हैं, उन्हें केवल एहतियात बरत कर अपने से दूर बनाए रखा जा सकता है। सेहत की कई छोटी-मोटी दिक्कतों से तो ऐसे भी केवल एहतियात बरत कर बचा जा सकता है। जानकारों का मानना है कि स्वास्थ्य की 70 फीसद मुश्किलें तो केवल हमारी जीवनशैली के कारण होती हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि तेजी से बदलते हालात में स्वास्थ्य के ऐसे कई नियमों का उसी तरह पालन करना हमारे लिए संभव नहीं रह गया है, जैसे हमसे केवल दो पीढी पहले के लोग करते रहे हैं। इसकी वजह केवल इतनी नहीं है कि अब व्यस्तताएं बहुत बढ गई हैं और जिंदगी की रफ्तार पहले की तुलना में बहुत तेज हो गई है, बल्कि यह भी है कि कई मामलों में हमारे लिए सुविधाएं भी बहुत बढ गई हैं। इन सुविधाओं ने जहां एक तरफ हमें बढती व्यस्तताओं से निपटने में सक्षम बनाया है, वहीं आलसी भी बनाया है। सुविधाओं से बढे आलस्य ने हमें बहाने भी खूब दिए हैं। यहां तक कि हमें खुद से ही बहानेबाजी करनी सिखा दी है। इस बहानेबाजी का ही नतीजा है डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, कार्डियक अरेस्ट आदि कई असाध्य बीमारियां आम होती जा रही हैं। ये सभी हमारी अस्वास्थ्यकर जीवनशैली का ही नतीजा हैं। इसीलिए इन्हें मेडिकल साइंस की भाषा में डिजीजेज ऑफ सिविलाइजेशन यानी सभ्यता की बीमारियां कहा ही जाता है।

शहरी युवाओं में बढ रही हैं बीमारियां

इसी साल आए एक सर्वे के अनुसार भारत के शहरी युवा पुरुष बडी तेजी से जीवनशैली के चलते होने वाले रोगों के

शिकार होते जा रहे हैं। मेट्रोपोलिस हेल्थकेयर द्वारा किए गए इस सर्वे के लिए कुल 38,966 सैंपल लिए गए और पाया गया कि दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद व चेन्नई जैसे बडे शहरों में रहने वाले आधे से पुरुष डायबिटीज से ग्रस्त हैं। 56.81 प्रतिशत लोगों में डायबिटीज खतरनाक स्तर तक पहुंच चुका है। इनमें से 41.48 प्रतिशत लोग 20-40 वर्ष आयुवर्ग के हैं। इसके अलावा 8.21 प्रतिशत लोगों में हाइ कोलेस्ट्रॉल पाया गया। इसी आयुवर्ग के 23.01 प्रतिशत लोगों में कोलेस्ट्रॉल का स्तर तेजी से बढता देखा गया। इसके अलावा प्रोस्टेट कैंसर भी तेजी से बढता देखा जा रहा है। यह सर्वे एहतियात बरतने पर जोर देता है।

नियमित दिनचर्या जरूरी

शहरी जीवन के चलते आए लेटनाइट पार्टीज के प्रचलन ने अधिकतर युवाओं की दिनचर्या को बिगाड दिया है। रात में देर तक जागना और सुबह देर से उठना, इसके बाद फटाफट तैयार होना और काम पर निकल लेना..। इस बीच अकसर लोग नाश्ता भी नहीं कर पाते। कई लोग तो चलते-चलते रास्ते में ही कुछ लेकर खाते हुए जाते देखे जा सकते हैं और कुछ को इतना मौका भी नहीं मिलता। इस दिनचर्या में मॉर्निंग वॉक, योग और ध्यान की तो बात ही बेमानी है। हकीकत यह है कि वे अपनी नींद भी पूरी नहीं कर पाते। गलती का एहसास तब होता है जब मौका हाथ से निकल ही चुका होता है।

डा. कहते हैं, इसके पहले कि ऐसा हो, अपनी दिनचर्या और इसे दुरुस्त करने की जरूरत समझ लें तो बेहतर होगा।

खाएं सोच-समझ कर

हमारे यहां बार-बार कहा जाता रहा है कि सुखी जीवन के लिए आहार, विहार और विचार की शुद्धता जरूरी है। शुद्धता के इस मत को अगर किसी अति शुद्धतावादी आग्रह से जोड कर न देखें। इसका आशय केवल इतना ही है कि सोच-समझ कर खाएं और अपनी दिनचर्या सही रखें। आयुर्वेद में आहार, विहार और विचार की शुद्धता की जो बात की गई है, इसमें पहले यानी आहार का सीधा अर्थ डाइट से है। शुद्ध आहार का मतलब स्वछ और स्वास्थ्यकर वातावरण में बने संतुलित एवं सुपाय भोजन से है।

मारी परंपरा में स्वछता का इतना आग्रह क्यों है, अब यह बताने की जरूरत नहीं रही। बचे भी जानते हैं कि इन्फेक्शन की सबसे ज्यादा आशंका गंदगी से ही होती है। तेल-मसाले का प्रयोग एकदम न किया जाए, ऐसा कहीं नहीं कहा गया। कुछ त्योहारों पर बनने वाले भोजन में तो तेल-मसालों को काफी अहमियत दी गई है। ये वही त्योहार हैं जो ऋतु परिवर्तन के समय होते हैं। इस समय हमें पेट साफ रखने के लिए रेचक आहार की जरूरत होती है। बाकी समय अगर हम आसानी से पचने वाला संतुलित और पौष्टिक आहार लें तो सबसे अछा रहेगा। जंक फूड नहीं ही लें तो बेहतर। क्योंकि इसके चलते हमारे शरीर में सैचुरेटेड फैट बढता है, जो आगे चलकर कई बीमारियों को जन्म देता है। साथ ही यह भी ध्यान रहे कि भोजन समय से लें और नाश्ता कतई न छोडें।

मामूली न समझें थकान को

शुरुआत अकसर ऊर्जा की कमी और थकान के अनुभव से होती है। फिर यह कब्ज, जोडों में दर्द, कार्यक्षमता में कमी, चिंता, याद्दाश्त में कमी, घबराहट, बेचैनी आदि से होते हुए उस खतरनाक मोड तक पहुंच जाती है, जहां सारे एहतियात बरतने और जीवनशैली में पूरे सुधार का भी कोई खास मतलब नहीं रह जाता। क्योंकि ऐसी स्थिति में इसका असर बहुत देर से हो पाता है। प्रयास ज्यादा करना पडता है और परिणाम अपेक्षाकृत कम मिलता है। इसके विपरीत अगर शुरू से खयाल रखा जाए तो यह बात लगभग सुनिश्चित मानी जाती है कि आप कई रोगों से बचे रह सकते हैं।

जीवनशैली के चलते जो रोग इन दिनों बडी तेजी से बढ रहे हैं, उनमें डायबिटीज और ब्लड प्रेशर प्रमुख हैं। इनमें डायबिटीज तो पीढी दर पीढी चलने वाला रोग माना जाता है और इसका असर अब बचों तक पर देखा जा रहा है। अगर आपके परिवार में इसका इतिहास नहीं है तो भी आपको सतर्क हो जाना चाहिए। क्योंकि पहले से सचेत होकर आप न केवल स्वयं को, बल्कि अपनी भावी पीढियों को भी इससे बचा सकते हैं। ठीक इसी तरह ऑस्टियोपोरोसिस की गिनती भी त्रासद बीमारियों में होती है। इसकी शुरुआत आम तौर पर जोडों के दर्द से होती है और शुरुआती दौर में इस पर लोग बहुत ध्यान नहीं देते। अकसर इसे सामान्य दर्द मानकर या तो नजरअंदाज कर दिया जाता है या फिर दर्द निवारक दवाओं से इसे उस वक्त दबा दिया जाता है। यह समझे बगैर कि दर्द का महसूस होना या न होना हड्डियों और जोडों के भीतर चल रही किसी ज्यादा नुकसानदेह प्रक्रिया का एक लक्षण भर है। दर्द दबा देने से यह ठीक नहीं होगा। ठीक हो, इसके लिए जरूरी है कि इनका वही उपयोग हो, जिसके लिए ये बनी हैं।

-**अजय जायसवाल** (युवा सचिव, जायसवाल जागृति)
- प्रेरक वक्ता और सामाजिक कार्यकर्ता

'बीमारी का कारण क्या पनीर भी है?'

बात करते हैं आज के सबसे प्रसिद्ध खाद्य भोजन 'पनीर' की।

भारतीय लोग तो पनीर के इतने दीवाने हो चुके हैं कि इन्हें जहां पनीर मिल जाता है, बहुत ही मजे से चाप लेते हैं, होटल में गए तो बिना पनीर खाये इनके गले से निवाला नहीं निगलता। कढ़ाई पनीर, शाही पनीर, मटर पनीर, चिली पनीर और भी न जाने क्या क्या पनीर समोसे में पनीर, पकौड़ी में पनीर, पिज्जा में, भटूरे में पनीर, बर्गर में पनीर, मतलब जहां देखो वहां पनीर!

'भारत में शायद जितना दूध पैदा नहीं होता उससे ज़्यादा पनीर बनता होगा।'

भारतीय चिकित्सा विज्ञान में सबसे प्राचीन विधा 'आयुर्वेद' में दूध, दही,माखन, छाछ, घी का जिक्र तो हर जगह है किन्तु इस नामुराद पनीर का जिक्र कहीं भी नहीं मिलता!

आखिर क्यों?

यदि पनीर इतना ही अच्छा है तो इसके बारे में किसी ऋषि या मुनि ने कुछ लिखा क्यों नहीं?

जब गहराई से इसकी पड़ताल की तो पता चला कि 'आयुर्वेद में पनीर को निकृष्टतम भोजन के रूप में बताया गया है,' बोले तो कचरा और कचरा भी ऐसा वैसा नहीं, ऐसा कचरा जिसे जानवरों को भी खिलाने से मना किया गया है।

दूध को फाड़ कर या दूध का रूप विकृत करके पनीर बनता है, जैसे कोई सब्जी सड़ जाए तो क्या आप उसे खाएंगे ?

'पनीर भी सड़ा हुआ दूध है।'

भारतीय इतिहास या हमारी प्राचीन परम्परागत व्यंजन की लंबी श्रंखला में कहीं भी पनीर का उल्लेख नहीं है, न ही ये भारतीय व्यंजन है, क्योंकि भारत में प्राचीन काल से ही दूध को विकृत करने की मनाही रही है।

आज भी ग्रामीण समाज में घर की महिलाएं अपने हाथ से कभी दूध नहीं फाड़ती!

'पनीर खाने के नुकसान'

आयुर्वेद ने तो शुरू से ही मना किया था कि विकृत दूध लिवर और आंतों को नुकसान पहुंचाता है, लेकिन अब आधुनिक विज्ञान ने भी अपने नए शोध में साबित किया है कि पनीर खाने से आंतों पर अतिरिक्त दबाव आता है जिससे पाचन संबंधित रोग होते हैं।

पनीर में पाया जाने वाले प्रोटीन को पचाने की क्षमता तो जानवरों में भी नहीं होती है फिर मनुष्य उसे कैसे पचा सकता है! नतीजा होता है, खतरनाक कब्ज, फैटी लीवर और आगे चल कर शुगर, कोलेस्ट्रॉल, हाई ब्लडप्रेशर और यही पनीर पेट की खतरनाक बीमारी प्ठै को भी पैदा करता है।

ज्यादा पनीर खाने से खून में थक्के जमने की शिकायत होती है, जो ब्रेन हैमरेज और हार्ट फेलियर का कारण बनता है। वहीं ये पनीर हार्मोनल डिसबैलेंस का कारण बनता है जिससे हाइपोथायरायडिज्म या हाइपरथायराइडिज्म पनपता है, महिलाओं में गर्भ धारण करने की क्षमता कम होती है और पुरुषों में नपुंसकता भी आती है।

कुल मिला कर यदि देखा जाए तो ये पनीर लाभ तो सिर्फ जीभ को देता है लेकिन हानि पूरे शरीर की करता है, 'इसलिए अगली बार पनीर खाने से पहले सोचिएगा जरूर!'

अनिल कुमार जायसवाल
कार्यकारी सम्पादक

हम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता है

अपने निजी दोष दूसरे के मत्थे मढ़ना मनुष्य की स्वाभाविक प्रकृति है। हम अपने दोष नहीं देखते हैं। अपनी दुर्बलताएं, अपनी गलतियां मानने को हम तब तक राजी नही होते, जब तक कि दूसरों पर ये सब लाद सकते हैं। साधारणतः मनुष्य अपने दोषों तथा अपनी भूलों को पड़ोसियों पर लादना चाहता है। यदि ऐसा न हुआ, तो ईश्वर को इसके लिए उत्तरदायी बनाने की चेष्टा करता है। और यदि इसमें भी सफल न हुआ, तो भाग्य नामक एक भूत की कल्पना करता है और उसी को इसके लिए उत्तरदायी बताकर निश्चित हो जाता है। परंतु प्रश्न यह है कि 'भाग्य' नाम की यह वस्तु है क्या और रहती कहां है?

हमने स्वयं ही अपने-अपने भाग्यों की सृष्टि की है। यद्यपि हमारा भाग्य खोटा हो, तब भी हम किसी को उत्तरदायी नहीं बना सकते और यदि हमारे भाग्य अच्छे हों, तो भी किसी की प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं है। हवा हमेशा बहती है। जिन जहाजों के पाल उठे रहते हैं, हवा उन्हीं के साथ देती है और वही जहाज हवा के सहारे आगे बढ़ते हैं। किंतु जिनके पाल लगाए नही गए, उन पर हवा का कोई असर नहीं होता, पर यह क्या हवा का दोष है? हममें से कोई सुखी है, तो कोई दुखी। क्या यह भी उन करुणामय परमेश्वर के कारण है, जिनकी कृपा-रूपी हवा दिन-रात बहती रहती है? हम स्वयं ही अपने भाग्यों के निर्माता हैं।

सूर्य सभी के लिए उगता है, चाहे दुर्बल ही या बलवान। साधु, पापी-सबके लिए हवा बह रही है। भगवान के संबंध में हमारी यह कितनी क्षुद्र धारणा है। ईश्वर पर सब दोष लाद देना या यह कहना कि वे ही दंड-पुरस्कार देने के मालिक हैं, मूर्खता की बातें हैं। वे किसी को दंड या पुरस्कार नहीं देते। हमें मनुष्य, ईश्वर या किसी अन्य पर दोष नहीं मढ़ना चाहिए। जब तुम स्वयं कष्ट पाते हो, तो उसके लिए स्वयं को दोषी समझो एवं जिससे अपना कल्याण हो सके, उसी की चेष्टा करो।

जो लोग अपने दुखों या कष्टों के लिए दूसरों को दोषी मानते हैं, साधारणतया वे दुर्बल-मस्तिक के हैं; ऐसा करने के कारण वे और भी दुर्बल बन जाते हैं। इसलिए अपने दोष के लिए तुम किसी को उत्तरदायी न समझो, अपने पैरों पर खड़े होने की चेष्टा करो, सभी कामों के लिए खुद को ही उत्तरदायी समझो। कहो कि जिन कष्टों को हम अभी झेल रहे हैं, वे हमारे ही कर्मों के फल हैं। यदि यह मान लिया जाए, तो यह भी प्रमाणित हो जाएगा कि वे हमारे ही द्वारा नष्ट भी किए जा सकेंगे। हमने जो कुछ किया है, उसे खत्म भी हम ही कर सकते हैं। इसलिए उठो और सहासी बनो। सब उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लो। यह याद रखो कि तुम स्वयं ही अपने भाग्य के निर्माता हो। तुम जो कुछ बल या सहायता मांगते हो, वह तुम्हारे भीतर ही विद्यामान है। इसलिए इसी ज्ञानरूप शाक्ति के सहारे तुम बल प्राप्त करो और अपना भविष्य अपने हाथों संवारो।

–ज्ञान योग

तूफान में ही लीडर की असल परीक्षा होती है

धाराएं जब प्रतिकूल होती हैं, तभी नाविक की परीक्षा होती है। शेक्सपियर की इससे संबंधित उक्ति को मैं अपने पिता जी के दफ्तर में रोज देखता था। मैं दस वर्ष का था, और मुझे लगता था कि यह शायद नौकायन के बारे में कुछ लिखा हैं लेकिन जब मैं दस वर्ष का हुआ, तब मेरे पिता जी ने इस उक्ति को समझाते हुए कहा, वह मेरी जिंदगी का दर्शन बन गया है।

जब हालात विपरित हों

मेरे पिता जी ने मुझसे कहा कि एक सच्चे चरित्र व कामयाबी की बुनियाद तब नहीं रखी जाती, जब सभी कुछ अच्छा चल रहा हो, बल्कि जब सबकुछ आपकी सोच के विपरीत हो रहा हो, तभी सच्चा लीडर आगे की नई राह खोजता है। पिता की इस सीख ने लिंक्डइन के सीईओ के रूप में कार्य करते हुए मुझे बड़ा सहारा दिया है।

हवाओं के अनुकूल होने का इंतजा न करें

जब मैंने लिंक्डइन की बागडोर संभाली, तब चीजें काफी तेजी से बदल रही थीं। लेकिन, मैंने और मेरी टीम ने हिम्मत नहीं हारी और पीछे हटने की बजाय हमने नए तरीके आजमाने पर फोकस किया। कुछ समय पहले माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ सत्य नडेला ने भी मुझसे कहा था कि लीडर को अच्छे प्रदर्शन के लिए हवाओं के अपने अनुकूल होने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि जो भी जिम्मदारी दी गई है, उसे पूरे जुनून के साथ पूरा करना चाहिए।

सीखते रहना ही लीडरशिप का सार

निरंतर सीखने की संस्कृति को विकसित करना सबसे महत्त्वपूर्ण है, जो आपके बिजनेस को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। यह इस पर भी निर्भर करेगा कि आप अपनी टीप की नियुक्ति किस आधार पर करते हैं और उनका विकास कैसे करते हैं। जो कंपनियां डिग्री व अनुभव से ज्यादा कौशल को महत्त्व देती हैं, वे काफी प्रगति करती हैं। लेकिन कौशल वाले कर्मचारियों का पास होना काफी नहीं, उनमें लगातार विकास हो, यह सुनिश्चित करना भी जरूरी है।

अपनी ऊर्जा को मैनेज करें,

जब समुद्र शांत होता है, तो उसे कोई भी संभाल सकता है। लेकिन जब तूफान आया हो, फिर भी आप अपने काम को रचनात्मक ढंग से करने की सोच रहे हों, तो आपकी सोच व क्षमता एक अलग ही स्तर पर होती है। खुद को कंफर्ट जोन में कभी न रखें। जोखिम लेना सीखें, उससे घबराएं नहीं। खुद को निरंतर नए-नए लक्ष्य देते रहें। अगर आप इस तरह के तनाव का प्रबंधन करना सीख गए, तो फिर कोई लक्ष्य मुश्किल नहीं। तनाव प्रबंधन ही दरअसल ऊर्जा प्रबंधन है।

रयान रोज लैंस्की, सीईओ, लिंक्डइन

स्रोतः विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित

काम करने वालों की हमेशा कद्र होती है

जब आप नई जिम्मेदारियां लेते हैं, तो खुद को नए अवसरों के लिए भी तैयार कर रहे होते हैं

आप एक पेशेवर हैं और अपनी वर्तमान नौकरी से संतुष्ट नही हो पा रहे हैं। लेकिन आप नौकरी को छोड़ने की स्थिति में भी नही हैं, तो आपके सामने क्या विकल्प बचते हैं? ऐसे में आप नौकरी छोड़ने के बजाय इस बात पर अधिक जोर दे सकते हैं कि कैसे नौकरी में रहते हुए खुद के लिए अवसरों की तलाश की जाए और उन तरीकों को खोजा जाए, जिनमें आप ऑफिस में अपनी मौजूदगी का सार्थक एहसास करा सकें और काम में संतुष्ट् भी पा सकें।

काम मांगने की आदत डालें

काम का नियम है कि यह उनके पास आता है, जो काम को करना चाहते हैं। आप उसी नौकरी में रहते हुए खुद को बड़े प्रोजेक्ट में शामिल करने की प्रार्थना कर सकते हैं। अपने मूल कामों के साथ नई जिम्मेदारियों कों लेते हुए अपनी भूमिका को बखूबी निभाएं। जब भी आप किसी बड़े प्रोजेक्ट में काम करते हैं, तो इससे न केवल आपकी रचनात्मक का विकास होता है, बल्कि आप भविष्य के लिए भी खुद को तैयार कर रहे होते हैं।

अपेक्षा और वास्तविकता के बीच तालमेल

अगर आप कंपनी में अपनी भूमिका से असंतुष्ट महसूस कर रहे हैं, तो इसकी वजह यह हो सकती है कि खुद से अपेक्षा के अनुरूप आपको काम न मिल पा रहा हो। सेंट्रल फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी में मनोविज्ञान की प्रोफेसर मिंडी शॉस का कहना है कि जब कोई लंबे समय तक मेहनत करे, लेकिन फिर भी उसे सहराना न मिले, तो भी वह असंतुष्ट हो जाता है। ऐसे में उसे मैनेजमेंट के सामने सकारात्मक ढ़ग से अपनी बात रखनी चाहिए।

काम करने वालों की हमेशा कद्र

अगर आप वर्कप्लेस में अधिक निराशा महसूस कर रहे हैं, तो जाहिर है कि आपके साथी कर्मचारी भी यही महसूस कर रहे होगें। इस स्थिति में अपने गुस्से को जाहिर न होने दें और एक दूसरे के समर्थन के लिए रचनात्मक और ईमानदार तरीके खोजें। लेकिन, नकारत्मक फैलाने वालों से दूर रहें। ध्यान रहे, काम करने वाले की हमेशा कद्र होती है। काम के प्रति सकारत्मक सोच रखने वाले अपने जैसे लोगों का आप एक ग्रुप भी बना सकते हैं।

उत्साह बनाए रखें

विशेषज्ञों का मानना है कि काम में निराशा महसूस होने पर उसे जिज्ञासा के साथ देखें। हार्वर्ड बिजनेस स्कूल में लीडरशिप की प्रोफेसर एमी सी एडमंडसन का कहना है, 'खुद से पूछें कि आपके काम में बाधा आ रही है, और मैं इसे कैसे दूर कर सकता हुँ? हर कोई आगे बढ़ना चाहता है, इसके लिए योजना बनाने और प्रयास करने में कोई बुराई नही है।'

मौलिक विचारों को हमेशा प्रोत्साहन दें

एक अच्छे लीडर के रूप में खुद को उभारने के लिए ज्ञान व साहस, दोनों गुण होने चाहिए

एक बेहतर लीडर वह होता है, जिसे पता हो कि लक्ष्य तक पहुंचने के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग कौन-सा है। लीडर बनने के लिए सिर्फ मेहनत करना ही काफी नहीं। आप ऑफिस में बॉस द्वारा दिए गए कार्यों को बाकी साथियों की तुलना में अच्छे से करना जानते हैं, पर यदि आपका मिजाज लोगों से मेल नही खाता, तो यकीनन आप एक अच्छे लीडर की भूमिका नहीं निभा सकते। अमूमन कई लोग ऑफिस में अपनी भूमिका को बेहतर करने के लिए अनुभवी लोगों से सलाह लेते हैं, जो उन्हें कड़ी मेहनत

करने का मशविरा देते हैं। लेकिन अपनी क्षमता प्रदर्शित करने के लिए मेहनत ही एकमात्र तरीका नही है, आप अपनी प्रतिभा व विश्वसनीयता सही ढंग से और सही लोगों तक पहुंचाकर भी अपनी नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन कर सकते हैं।

सहकर्मियों के साथ अच्छा व्यवहार

कुछ वर्ष पहले मेटा की वूमेन लीडरशिप समिट में मशहूर लेखिका कार्ला हैरिस ने कहा था, 'जो लोग तकनीकी क्षेत्रो में कौशल को अधिक महत्व देते हैं, उनका मूल्यांकन प्रदर्शन के आधार पर किया जाता है। पर समस्या यह है कि केवल बेहतर प्रदर्शन ही लीडरशिप की क्षमता प्रदर्शित करने का एकमात्र माध्यम नहीं है, बल्कि सहकार्मियों के साथ आपका अच्छा व्यवहार भी इसमें अहम भूमिका निभाता है। लीडर के लिए जरूरी है कि वह टीम में नए व मौलिक विचारों को लगातार प्रोत्साहन दे।

खुद की ब्रांडिंग करना सीखें

अकसर शांत रहने वाले लोगों के लिए परिस्थितियां तब अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाती हैं, जब वे अपने कार्यों को ठीक ढंग से प्रस्तुत नही कर पाते। इसलिए आपको अपने काम की और इस बहाने खुद की ब्रांडिंग करना सीखना होगा। चुनौतियों से बचने की प्रवृत्ति ठीक नही। अगर आप लीडर बनना चाहते हैं, तो समस्याओं के नए समाधान ढुंढ़ने का प्रयास करें। इसके अलावा यदि आप बोलने में झिझक महसूस करते हैं, तो भी अपने बॉस के साथ अच्छा संबंध बनाने की कोशिश करें।

सामूहिक प्रयासों को बढ़ावा दें

एक अच्छे लीडर के रूप में खुद को उभारने के लिए आपके अंदर ज्ञान व साहस, दोनों गुण होने चाहिए। आप कंपनी में एक टीम का हिस्सा हैं, पर टीम में रहते हुए अन्य साथियों की तुलना में अलग दिखना चाहते हैं या आप चाहते हैं कि सहकर्मी आपको एक लीडर के रूप में मान्यता दें, तो शुरुआत सामूहिक प्रयास से करें। अपनी क्षमता व कौशल विकसित करने के लिए टीम की उपलब्धियों के बारे में बात करें और उन कार्यों में अपने व्यक्तिगत योगदान की भी चर्चा करें। साथ ही, टीम को बताएं कि इस प्रोजेक्ट में उनका योगदान अति प्रशंसनीय है और अगर उनका सहयोग न मिला होता, तो कार्य समय से पूरा न हो पाता। इससे टीम का आत्माविश्वास बढ़ेगा और वह समर्पित होकर काम कर पाएगी।

टूटी टाइगर्ली, हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू

गरिमामय बुढ़ापे के लिए सखी से लें वित्तीय फैसले

हमारी जिंदगी व फिल्मों में कई समानताएं हैं। वास्तव में, कई फिल्में वास्तविक जीवन पर आधारित होती हैं। इसलिए, जब मैंने 2003 की ब्लॉकबस्टर फिल्म बागबान के 20 साल पूरे होने का जश्न देखा तो मैं यह याद किए बिना नहीं रह सका कि सेवानिवृत्ति के बाद एक बैंक मैनेजर का जीवन कैसा होता है। फिल्म का महत्त्वपूर्ण संदेश यह था कि अपनी सेवानिवृत्ति के लिए आर्थिक रूप से बच्चों पर निर्भर न रहें। यह हर परिवार के लिए सच नहीं हो सकता है, लेकिन फिल्म से सीखने वाला मुख्य सबक यह है कि जब आप सेवानिवृत्त हों तो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर रहें।

अपनी जरूरतों को नजरअंदाज करने से बचें

भारत में माता-पिता बच्चों को पढ़ाने और उन्हें सेटल करने के लिए किसी भी हद तक चले जाते हैं। ऐसा अक्सर सेवानिवृत्ति की जरूरतों को नजरअंदाज कर किया जाता है। कुछ माता-पिता बच्चों की शिक्षा या शादी के लिए अपने पीएफ से पैसे निकालने की हद तक चले जाते हैं। बच्चों पर खर्च का निर्णय व्यक्तिगत पसंद है, लेकिन यह फैसला सोच-विचारकर और अपने जीवनसाथी के साथ चर्चा कर लिया जाना चाहिए। अगर जरूरी हो तो चर्चा में बच्चों को भी शामिल करें। आखिरकार, आप अपने आज के वित्तीय फैसलों के कारण बुढ़ापे में गरीबी में नहीं रहना चाहते, जो आपके भविष्य को प्रभावित कर सकता है।

वित्तीय स्थित पर बच्चों से खुलकर करें बात

मैं आपको यह सोचने के लिए प्रभावित करने की कोशिश नहीं कर रहा हूं कि सभी बच्चे अविवेकी होती हैं। वास्तव में, अधिकांश बच्चे माता-पिता से प्यार करते हैं और सेवानिवृत्ति के बाद के जीवन में उनकी बहुत तरह से देखभाल भी करते हैं और सेवानिवृत्ति के बाद के जीवन में उनकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल भी करते हैं। इसका संबंध उन मूल्यों से भी है, जो उन्हें सिखाया जाता है। यह वित्तीय और भविष्य की अपेक्षाओं के बारे में उनके साथ की गई खुली बातचीत से भी जुड़ा है। माता-पिता को मेरा सुझाव है कि वे कम उम्र से ही बच्चों के साथ अपनी वित्तीय स्थिति के बारे में खुलकर बात करें। कभी-कभी, हद से ज्यादा आगे बढ़ना नुकसानदेह हो सकता है।

कैसा बुढ़ापा चाहते हैं.....
बच्चों को जरूर बताएं

जिन माता-पिता के पास धन है, उन्हें स्पष्ट रूप से सोचना चाहिए कि वे क्या चाहते हैं। अगर आपके पास बहुत कुछ नहीं है, तो भी बच्चों से स्पष्ट चर्चा करें कि आप सेवानिवृत्ति के बाद कैसे रहना चाहते हैं और वे इसमें आपकी कैसे मदद कर सकते हैं। संयुक्त परिवारों के दिन लद गए। अगली पीढ़ी अपना भविष्य वैसे नहीं देख सकती, जैसा आप देखते हैं। ऐसा नहीं है कि सभी बच्चें बुरे हैं। यह सिर्फ इतना है कि सेवानिवृत्ति के बाद गरिमामय जीवन जीने का एकमात्र तरका है कि आपके पास कुछ न कुछ हो। विचार आपको डराने का नहीं है, बल्कि यह बताने का है कि बुढ़ापे में पैसे का होना बिल्कुल भी न होने की तुलना में कितना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

इन महत्त्वपूर्ण बातों पर जरूर करें विचार

– बच्चे अक्सर माता-पिता से मिलने वाले पैसे संभालने के लिए तैयार नहीं होते हैं। बच्चों को यह लॉटरी लगने या कौन बनेगा कड़ोरपति (केबीसी) जीतने के समान लगता है, इसलिए, संपत्ति बनाने के अपने संघर्षों व बलिदानों के बारे में बच्चों को जरूर बताएं।

भारतीयों के साथ दिक्कत यह है कि हम अपने आर्थिक जीवन से जुड़े अहम मुद्दों पर परिवार से उतनी बात नहीं करते, जितनी राजनीति, क्रिकेट या फिल्मों पर करते है।।

– आप अपने पैसे कैसे खर्च करना चाहते हैं, इस बारे में बच्चों से स्पष्ट बात करें। अपने हितों की रक्षा की जरूरत है ताकि आप विजयपत सिंघानिया या बागबान में अमिताभ बच्चन जैसे चित्रित चरित्र न बन जाएं।

सिंघानिया बड़ा उदाहाणा..... सीख सकते हैं सबक रेमंड्स की स्थापना करने वाले दिग्गज उद्योगपति विजयपत सिंघानिया उनके लिए बड़ा उदाहरण हैं, जो सेवानिवृति के बाद अपने जीवन की परवाह किए बिना गलत फैसले ले लेते हैं।

सीनियर सिंघानिया..... के बेटे गौतम सिंघानिया ने कम उम्र से ही पिता के साथ काम करना शुरू कर दिया था। कई अन्य कारोबारी परिवारो की तरह उन्हें भी सीनियर सिंघानिया के स्वाभाविक उत्तराधिकारी के रूप में देखा जाता था। गौतम हाई स्पीड कारों और लग्जरी जिंदगी जीने के अपने जुनून के लिए भी जाने जाते हैं।

– 2016 में सीनियर सिंघानिया ने बेटे को पूरी कंपनी सौंप दी। इसके बाद गौतम ने उन्हें घर से निकाल दिया। आज, उनके पास उसी पैसे तक पहुंच नहीं है, जो उन्होंने खुद बनाया था।

– सीनियर सिंघानिया आज मानते हैं कि बेटे को सब कुछ सौंप देना उनकी सबसे बड़ी गलती थी।

नारायण कृष्णमूर्ति, आर्थिक सलाहकार

जानिए... कितने का होना चाहिए जीवन और स्वास्थ्य बीमा

उद्देश... बीमारी, दुर्घटना एवं अन्य मुश्किल हालात के बीच आपको और परिवार को वित्तीय मदद देना

भविष्य में आपके साथ क्या होने वाला है, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। यह मुश्किल तब और बढ़ जाती है, जब आप ही परिवार में एकमात्र कमाने वाले व्यक्ति हैं एवं आपकी अनुपस्थिति में परिजनों को कौन संभालेगा। इन हालातों का सामना करने के लिए जरूरी है कि आप अपने पीछे परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के उपाय जरूर कर लें।

कठिन हालातों में परिवार को आर्थिक संकट से बचाने के लिए जीवन और स्वास्थ्य बीमा दो जरूरी साधन हैं। आज के दौर में इन दोनों पॉलिसियों का होना जरूरी है। इनका मकसद विभिन्न संकटों के बीच आपको और आपके परिवार को वित्तीय मदद देना है।

जीवन बीमा... आय का 10 गुना

बाजार में कई प्रकार की जीवन बीमा पॉलिसी मौजूद हैं। हाल ही में बैंक बाजार ने एक रिपोर्ट में बताया, अपनी जरूरतों के मुताबिक पर्याप्त जीवन बीमा कवरेज की गणना

चुनौतीभरा काम हो सकता है। लेकिन, आपके बाद परिवार की जरूरतों को देखते हुए यह जरूरी होता है।

– जीवन बीमा कवरेज सालाना होने वाली आपकी कमाई का कम-से-कम 10 गुना जरूर होना चाहिए।

– पॉलिसी खरीदते समय आपकी उम्र, वर्तमान कमाई, परिवार के वित्तीय लक्ष्य, आश्रितों की जरूरतें, महंगाई, मौजूदा संपत्ति और देनदारी का ध्यान रखना चाहिए।

– आपकी उम्र और जिम्मेदारियां जैसे-जैसे बढ़ती हैं, आपको अतिरिक्त कवरेज भी लेते रहना चाहिए।

स्वास्थ्य बीमा.... आपकी बचत को सुरक्षा

ऐसा वित्तीय उत्पाद, जो बीमारी या दुर्घटना जैसी किसी आपात स्थिति के बाद अचानक होने वाले मेडिकल खर्चों से आपकी बचत को सुरक्षा देता है। इसमें कई प्रकार के मेडिकल खर्च (अस्पताल में भर्ती होना, सर्जरी, जांच) शामिल होते हैं।

– स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी में पर्याप्त कवरेज का फैसला करते समय कुछ तथ्यों पर जरूरी विचार करना चाहिए। इनमें आपके परिवार की मेडिकल हिस्ट्री, पिछली बार अस्पताल में भर्ती होने पर खर्च, स्वास्थ्य महगांई आदि।

– आपको ऐसी पॉलिसी लेनी चाहिए, जिसमें कवरेज आपकी सालाना आय का कम-से-कम 50 फीसदी हो।

– अपने परिवार की बदलती जरूरतों के मुताबिक टॉप-अप के जरिये कवरेज बढ़वा सकते हैं।

कम उम्र में पॉलिसी खरीदना फायदेमंद

जीवन या स्वास्थ्य बीमा खरीदने का सही समय वह होता है, जब आपकी उम्र कम है और आप स्वस्थ हैं। इस अवधि में आपको कम प्रीमियम पर अधिक कवरेज मिल सकता है। ये दोनों ऐसे उत्पाद हैं, जो आपके वित्तीय पोर्टफोलियो के लिए महत्वपूर्ण हैं और कठिन समय में आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।

– स्वीटी मनोज जैन, निवेश सलाहकार

आलेख

बेटी बचाओ, परिवार बचाओः एक राष्ट्रीय कर्तव्य

डा. राधेश्याम बन्धु

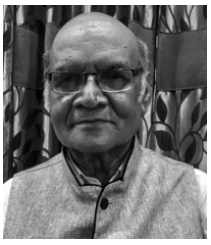

भारत एक महान देश है किन्तु वह तमाम अजूबों का भी देश है । यहां लोग मुर्दों की पूजा करते हैं और जिन्दों को उपेक्षा करते हैं । भारत में नारी की भी विचित्र स्थिति है। यहां पुरुष नारी को देवी की तरह पूजता भी है और अपने मतलब के लिए उसका दुरूपयोग भी करता है । अधिकाँश कवियों ने भी इन अवसरवादी पुरुषों के सुर में सुर मिलाया है और नारी के शोषण में उसको सहयोग दिया है। विख्यात कवि **जयशंकरप्रसाद** की ये काव्य पंक्तियां नारी को महिमा मण्डित तो करती हैं और उसे ऋद्धा का प्रतीक भी बताती हैं किन्तु उसकी रक्षा का कोई उपाय नहीं सुझाती-

नारी तुम केवल ऋद्धा हो, विश्वास रजत-नग पगतल में

पीयूष-श्रोत सी बहा करों, जीवन के सुन्दर समतल में!

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि आदमी जब तक आदमी रहता है तब तक नारी ऋद्धा और आस्था की प्रतीक ही होती है किन्तु जब वह इंसान से हैवान बन जाता है तो नारी उसके लिए वीर - भोग्या वसुन्धरा हो जाती है। उसे वह चाहे जैसे इस्तेमाल करे, उसको बेचे या सौदा करे या उसके साथ चाहे जो मनमानी करे, इसके लिए वह आजाद है, कोई कुछ नहीं कर सकता। अदालतें भी उसकी दरिंदगी को नहीं रोक पातीं। इस बिडम्बना के भयावह उदाहरण हम रोज ही समाज में और अखबार में देखते हैं। क्या हम 16 दिसम्बर 2013 के दर्दनाक निर्भया काण्ड को कभी भुला सकते हैं? कन्याओं की भ्रूण हत्यायें रोज हो रही हैं, क्या कानून उनपर अंकुश लगा पा रहा है? दहेज के नाम पर नवबधुएं रोज जलाई जा रहीं हैं, प्रताड़ित की जा रहीं हैं, आत्महत्या के लिए मजबूर की जा रहीं हैं। फिर भी क्या कोई सरकार, थाना, पुलिस, अदालतें इन दहेज -

लोभियों द्वारा की जा रही बेकसूर बहुओं की हत्याओं पर अंकुश लगा पा रही हैं? हम देखते हैं, इस तरह के क्रूर सवाल बार-बार हमारे सामने आकर खड़े हो जाते हैं और हम असहाय दर्शक बने रहने के अलावा कुछ नहीं कर पाते। आखिर इन सामाजिक अपराधों के लिए कौन जिम्मेदार है? क्या कभी हमने इसके बारे में जानने की कोशिश कीं है?

आये दिन हम नारी सशक्तिकरण और नारी विमर्श की बात भी सुनते हैं किन्तु इस सामन्ती समाज की मानसिकता में कभी कोई फर्क देखने को नहीं मिलता? आज ज्यों-ज्यों यौन-शोषण, रेप, छेड़-छाड़ की घटनायें बढ़ रहीं हैं, कामकाजी महिलाओं, छात्राओं, गृहणियों को दफतर, स्कूल, या बाजार पुरुषवादी समाज को समझना मुश्किल हो गया है। इससे समाज के अभिभावकों, माता, पिता नागरिकों का चिन्तित होना स्वाभाविक है। जब तक छात्रायें, कामकाजी महिलायें दफतर से घर वापस नहीं आ जातीं, घर के लोग बेचौन बने रहते हैं। इस तरह की अप्रिय घटनायें किसी के साथ हो सकती हैं। इसलिए इस समस्या का समाधान सबको मिलकर तलाशने की जरूरत है और जो भी सम्भावित उपाय और नियम हैं उनपर हमें सख्ती से अमल करने की जरूरत है। किन्तु आज के बहुत से आधुनिक फैशन के पक्षधर माता-पिता समाज की सारी मर्यादा, अनुशासन, शरम, अदब को ताक पर रखकर अपने बच्चों को नये अर्धनग्न फैशन के लिबास में स्कूल जाने की छूट देते रहते हैं और उसके दुष्परिणाम पर वे कभी ध्यान नहीं देते। कालेज में लड़कियां प्रायः जीन्स, टाप्स में जाती हैं और जिस्म की नुमाइश में एक-दूसरे को मात देती हैं। ऐसे में मनचलों द्वारा छेड़ने से इन आधुनिक युवतियों को कोई कब तक बचा सकता है?

दिल्ली के एक इन्जिनियरिंग कालेज के एक समझदार प्रिंसिपल ने अर्धनग्न फैशन पर अंकुश लगाने के लिए एक ड्रेस-कोड का आदेश निकाला है कि कालेज में कोई लड़की टाप-जीन्स पहन कर नहीं आयेगी। इस आदेश का छात्र -छात्राओं ने बड़ा विरोध् किया है और हड़ताल की धमकी भी दी है। किन्तु कालेज का मैनेजमेन्ट इस धमकी के बाद भी झुका नहीं है। प्रिंसिपल ने इस धमकी को ध्यान में रखकर एक और आदेश निकाला है कि जो छात्र या छात्रा इस ड्रेसकोड का विरोध करेंगे, उनको कालेज से निष्काशित कर दिया जायेगा। मानवाधिकार समिति की एक महिला ने भी छात्राओं का साथ देते हुए कहा ''यह ड्रेस कोड का आदेश छात्राओं की आजादी का हनन है इसलिए इस आदेश को तुरन्त वापस ले लेना चाहिए।''

इस मुद्दे पर कालेज के मैनेजमेन्ट ने प्रिंसिपल का पूरा साथ दिया है। इसलिए धीरे धीरे छात्राओं के विरोध् का घ्सारा शोर-गुल शान्त हो गया और वे अब सामान्य भेष में आने लगीं हैं। चाहे जो समाज हो यदि वे अपने बच्चों को मर्यादित जीवन का संस्कार और अनुशासन नहीं सिखा सकते तो उस समाज को दुर्घटनाग्रस्त और अपमानित होने से कोई नहीं बचा सकता। आज यौन-शोषण की जो घटनायें दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं उसके लिए आधुनिकतावादी समाज और अभिभावक स्वयं जिम्मेदार हैं। इसलिए आधुनिकता के नशे में बहने वाले अभिभावकों से एक विनम्र अनुरोध् यह है कि यदि हम अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित बनाना चाहते हैं तो हमें समय रहते स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए एक सामान्य आचारसंहिता तैयार करनी चाहिए और उसपर सख्ती से अमल करने की सहमति बनानी चाहिए। इस सम्बन्ध में हमारे कुछ जरूरी सुझाव हैं जिस पर हम सबको मिलकर विचार करने और समाधान खोजने की जरूरत है-

1. स्कूल या कालेज जाने वाली छात्राओं के अभिभावकों को इस बात पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है कि उनकी बच्चियां स्कूल जाते समय उत्तेजक टाप-जीन्स के बजाय सामान्य सलवार-फ्राक का ड्रेस ही पहनकर जांयें। इसपर कालेज के प्रिंसिपल को भी सख्ती से अमल करने में सहयोग देना चाहिये।

2. आज छात्रायें मोबाइल पर अपना बड़ा कीमती समय बर्बाद करती रहती हैं और दोस्तों से घन्टों बात करती रहती हैं। इस कारण वे गलत दोस्तों की कुसंगति में भी पड़ जाती हैं और अपना कैरियर, इज्जत, जीवन भी दांव पर लगा देती हैं। इसलिए कालेज पीरियड में छात्राओं के पास मोबाइल नहीं रहना चाहिए। यदि कोई छात्रा मोबाइल ले जाती है तो उसे कालेज में जमा करा लेना चाहिए और छुट्टी के बाद वापस देना चाहिए।

3. अभिभावक को इस बात का भी हिसाब रखना चाहिए कि छुट्टी के बाद यदि छात्रा घर लेट आती है तो उससे पूछा जाना चाहिए कि वह इतनी देर बाहर कहां रही? स्कूल के बाद यदि वह कहीं जाती है तो माता-पिता को पता होना चाहिए कि वह कहां और किस काम से जाती है?

4. छात्राओं को अकेले सिनेमा देखने भी नहीं जाने देना चाहिए।

5. यात्रा में भी छात्राओं को जहां तक हो सके अकेले नहीं जाने देना चाहिए।

6. छात्रों और छात्राओं के कालेज में पार्टी के नाम पर चलने वाली दारू और नशाखोरी की पार्टियों से भी बेटियों को बचाना चाहिए। आजकल लड़कियां कालेज के बिगड़े लड़कों के संगत में पड़कर स्मैक का भी आधुनिक शौक पाल लेती हैं और अपना जीवन बर्बाद कर लेती हैं।

7, बेटी और बेटों में माता-पिता को भेदभाव नहीं करना चाहिए। बेटों को ज्यादा महत्व देने से बेटियां अपने को असुरक्षित महसूस करने लगती हैं और अपनी सुरक्षा का साध्यम घर से बाहर ढूढ़ने लगती हैं और इसप्रकार वे गलत दोस्तों के चंगुल में फंस जाती हैं।

8. कुछ अति आधुनिक माता-पिता अपनी संकीर्ण मानसिकता के कारण और दहेज के अभिशाप से बचने के लिए अपने गर्भ में आयी कन्या की अबार्शन कराकर भ्रूण हत्या ही कर देते हैं। गर्भ में कन्या की हत्या भी महापाप है फिर भी कुछ संवेदनहीन व्यक्ति यह जघन्य पाप करने में जरा भी संकोच नहीं करते। इस भ्रूण हत्या ने भी सभ्य समाज के चेहरे पर कालिख पोता है और बेटी का जीवन असुरक्षित कर दिया है।

9. सच कहें तो बेटी और बेटों में कोई फर्क नहीं होता। बेटियां विवाह के बाद ससुराल चली जाती हैं फिर भी वे माता-पिता की चिन्ता रखती हैं किन्तु बेटे माता-पिता के साथ रहते हैं फिर भी वे उनका ध्यान नहीं रख पाते। इसलिए बेटी की कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।।

10. जहां संस्कार, तहजीब, अदब, अनुशासन, मर्यादा, ईमानदारी के जीवन-मूल्य हैं वहीं सुरक्षा है, प्यार है, इज्जत है। रिश्तों की सफलता के लिए ये जीवन-मूल्य बहुत जरूरी हैं किन्तु आज के सभ्य कहे जाने नाले '**एलीट क्लास**' में ये मूल्य गायब हो चुके हैं। इसलिए वे बाहर से बहुत चुस्त, दुरूस्त, ताकतवर दिखते हैं किन्तु वे भीतर से खोखले हो चुके हैं। यदि आंधी आने के पहले आप अपनी बगिया के पेड़ों को मजबूती नहीं दे सके तो आंधी में उनके उखड़ जाने का खतरा बना रहता है। आंधी में वही पेड़ टिके रहते हैं जिनकी जडें मजबूत होती हैं।

इसप्रकार हम देखते हैं कि यदि हम समाज को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि बेटियां भी सुरक्षित हों। क्योंकि सच तो यह है कि नारी आधी दुनिया की मालिक है किन्तु वह पूरी दुनिया की रक्षा की चिन्ता करती है। इसलिए नारी असुरक्षित है तो दुनिया कैसे सुरक्षित रह सकती है? इसलिए 'बेटियों को बचाओ-बेटियों को पढ़ाओ' यह कथन जरूरी ही नहीं बल्कि यह समय की मांग भी है। जाहिर है इस लक्ष्य को पाने के लिए यह जरूरी है कि हम अपने जीवन में उपरोक्त '10 (दस) कमान्डेन्टस' अर्थात 10 सूत्रीय जीवन-मूल्यों और नियमों पर विशेष ध्यान दें और उनका सख्ती से पालन करें। यदि हमें कुछ पाना है तो कुछ खोना पड़ता है अर्थात् कुछ बनने के लिए कुछ आदतें छोड़नी भी पड़ती हैं। एक अच्छे विद्यार्थी को निम्न श्लोक को कभी नहीं भूलना चाहिए-

'सुखार्थिनः कुतो विद्या, विद्यार्थिनः कुतो सुखम्?
सुखार्थिनः त्यजेत विद्या, विद्यार्थिनः त्यजेत सुखम्।'

भारत अपने आदर्शों के कारण ही महान माना जाता है किन्तु आज भारतीय अपनी पहचान खोते जा रहे हैं और पाश्चात्य के अन्ध-अनुकरण के कारण एक कृत्रिम जीवन जीने के आदी होते जा रहे हैं। कान्वेन्ट स्कूल की शिक्षा के प्रभाव में आज के विद्यार्थी जीवित माता को 'ममी'(मिस्र की ममी) और जीवित पिता को 'डेड' कहते हैं। फिर भी इस थोथी नकल पर समाज को बड़ा गर्व है। इन कान्वेन्ट स्कूल के बच्चों को **शेक्सपियर** के बारे में तो पता है किन्तु उन्हें अपने **राष्ट्र-निर्माताओं विवेकानन्द, कबीर, तुलसी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई** को नहीं जानते। यह कितने आश्चर्य की बात है। हमें इस मानसिक दासता से मुक्त होकर एक स्वस्थ जीवन जीने की आदत डालनी चाहिए।

पता-बी-3/163, यमुना विहार, दिल्ली-110053-9868444666

बदलते भारत की तकदीर हैं आज की नारियां

भारतीय इतिहास साक्षी है मातृशक्तियों के योगदान का। भारत का कोई भी युग, काल, खण्ड ऐसा नहीं रहा है, जब नारियों का योगदान ना रहा हो। परिस्थितियां चाहे जैसी भी रही हों, हर युग में अपनी जिम्मेदारियां को निभाते हुए, अतिरिक्त भूमिकाओं को भी समय की मांग के अनुसार अपना कर्तव्य समक्ष निभाया। आदिकाल से लेकर आज तक यही भुमिकाएं हम नारियां अपने घर अपने समाज, अपने राज्य, अपने राष्ट्र के लिए निभाती आ रही हैं। भारत की ये विशेषताएं रहीं हैं, जहां हमेशा से नारी को देवी एंव शक्ति के रूप में पूजा जाता है। किसी भी कार्य को निभाने की क्षमता एवं कुशलता को रखती हैं आधीशक्ति।

समय में बहुत बड़ा बदलाव आया है। पिछले कुछ वर्षों में, बदलते समय के साथ भारत की माताएं, बहनें बेटियों ने भी अपने आप को बदलना शुरू कर दिया है। बदलाव अच्छी बात है, पर उसकी दिशा धारा सही चाहिये, जो कि परिवार के हित में हो, समाज के हित में हो, राष्ट्र के हित में हो, ना की फिल्मी, रुपहले पर्दों पर दिखलाए जाने वाले फूहड़ता और अश्लीलता फैलाने वाली नट-नर्तिकीयों की अनुरूप। ऐसे लोगों की अपनी एक अलग दुनिया होती है, जिसमें इन्हें सिवाय पैसे के अतिरिक्त कुछ भी सही और गलत नहीं लगता। जहां से इन्हें पैसे मिलते हैं, ये उसी के रंग में रंगने को बेताब हो जाते हैं।

खैर। भारतीय नारियों का वर्चस्व बढ़ता चला जा रहा है एक अलग दिशा में, जहां आज पूरा विश्व इनके योगदान की सराहना कर रहा है। सर्वोच्च पद पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का होना, भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री के तौर पर श्रीमती इंदिरा गांधी का होना, भारतीय अर्थव्यवस्था की कमान सम्भालती श्रीमती निर्मला सीताराम समेत अनेकों राजनीतिक महिलाएं औरों के लिए पथप्रदर्शक बनीं हैं। थल से लेकर नभ तक, कोई ऐसी जगह अछूती नहीं रही है जहां नारियों की अपनी पहचान ना बनी हो। कुछ वर्षों से भारतीय नारियों के योगदान को बढ़ाया दिया और अनेकों कुरीतियों से छुटकारा दिलवाया है वर्तमान मोदी सरकार ने। फिर चाहे कानून में बदलाव की प्रक्रिया हो या फिर तीन तलाक और हलाला जैसी घिनोनी प्रथा से मुक्त करवाना। वर्तमान समय में जरूरत है भारतीय संस्कृति को बचाए रखने के लिए - सही शिक्षा, दीक्षा, पहनावा, रहन-सहन और नशामुक्त भारत। उम्मीद है आने वाले वर्ष में इस दिशा में प्रयास और मजबूती के साथ आगे बढ़ेंगे।

पवन जायसवाल, ज्योतिषीचार्या एवं समाजसेविका।

भागो मत दुनिया को बदलो

जीवन केवल
गीत नहीं है, गीता की है प्रत्याशा,
पग-पग जहां
महाभारत है, लिखो पसीने की भाषा।

हर आंसू को जंग न्याय की
खुद ही लड़नी पड़ती,
हर झुग्गी की 'कुन्ती' भी अब
स्वयं भाग्य है लिखती,
लड़ता है संकल्प
युद्ध में, गांडिव की झूठी आशा।

श्भागो मत दुनियां को बदलो'
सूरज यही सिखाता,
हर बेटा है भगतसिंह जब
खुद मशाल बन जाता,
सदा सत्य का
पार्थ जीतता, यही युद्ध की परिभाषा।

अखबारों में रोज क्रान्ति की
खबर खोजने वालो,
पर पड़ोस की चीखें सुनकर
छिपकर सोने वालो.
हर मानव खुद
इन्क्लाब है, हर झुग्गी की अभिलाषा,

राधेश्याम बन्धु

समझौते की छतरी

समझौते की
छतरी कब तक साथ निभायेगी?
कड़ी धूप में
क्या मुन्ना को घर तक लायेगी?

रोज जिन्दगी पैदल चलकर
दफ़्तर तक जाती,
पर छोटी सी वेतन तन को
खुशी न दे पाती।
क्या शहरी
सूनी टोंटी कुछ प्यास बुझायेगी?

धीरज की नित अगरु धूप है
मन को समझाती,
पर सपनों के द्वार प्यार की
चिठठी कब आती?
क्या संसद की
तकरीरें कुछ दर्द घटायेंगी?

जो खुशियों के लिए रूप की
हाटों में लुटते,
वही दर्द की दवा हेतु
मयखानों में फिरते।
क्या रिश्तों की
गजल जंग को प्यार सिखायेगी?

डॉ. राधेश्याम बन्धु

शब्द

शब्द निकल जाते हैं
शब्द छूट जाते हैं
ना मनाओ तो रूठ जाते हैं।

शब्द बेध जाते हैं
शब्द पीर दे जाते हैं
दिल पर लगें तो चीर जाते हैं।

शब्द तोड़ जाते हैं
शब्द जोड़ जाते हैं
देख सही समय दिशा मोड़ जाते है।

शब्द श्वेत होते हैं
शब्द श्याम होते हैं
मन में बस लो तो दिलों के राम होते हैं ।

शब्द सजन होते हैं
शब्द मनन होते हैं
गा लो तो भजन होते हैं।

शब्द तकरारी होते हैं
शब्द सरकारी होते हैं
तौलो तो असरकारी होते हैं।

शब्द यथार्थ होते हैं
शब्द निस्वार्थ होते हैं
लौ लगा लो तो परमार्थ होते हैं।

शब्द गीत होते हैं
शब्द मीत होते हैं
बजे धुन तो संगीत होते हैं।

शब्द प्रहार करते हैं
शब्द मनुहार करते हैं
अमर्यादित हों तो संहार करते हैं।

शब्द का न आदि है
शब्द का न अंत है
जिसके मुख से बरसे ज्ञान वह संत है।

शब्द से विरक्ति होती है
शब्द में भक्ति होती है
इसमें असीम शक्ति होती है।

शब्द से विष घुल जाए
शब्द ही अमृत बरसाए
जो ले साध इसे वह शिव हो जाए।

शब्द निराकार है
शब्द संस्कार है
यह तो ब्रह्म का अवतार है।

अवधेन्द्र कुमार

कहानी

जूता पालिस करने वाला बना कलेक्टर

रोज की तरह लंच करके हम लोग आफिस के पीछे भीकाएजी कामा प्लेस का भ्रमण करने निकले थे। जाड़ों में गुनगुनी धूप का मजा की अलग होता है। थोड़ी सी धूप लगते ही शरीर अंगड़ाई लेने लगता है। हम लोग खरामा-खरामा चले जा रहे थे कि 12 – 13 साल के एक पतले-दुबले लड़के ने पीछे से आ कर कहा ''साहब, जूते पालिस करवा लो, अच्छे से चमका दूंगा।'' उसकी बातों पर ध्या न दिए बिना ही मैंने ''ना'' में अपना सिर हिला दिया। वह फिर भी मेरे पीछे-पीछे चला आ रहा था। ''साहब, करवा लो ना, मुझे भूख लगी है, कुछ खा लूंगा'' वह फिर गिडगिड़ाया। अबकी बार मैंने सख्ती से मना करते हुए कहा कि ''नहीं'', मुझे पालिस नहीं करवानी, और अगर तुझे भूख लगी है तो ये ले दस रुपये और कुछ खा ले। यह कह कर मैं अपने पर्स से दस रुपये निकालने लगा। वह निराश हो गया था परंतु बड़ी दृढ़ता से बोला ''साहब मुझे भीख नहीं चाहिए।'' यह कह कर वह आगे बढ़ गया। मैं भी अन्य मनस्क मन से चला जा रहा था। मेरा साथी बैंक के काम के लघ्एि बैंक चला गया था और अब मैं अकेले ही चल रहा था।

कुछ दूर चलने के बाद मैंने देखा कि वही लड़का पास ही पत्थसर की बेंच पर गुमशुम सा बैठा हुआ था। पता नहीं क्यूं मुझे उस पर दया आ गई। मैंने भी बेंच पर बैठते हुए उससे कहा ''चल अच्छा कर ही दे।'' उसकी आंखों में चमक सी आ गई। बड़ी फुर्ती से उसने अपने कपड़े के थैले से एक जोड़ी पुरानी स्लीपपर निकाल कर मेरे पैरों के आगे रख दी। मैंने भी अपने जूते उतार कर उसे दे दिए। अब वह बड़ी तन्मगयता से जूते पालिस करने में लग गया। मुझे लगा कि किसी काम में सफलता पाने के लिए उसमें रुचि लेना सबसे जरुरी है। बिना रुचि के किया गया काम,काम से अधिक बेगार सा ही साबित होता है। कुछ मिनटों में ही जूते चमक उठे थे। दस का नोट पा कर उसके चेहरे पर भी चमक आ गई थी।

बातों ही बातों में मैंने उससे पूछा कि तू कहां का रहने वाला है और यहां कैसे आ गया है। उसने बताया कि वह राजस्थान के बीकानेर जिले के एक गांव का रहने वाला है और घर से भाग कर यहां आ गया है। उसकी माँ तो रही नहीं और सौतेली माँ ने पढ़ाई छुड़ा कर काम पर लगा दिया। उस पर से सुबह-शाम उसके ताने सुन-सुन कर एक दिन मैंने घर छोड़ दिया और गांव के पास के स्टेडशन पर आने वाले एक गाड़ी में बैठ गया। बस, उसने मुझे यहां पहुंचा दिया। यहां स्टेगशन के बाहर भूखा-प्यावसा घूम रहा था जब जूता पालिस करने वाले लड़कों से मुलाकात हो गई। उन्होंने मुझे अपने साथ रखा और खाना खिलाया। अगले दिन उन लोगों ने मुझे भी दो पुराने ब्रश दे कर जूता पालिस करने के काम में लगा दिया। अब उन्हीं। लोगों के साथ रहता हूं और रात में उनके साथ ही फुटपाथ पर सो जाता हूं। मैं भी राजस्था।न का था और जब मैंने उससे राजस्थाानी में पूछा कि तूने अपना नाम तो बताया नहीं तो वह चहक कर राजस्थानी में ही बोला ''जी, मेरा नाम रघुनंदन मीणा है, पर सब मुझे 'रघु' के नाम से ही बुलाते हैं।''

किस्मत कहें, नसीब कहें, वक्त -वक्तस की बात कहें आदमी का जीवन चक्र उसे कहीं से कहीं पहुंचा देता है। मैं सोच रहा था कि पढ़ने-लिखने की उम्र में नसीब ने इसके हाथों में कलम की जगह जूते पालिस करने वाले ब्रश पकड़ा दिए हैं। पता नहीं क्यूंम मेरे मन में उसके लिए एक लगाव सा पैदा हो गया। मैंने उससे पूछा ''क्योंप मेरे घर चलेगा, घर पर मैं अकेला ही रहता हूं, घर का छोटा-मोटा काम कर देना और मेरे साथ रहना।'' वह कुछ सोचने लगा। मैंने कहा ''सोच ले, अगर चलना हो तो शाम छः बजे यहीं मिलना।'' यह कह कर मैं आफिस की ओर निकल गया।

शाम को जब मैं आफिस से निकला तब तक दोपहर की यह घटना भी मेरे जेहन से निकल गई थी। जैसे ही मैं पार्किंग से स्कूटिर स्टा र्ट कर आगे बढ़ा ही था कि ''बाबू जी'' की एक आवाज ने मेरा ध्यानि अपनी ओर खींच लिया। अरे यह तो रघु है, और मैंने स्कूआटर में ब्रेक लगाए तो वह दौड़ कर पास आ गया और बोला ''साहब, मैं आपके साथ चलूं?'' कुछ सेकेंड के लिए तो मैं भी असमंजस में पड़ गया। फिर कुछ सोच कर बोला ''चल बैठ'' और उसके बैठते ही मैं चल पड़ा। रास्तें में ही मैंने

उसे समझा दिया कि मोहल्ले। में अगर कोई पूछे तो कहना कि मैं गांव से आया हूं और आपका छोटा भाई हूं।जूता पालिस करने वाले थैले के अलावा उसके पास और कुछ भी सामान नहीं था। उस थैले को उसने लपेट कर अपने बगल में दबा लिया था।

मैंने एक घर की छत पर बना एक कमरा और किचेन किराए पर ले रखा था। कमरे के बाहर बगल में ही एक टॉयलेट था। कमरे में मकान मालिक द्वारा उपलब्धर कराया गया एक सिंगल बेड और प्लोस्टिक की दो कुर्सियां मात्र थीं। कपड़े टांगने के लिए दीवार में एक लकड़ी की आलमिरा भी थी। एक कोने में मैंने एक छोटा सा लकड़ी का मंदिर टांग रखा था जिसमें मेरे आराध्यं बालाजी अर्थात बजरंगबली की छोटी सी मूर्ति विराजमान थी।जूते उतार कर मैंने कमरे में प्रवेश किया और उससे बोला कि वह भी अंदर आ जाए। सकुचाते हुए वह भी अंदर आ गया और टुकुर-टुकुर चारो ओर देखने लगा। मंदिर को देख कर उसने हाथ जोड़ कर आंखें बंद कर लीं और एक कोने में बैठ गया। मैं कपड़े बदल कर नहाने चला गया।

पिछले साल सातवीं की परीक्षा के बाद मेरा भतीजा मेरे पास आया था और मैंने उसे कई नए कपड़े दिलाए थे। जाते समय वह अपने कुछ पुराने कपड़े और किताबें यहीं छोड़ गया था। उन कपड़ों और एक नया साबुन रघु को देते हुए मैंने उससे कहा कि वह भी नहा ले। नहा धो कर और उन कपड़ों में वह ''राजा बाबू'' लग रहा था। अब तक मैंने दो कप चाय बना ली थी। मैंने एक कप चाय और ब्रेड के कुछ स्ला इस उसे दी और मैं भी चाय पीने लगा। वह चुपचाप चाय पीता जा रहा था और उसकी आंखों से आंसू टपक रहे थे। मैंने पूछा ''क्यों क्याह हो गया, तू रो क्योंच रहा है।'' वह अपनी बाहों से आंसू पोंछता रहा पर उसके मुंह से एक शब्दल भी नहीं निकला। चाय पी कर उसने हम दोनों का कप उठा कर बाहर धोने के लिए ले गया। रात को मैंने रोटी-सब्जी् बनाई और हम दोनों ने मिलकर खाना खाया। खाना खा कर वह जूते वाले ब्रश के थैले को सिराहने रख कर नीचे बिछी चटाई पर सो गया। मैं भी एक किताब पढ़ते-पढ़ते सो गया।

सुबह साढ़े सात बजे जब मेरी नींट खुली तो मैंने देखा कि रघु गायब है। मैंने मन ही मन सोचा ''लगता है लड़का अपना काम कर गया।'' बाहर खटर-पटर की आवाज सुन कर जब मैं बाहर निकला तो देखता क्या हूं कि वह छत पर पौधों को पानी दे रहा था। मन की आशंका मिट गई। मैंने पूछा ''क्यों जल्दीर उठ गया था क्यात।''"नहीं तो, आज तो महीनों बाद मैं इतनी गहरी नींद सोया था, पर सुबह मेरी नींद जल्दीअ ही खुल गई। मैंने छत पर झाड़ू मार कर नहा भी लिया है। मैंने सोचा पौधे सूख रहे हैं तो इन्हें पानी दे दूं।'' एक बार में ही उसने मुझे पूरी कहानी बता दी। मैं भी बाथरूम में घुस गया।

मैं नहा कर निकला ही था कि रघु बोला ''भइया जी, चाय बनाऊँ क्याद, मुझे चाय बनानी आती है।'' मैं साहब जी से कब भइया जी हो गया था, मुझे पता ही नहीं लगा। मैंन कहा ''ठीक है बना ले।'' थोड़ी देर में वह दो कप चाय बना लाया। चाय पीते ही मेरा मुंह सिकुड़ गया,''यह क्या इतनी मीठी चाय!" मेरे चेहरे की भावभंगिमा देख वह सिहर उठा। मैंने अपने को संयत करते हुए कहा ''चलो कोई बात नहीं, चीनी कम डाला करो, मैं बहुत कम मीठी चाय पीता हूं।'' उसने भी सहमति में सिर हिला दिया। ऑफिस में लंच के लिए मैं अपना टिफिन साथ ले जाता था। जो टिफिन के लिए बनाता उसी से ब्रेकफास्टं भी हो जाता था। मैं फटाफट सब्जील काटने लगा तो रघु बोला ''भइया जी, लाइए सब्जीक मैं काट देता हूं।'' और उसने मेरे हाथों से सब्जी की प्लेठट ले ली। वह सब्जीन काटने लगा तो मैंने भी आटा गूंध लिया। थोड़ी देर में रोटी सब्जी तैयार हो गई थी। मैंने अपना टिफिन लगा लिया और खाने के लिए दो प्लोट मे रोटी सब्जीद निकाल ली। एक प्लैट उसकी ओर खिसकाते हुए मैं बोला ''ये ले तू भी खा ले।'' पहला निवाला मुंह डालते हुए ही उसकी आंखों से आंसू निकलने लगे, वह बोला ''आज आपने सुबह खाने को दिया है, वरना तो कई बार पूरा दिन खाली पेट ही गुजारा करना पड़ता था।''

मैं आफिस के लिए तैयार हो कर कमरे से बाहर निकला तो देखा कि मेरे जूते चमक रहे हैं। पास खड़ा रघु सिर नीचा कर मुस्कुएरा रहा था। मैंने रघु को हिदायत दी की वह घर से बाहर नहीं जाएगा और दोपहर में किचेन में रखा हुआ खाना खा लेगा। इतना कह कर मैं आफिस के लिए निकल गया। शाम को आफिस से लौटते हुए आलू, प्या।ज और कुछ सब्जियां खरीद कर जब मैं घर पहुंचा तो

वह शायद मेरा ही इंतजार करते हुए छत से नीचे ताक रहा था। आज तो कमरा चमक रहा था। रघु ने कमरे की अच्छेप से साफ-सफाई कर सभी समान को ठीक से रख दिया था। बिखरे हुए अखबार, मैंगजीन और किताबें वगैरह करीन से खुली वाली आलमारी में रख दी थीं। किचेन के बर्तन भी धुले हुए थे। अभी उसकी आंखों में चमक थी। मैं कपड़े बदल कर हाथ-मुंह धोने बाथरूम में घुस गया। मैं बाथरूम से निकला ही था कि वह बोला ''भइया जी, चाय।''''अरे वाह, अभी तो तूने बड़ी अच्छी चाय बनाई है, मीठी भी कम है।'' मेरी तारीफ से उसके चेहरे पर खुशी छा गई। सच, सफलता से मिलने वाली खुशी ही किसी व्य क्ति का सबसे बड़ा इनाम होती है।

हफ्ते भर में ही उसने पूरे घर की जिम्मेबदारी संभाल ली थी। अब तो वह खाना भी बनाने लगा था। मैं उसे पैसे दे जाता तो वह दूध और सब्जीय भी ले आता था। उस दिन जब मैं शाम को घर पहुंचा तो गेट पर ही मकान मालकिन खड़ी मिलीं और बोलीं ''तुम्हाारा छोटा भाई तो बड़ा होशियार है।'' मैंने पूछा ''क्योंफ क्यो किया उसने,कुछ गड़बड़ किया क्यां?'' वह बोलीं ''अरे नहीं, आज सब्जी' वाला मेरे से पन्द्रंह रुपये ज्योदा ले रहा था तभी ऊपर से ही इसने सब्जी् के दाम जोड़ लिए और बोला कि आंटी यह आपसे पन्द्रबह रुपये ज्याादा ले रहा है और जब मैंने सब्जीन वाले से दुबारा दाम जुड़वाए तो वह पन्द्र ह रुपये कम निकले।'' मैं भी रघु की काबलियत पर हैरान था।

दिन बीतते जा रहे थे। मेरे साथ-साथ उसकी भी दिनचर्या लगभग निर्धारित हो गई थी। मैं भी काफी कुछ उस पर निर्भर सा हो गया था। उस दिन रविवार था और मैं घर पर ही था। दोपहर को खाना खा कर मैं लेटे-लेटे रघु से बात करने लगा कि रोज जब मैं आफिस चला जाता हूं तो वह क्याप करता है। वह बोला ''भइया जी, घर का काम करने के बाद मैं अखबार पढ़ता हूं। यह अखबार राजस्थाकन का है तो इसमें बीकानेर की खबरें भी रहती हैं। मुझे पढ़ने का बहुत शौक है।'' मुझे लगा यह कुछ ज्याथदा ही हांक रहा है। मैंने कहा ''अच्छा , चल अखबार पढ़ कर सुना।'' वह खुश हो गया और स्थाखनीय खबरों वाला पेज खोल कर पढ़ने लगा। वह एक के बाद दूसरी खबर पढ़ता जा रहा था। खबरें सुनते-सुनते मुझे कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला। शाम साढ़े पांच बजे जब अचानक मेरी नींद खुली तो मैंने देखा कि रघु भी वहीं चटाई पर लुढ़का पड़ा है। पेट भरा हो तो आदमी को नींद भी अच्छीर आती है, वरना खाली पेट आदमी पेट पकड़ कर सोने पर मजबूर होता है। रघु भी चौंक कर उठ गया था।

चाय पीते हुए मैंने रघु से कहा ''तू अखबार तो बहुत अच्छान पढ़ लेता है। ये बता कि तू अपने गांव में किस कक्षा में पढ़ता था।''''भइया जी मैं सातवीं में पढ़ता था, पर जब घर छोड़ कर यहां चला आया तो सब कुछ छूट गया। शायद मेरी किस्म त की खराब है, वरना मैं पढ़ना तो बहुत चाहता था।'' मैंने कहा ''तो फिर तू वापस अपने गांव क्यूंम नहीं चला जाता।'' उसने जैसे अपने मन में कुछ ठान रखा था। वह बोला ''कुछ भी हो जाए मैं तब तक घर वापस नहीं जाऊंगा जब तक कुछ बन ना जाऊं।''पच्छिले साल जब मेरा भतीजा आया था तब वह अपनी सातवीं की किताबें यहीं छोड़ गया था। मैंने आलमारी से वह किताबें और एक-दो पुरानी कापियां निकाल कर रघु को देते हुए कहा कि कल से जब मैं आफिस जाया करुंगा तो वह दिन में इनसे पढ़ाई करेगा। उसको जैसे रास्तो मिल गया। उसकी खुशी बता रही थी कि जैसे उसके मन की मुराद मिल गई हो। छोटी-छोटी चीजों में ही खुशी मिलती है, और हम हैं कि खुशी ढूंढ़ते-ढूंढ़ते खुद को ही खो बैठते हैं।

अगले दिन सुबह मैं आफिस जाने के लिए तैयार हो कर निकलने ही वाला था कि रघु अपनी किताबें ले कर मेरे सामने खड़ा हो गया और बोला ''भइया जी, मुझे होम वर्क दे दीजिए। मैं दिन में करके आपको शाम को दिखाऊंगा।'' मैंने सोचा चलो इसी बहाने वह बिजी रहेगा। मैंने उसकी किताबों में कुछ प्रश्नोंश पर निशान लगा दिए और आफिस के लिए निकल गया। शाम को जब मैं रोज से थोड़ा जल्दीग घर पहुंच गया तो पता लगा कि जनाब नदारत हैं और कमरे में बाहर से ताला लगा हुआ है। मेरा गुस्साम सातवें आसमान पर पहुंच गया कि आने दो आज मैं इसकी खबर लेता हूं। मैं छत पर टहलने लगा। थोड़ी देर में मैंने देखा कि रघु साइकिल चलाता हुआ आ रहा है। साथ में उसने एक थैला भी टांग रखा है। नीचे साइकिल रख कर उसने मकान मालकिन के घर की घंटी बजाई

और थैला उन्हें थमा कर जब वह ऊपर पहुंचा तो मुझे आया देख कर चौंक गया। ''क्योंह कहां गया था?यह साइकिल तुझे कहां से मिली? कुछ पढ़ाई भी की या बस यूं ही दिन भर मस्ती' कर रहे थे?'' मेरे गुस्सेर से वह सिहर गया था। मेरी डांट को चुपचाप सुनते हुए उसने जल्दीा से कमरे का दरवाजा खोला। सबसे पहले तो उसने बिना कुछ बोले कापियां निकाल कर मेरे बगल में रख दीं। मैंने कापियों को एक ओर रखते हुए पूछा ''तुझे यह साइकिल कहां से मिली?''"'नीचे आंटी ने अपने बेटे की साइकिल दे कर पास की दुकान से आलू-प्या ज मंगाए थे। वही लेने गया था। जब से भइया को स्कूखटी मिल गई है उनकी साइकिल खड़ी ही रहती है।'' अब तक मेरा गुस्साह भी शांत हो गया था। जब मैं बाथरूम से फ्रेश हो कर निकला तो चाय बन चुकी थी। मैं चाय पी कर बैठा ही था कि मेरी नजर उसकी कापियों पर चली गई। मैंने देखा कि उसने सभी प्रश्नी सही-सही हल कर लिए हैं। वह किचेन में सब्जियां काटते हुए कनखियों से मेरे चेहरे के भावों को देख रहा था। मेरे चेहरे की संतुष्टि में ही उसको अपनी सफलता नजर आ गई थी। कई बार हमारे चेहरे बिन बोले ही वह कह जाते हैं जो शायद हमारे शब्दस नहीं कह पाते हैं।

अब यह रोज का नियम बन गया था कि आफिस जाने के पहले वह अपनी किताबें ले कर मेरे सामने होम वर्क देने के लिए खड़ा हो जाता था। मैं भी उसे व्येस्ती रखने के लिए प्रश्नों पर निशान लगा देता था। होम वर्क कम हो या ज्याएदा,वह उसे नियमित रूप से पूरा करके शाम को मुझे दिखाता था। शायद ही वह कुछ प्रश्नोंल के उर्त्का मुझसे पूछता था। हां, उसकी अंग्रेजी बहुत कमजोर थी, बल्कि मैं यह भी कह सकता हूं कि उसे अंग्रेजी नहीं आती थी और ग्रामर तो बिल्कुाल ही नहीं। उस दिन संडे था। खाना खा कर मैं सीपी (कनाट प्लेस) घूमने निकल आया था। फुटपाथ पर लगने वाली पुरानी किताबों को देखना और कोई किताब पसंद आने पर उसे खरीदना मेरा टाइम पास था। एक-आध घंटे कब बीत जाते थे, पता ही नहीं लगता था। उस दिन भी मैं जनपथ पर किताबें देख रहा था। तभी मुझे एक अंग्रेजी ग्रामर की किताब दिख गई। मैंने उसे अलग रख लिया। किनारे कुछ किताबों के गट्ठर रखे हुए थे। मैंने पूछा कि यह कौन सी किताबें हैं तो दुकानदार बोला ''साहब यह आपके काम की नहीं हैं, एनसीआरटी की पुरानी किताबों के सेट हैं।'' मैंने पूछा ''आठवीं की हैं क्याह?'' उसने मुझे आठवीं की किताबों का एक सेट थमा दिया। इनके साथ ग्रामर की किताब और कुछ रफ कापियों ले कर मैं वापस चल पड़ा। पता नहीं क्यूंथ आज मैंने अपने लिए कोई किताब नहीं खरीदी थी, फिर भी किसी कमी का एहसास नहीं था। किसी के लिए कुछ करने की खुशी शायद अपनी खुशी से भी बड़ी होती है। सच है, देने की खुशी पाने की खुशी से अधिक कीमती होती है।

उस दिन गुरु पूरब का त्यो हार था। आफिस में प्रतिबंधित अवकाश था पर मैंने छुट्टी नहीं ली थी। आफिस पहुंच कर मैं काम में व्यरस्त हो गया। अचानक मेरा सिर दर्द करने लगा। मैं आधे दिन की छुट्टी ले कर घर आ गया। गेट पर ही मकान मालकिन मिल गई और उन्होंोने घर की चाभी देते हुए बताया कि रघु आज साइकिल ले कर पास के गुरुद्वारे गया हुआ है। मेरे लिए यह खबर चौंकाने वाली थी पर मैं चुपचाप कमरे में जा कर सो गया। लगभग शाम पांच बजे रघु वापस आया तो जब वह चाभी लेने मकान मालकिन आंटी में पास तो उन्हों ने बताया कि मैं आ गया हूं। वह जल्दीह-जल्दीी ऊपर कमरे में आया में आया तब तक मेरा सिर दर्द कुछ कम हो गया था और मैं उठ कर बैठ गया था। कमरे में घुसते ही रघु ने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया जिसमें वह मेरे लिए हलवे का परसादा ले कर आया था। मैंने परसादे को हाथ में ले कर सिर से लगाया और खा लिया। वह चाय बनाने किचेन में चला गया था। चाय पीते हुए मैंने उससे पूछा ''आज गुरुद्वारे जाने का प्रोग्राम कैसे बन गया।''"'भइया जी, आज गुरुपूरब है और मैं उधार चुकाने गया था।''"'कैसा उधार।''"'जब मैं जूते पालिस किया करता था और कुछ भी कमाई नहीं होती थी तब कितनी बार गुरुद्वारे के लंगर से ही हम अपना पेट भरते थे। आज मैं वहां सेवा करने गया था'' उसने मुझे बताया। मैंने पूछा ''तूने वहां क्यास सेवा की?'' ''मैंने भक्तोंक के जूते पालिस किए।

क्रमशः अगले अंक में

अवधेन्द्र कुमार

मेरी बेटियां मेरा गर्व

चेतना ने पहले बेटे को जन्म दिया तो घर में उत्सव मनाया गया। चेतना भी थोड़ा संकोच करते हुए नवजन्मे बेटे पर वात्सल्य लुटा रही थी। बेटे के जन्म के कुछ दिन बाद पति ने अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए चेतना से कहा, "कन्यादान करने के लिए एक बेटी भी होनी चाहिए, कन्यादान का बड़ा पुण्य होता है।"

ईश्वर ने जल्दी ही पति की यह अभिलाषा पूरी कर दी। लेकिन जिस दिन चेतना के गर्भ से बेटी ने जन्म लिया था, उस दिन उसके परिवारजन और गांव के कुछ शुभचिंतक उदास थे। धीरे-धीरे जैसे ही दो साल बीते, परिवार और गांव-सामाज के लोगों ने चेतना पर आरोप लगाना शुरू कर दिया, "ऐसी पढ़ी-लिखी बहू आई है, बच्चे पैदा करना ही नही चाहती। दो बच्चों के बाद अब यह और बच्चे पैदा नही करेगी।"

धीरे-धीरे चेतना पर एक बेटा और पैदा करने के लिए पति का दबाव बढ़ने लगा। पति का कहना था कि कम-से-कम दो बेटे अवश्य होने चाहिए। चेतना गृह-क्लेश होते देखकर पति के दबाव में एक और बच्चे को जन्म देने के लिए तैयार हो गई। लेकिन इस बार पति की इच्छा के अनुरूप चेतना के गर्भ से पुत्र का जन्म नही हुआ। सौभाग्य से इस बार भी उसकी गर्भ से बेटी ने जन्म लिया। ईश्वर की कृपा से अब वह दो बेटियों की माँ बन गई थी। उसके पति ने हंसते हुए कहा, "अब तो दो बेटियों का कन्यादान करके आपको डबल पुण्य मिलेगा।" और उसने एक बार पति की आंखों में झांककर देखा। पति कर आंखों में न उदासी थी, न ही बहुत प्रसन्नता। उनके हाव-भाव तटस्थ थे, लेकिन घर में एक और बेटी के जन्म से पति के सभी परिवारजन उदास थे। दूसरी ओर चेतना पूरी दुनिया को दरकिनार कर हंसते, खिलखिलाते और खेलते हुए अपने बच्चों को देखकर मातृत्व के आनंद में मग्न थी।

ऐसे आनंदमस वातावरण में जीते हुए बहुत जल्दी पंद्रह वर्ष बीत गए। पंद्रह वर्ष बाद एक दिन ऐसा आया, जब सड़क दूघर्टना में चेतना की चार पसलियां क्षतिग्रस्त हो गई। उस समय चेतना की दोनों बेटियों ने उसको शौच-स्नान कराने से कराने से लेकर खाना खिलाने और समय पर दवाई देने तक की सारी जिम्मेदारी माँ होने के अपने सौभाग्य पर गर्व की अनुभूति हुई। तब से आज तक चेतना हर किसी से कहती है, "मैं सौभाग्यशाली हुँ कि ईश्वर ने मुझे दो बेटियां दी हैं। मेरी दोनों बेटियां मेरा गर्व हैं।"

कविता त्यागी

सौभाग्य और समृद्धि का प्रतीक है 'महावर'

महावर को सोलह श्रृंगार का हिस्सा माना जाता हैं। मान्यता है कि महावर लगाने से सौभाग्य में वृद्धि होती है, इसलिए इसे कन्याओं को भी लगाया जाता है।

विवाह के बाद दुल्हन के ससुराल आने पर गृह प्रवेश की रस्मों और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, उसे लाल महावर से भरी थाली में पैर डुबोकर घर के अंदर बढ़ते हुए कदमों की छाप छोड़नी होती है। इस रस्म को सौभाग्य के शुभ कदमों के रूप में देखा जाता है। आज भी कई राज्यों, खासकर बिहार, बंगाल, और ओडिशा में महावर के बिना दुल्हन का श्रृंगार अधूरा माना जाता है।

कन्याओं के पैरों में भी लगाया जाता है

महावर को मां लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है। इसी वजह से कुंवारी कन्याओं के पैरों में भी इसे लगाना शुभ माना जाता है। कई जगहों पर बेटी के जन्म के बाद और नवरात्र पूजन के दौरान कुंवारी कन्याओं के पैरों में महावर लगाकर इसकी छाप भी ली जाती है, ताकि घर में सुख-संपन्नता बनी रहे।

तनाव होता है कम

विवाह के समय दूल्हा और दुल्हन, दोनों के पैरों में महावर लगाने का रिवाज पुराने समय से चला आ रहा है। त्योहारों और पूजा-पाठ के अवसर पी भी महावर लगाना शुभ माना जाता है। विज्ञान के अनुसार महावर को पैरों की एड़ियों को ठंडक मिलती हैं, जिससे तनाव कम होता है।

परिणय विशेष

सूर्य ने विश्वकर्मा की बात मान ली। सूर्य की मूल आभा को विश्वकर्मा ने कम कर दिया। इससे तुरंत ही सूर्य का ताप कम हो गया।

सूर्य का बदला हुआ स्वरूप देखकर संज्ञा को बहुत राहत मिली और वह फिर से उनके संग रहने के लिए मान गई। ऐसा करने से सूर्य द्वारा संसार को दिए जा रहे प्रकाश और ताप पर भी विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

विश्वकर्मा के सामने अब यह प्रश्न था कि सूर्य के तेज का जो अंश उन्होंने काटकर अलग किया था, उसका क्या उपयोग किया जाए। तब काफी विचार-विमर्श करने के उपरांत विश्वकर्मा ने सूर्य के अतिरिक्त स्वार्णिम तेज दिव्य वस्तुओं का निर्माण किया- सुदर्शन चक्र, पुष्पक विमान और त्रिशूल।

पुष्पक विमान, विश्रवानंदन कुबेर को मिला और त्रिशूल को भगवान शिव ने धारण कर लिया। सुदर्शन चक्र को ध ारण करने का अधिकार भगवान विष्णु को प्राप्त हुआ। इस प्रकार, संज्ञा का कष्ट दूर करने हेतु सूर्यदेव के अतिरिक्त तेज से सृष्टि की तीन वस्तुओं का निर्माण संभव हो पाया।

देवराज इंद्र ने ली युधिष्ठिर की परीक्षा

युधिष्ठिर अकेला रह गया। हालांकि कुत्ता अब भी उसके साथ था। देवता इस अद्‌भूत दृश्य को देखकर अचंभित थे। युधिष्ठिर की इस कठिन यात्रा के बाद उसे मोक्ष मिलना निश्चित था।

महाभारत-युद्ध के उपरांत पांडवों ने अनेक वर्ष शासन किया। 'फिर पांचो भाई और द्रौपदी राज-पाट त्याग कर महाप्रस्थान-यात्रा पर निकल गए। तभी कहीं से एक कुत्ता आया और पांडवों के साथ चल दिया। पांडव आगे बढ़ रहे थे कि तभी द्रौपदी लड़खड़ाकर गिर पड़ी। भीम उसकी सहायता के लिए दौड़ा लेकिन युधिष्ठिर ने उसे रोंक दिया। 'रुको भीम! द्रौपदी का समय पूरा हो गया। उसे यहीं छोड़ दो और आगे बढ़ो!'

'परंतु द्रौपदी क्यों गिरी? क्या उससे कोई भूल हुई थी?' भीम ने पूछा।

युधिष्ठिर ने कहा - 'द्रौपदी हम पांचो की पत्नी थी लेकिन सबसे अधिक प्रेम अर्जुन से करती थी। यही उसका दोष था।' द्रौपदी को छोड़कर पांचो भाई चल पड़े। कुत्ता उनके साथ चल रहा था। कुछ देर बाद सहदेव गिरा तो भीम ने युधिष्ठिर से पूछा, 'सहदेव तो सबके प्रति समान रूप से समर्पित था। फिर इसका क्या दोष था?'

युधिष्ठिर ने कहा, 'सहदेव को अपनी बुद्धि पर बहुत घमंड था। यह उसकी दुर्बलता थी' फिर चारों भाई चले तो नकुल लड़खड़ाया और गिर पड़ा। भीम ने कारण पूछा तो युधिष्ठिर ने बताया, 'सहदेव को अपनी बुद्धि पर और नकुल को अपनी सुंदरता पर घमंड था। अहंकार, इन दोनों के पतन का कारण बना।'

अब गिरने की बारी अर्जुन की थी। उन्हें गिरता देखकर भी युधिष्ठिर चलते रहे। उन्होंने भीम से कहा, 'अर्जुन को घमंड था कि वह शत्रु-सेना का अकेले संहार कर सकता है। इसलिए उसकी यात्रा अधूरी रह गई।'

भीम और युधिष्ठिर के साथ मार्ग पर अब केवल कुत्ता चल रहा था। कुछ ही क्षण बाद महाबली भीम फिसलकर नीचे गिरने लगा। उसने गिरने का कारण पूछा तो युधिष्ठिर ने कहा, 'तुमने दो भूल की हैं। एक, तुम आवश्यकता से अधि क खाते हो। दूसरा, तुम्हें अपने बल पर बहुत घमंड है। इसलिए तुम्हारा पतन हुआ है।'

युधिष्ठिर अकेला रह गया। हालांकि कुत्ता अब भी उसके साथ था। देवता इस अद्‌भूत दृश्य को देखकर अचंभित थे। युधिष्ठिर की इस कठिन यात्रा के बाद उसे मोक्ष मिलना निश्चित था। उन्होंने युधिष्ठिर की परीक्षा लेने का निश्चय किया।

इंद्रदेव, युधिष्ठिर के सामने प्रकट हुए। पहले उन्होंने युधि ष्ठिर के गुणों की प्रशंसा की और फिर उसे सशरीर स्वर्ग चलने का प्रलोभन दिया। परंतु युधिष्ठिर ने इंद्रदेव के सामने एक विचित्र शर्त रखी। वह बोला, 'इस कठिन यात्रा में यह कुत्ता मेरे साथ रहा है। यदि आप मुझे स्वर्ग ले जाना चाहते हैं तो यह भी मेरे साथ जाएगा।'

इंद्र को आश्चर्य हुआ। वह बोले, 'देवलोक में कुत्तों के लिए स्थान नही है। आसक्ति छोड़ो और मेरे साथ स्वर्ग चलो।'

युधिष्ठिर ने कहा, - 'मैंने आजीवन धर्म का पालन किया है। अब अंत समय में धर्म को कैसे त्याग दूं?'

इंद्र ने फिर लालच दिया। 'तुम्हें देवलोक में अथांह संपत्ति, अमरत्व, शांति और प्रेम मिलेगा। इससे अधिक कोई मनुष्य क्या चाहेगा। इसलिए कुत्ते को साथ ले जाने का विचार त्याग दो।'

यह सुनकर युधिष्ठिर निस्संकोच बोले, 'मैं देवलोक का विचार त्यागने को तैयार हूं, लेकिन कुत्ते का साथ नहीं छोडूंगा। इसने बुरे समय में मेरा साथ दिया है। मैं इसकी निष्ठा से अभिभूत हूं। यदि इसके लिए देवलोक में स्थान नहीं है तो मेरे लिए कैसे हो सकता है? शरणागत को डराना, स्त्री की हत्या करना, ब्राह्मण को धोखा देना और मित्रों की निंदा करना - ये चार प्रमुख अपराध है। परंतु निष्ठावान जीव को त्याग देना, इन चारों से भी बड़ा अपराध माना जाता है। इसलिए मैं क्षमा चाहता हूं किंतु मैं कुत्ते को अकेला छोड़

नहीं सकता चाहे इसके लिए मुझे स्वर्गलोक क्यों न छोड़ना पड़े।'

यह कहकर युधिष्ठिर ने पीछे मुड़कर कुत्ते की ओर देखा। लेकिन कुत्ता गायब हो चुका था। उसके स्थान पर साक्षात् धर्मराज खड़े थे। युधिष्ठिर, जो स्वयं धर्मराज और कुंती का पुत्र था, अपने पिता को देखकर चकित रह गया।

धर्मराज ने युधिष्ठिर से कहा, 'पुत्र, तुम धन्य हो। मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं। मेरी इच्छा है कि तुम देवराज इंद्र के साथ स्वर्ग जाओ।'

देवराज इंद्र ने रथ का द्वारा खोला और युधिष्ठिर को साथ बैठाकर स्वर्गलोक के लिए रवाना हो गए।

अपने दोष के लिए तुम किसी को दोषी न समझो, अपने ही पैरों पर खड़े होने की चेष्टा करो। कहो कि जिन कष्टों को हम अभी झेल रहे हैं, वे हमारे ही कर्मों के फल हैं। हमने जो कुछ किया है, उसे खत्म भी हम ही करेंगे।

आशुतोष गर्ग

श्री टी.एन. गुप्ता जी नही रहे

श्री टी. एन. गुप्ता जी, जिनका पूरा नाम त्रियुगी नारायण गुप्ता था, मूलरूप से जमानियां, गाजीपुर उ. प्र. के पास ढढ़नी गांव के निवासी थे। ये तीन भाई त्रिलोकी नाथ, त्रियुगी नारायण गुप्ता तथा त्रिभुवन नाथ गुप्ता एवं दो बहन श्रीमति शिव कुमारी व श्रीमति सुशीला देवी। सबसे बड़े भाई, बड़ी बहन व इनकी भाभी तथा पत्नी श्रीमति मालती गुप्ता का वर्ष 2017 में स्वर्गवास हो गया है। छोटी बहन सुशीला देवी का भी 16 नवम्बर 2023 को प्रयागराज में स्वर्गवास हो गया।

श्री त्रिलोकी नारायण गुप्ता जी के बड़े भाई दिल्ली में नौकरी करने आये थे तथा उन्होंनें ही इनको वर्ष 1968 में दिल्ली ले आये। सबसे पहले करोलबाग में सागर आर्ट सर्विस जो कि उन दिनों बोर्ड पर विज्ञापन पेन्टिग का काम करती थी, में बोर्ड पेन्टिंग व कपड़े के बैनर प्रिटिंग की नौकरी प्रारम्भ किया।

श्री टी. एन. गुप्ता जी से श्री अविनाश गुप्ता जमानियां निवासी, जो मेरे अभिन्न शुभ चिन्तक थे, के माध्यम से परिचय हुआ। अविनाश जी दूर के एक रिस्ते में मेरे मामा जी थे, वह तथा टी. एन. गुप्ता जी मेरे छात्रावास गुर्टू में तीन दिन रहे। उस समय मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 'प्रबन्ध शास्त्र' का विद्यार्थी था। मेरे आवभगत से टी. एन. गुप्ता जी बहुत प्रभावित होकर दिल्ली आनें का निमंत्रण दिया। जब मैं वर्ष 1980 में दिल्ली आया तो टी.एन. गुप्ता जी से सागर आर्ट सर्विस में मिला। मैनें इनकी मेहनत व लगन को देखकर बहुत प्रभावित हुआ तथा इनको नौएडा में औद्योगिक भूखण्ड वर्ष 1983 में 114 वर्ग मीटर का आर्थिक सहयोग देकर आवटिंत करा दिया साथ ही यु. पी. एफ. सी. से लोन कराकर भवन निर्माण करा दिया। सागर आर्ट सर्विस के मालिक स्वर्गीय जे. के. सेठी जी से मुझे बहुत स्नेह देते थे व बहुत मानते थे अत: उनके कुछ बोर्ड व बैनर बनानें का आर्डर भी श्री टी. एन. गुप्ता जी को दिला दिया तथा इन्होनें मेहनत कर विज्ञापन के क्षेत्र में बहुत सफल व्यवसायी बन गयें।

श्री टी. एन. गुप्ता जी की धर्मपत्नी श्रीमति मालती गुप्ता का 6 वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो गया। इनके तीन पुत्र – अनुप, ललित व दीपक हैं तथा एक पुत्री पूनम है। सभी विवाहित है एवं विज्ञापन क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना लिया है।

श्री टी. एन. गुप्ता जी का लगभग 82 वर्ष की उम्र में दिनाक 16.2.2024 को स्वर्गवास हो गया तथा 28.2.2024 को ब्रम्हभोज, भजन व शान्ति पाठ का आयोजन हुआ जिसमें इनके पुत्र, पुत्र बधू, पोतियां, पुत्री, दामाद, रिश्तेदार, सगे-संबंधी उपस्थित होकर अपनी श्रद्धांजली प्रस्तुत किया। इस दुखद अवसर पर जायसवाल जागृति के श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री राजकुमार जायसवाल, श्री गोपाल जी जायसवाल भी अपनी श्रद्धांजली अर्पित की। सोशल मिडिया के माध्यम से जायसवाल जागृति के सर्वश्री माखन चौधरी, डॉ. अशोक चौधरी, बृजमोहन जायसवाल, ब्रजेश कुमार, अशोक जायसवाल, मनोज शाह, के.डी. चौधरी, पूनम चौधरी, मीनू गुप्ता जायसवाल, अजय जायसवाल, किशन कुमार भगत, आदित्य वर्धनम इत्यादि ने अपनी विनम् श्रद्धांजली अर्पित किया।

मैं, जायसवाल जाग्रति के प्रधान सम्पादक तथा नोएडा एक्स स्टाफ वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष के रूप में अपनी विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करते हुए परम चिंता परमेश्वर से श्री टी. एन. गुप्ता जी को अपने चरणों में स्थान देने की प्रार्थना की।

मैंने अपने सक्षिप्त संबोधन में श्री टी.एन. गुप्ता जी के सन्दर्भ उपस्थित लोगों को अवगत कराया कि श्री टी. एन. गुप्ता जी में अदम्य साहस व ऊर्जा के साथ ही काम के प्रति लगन थी, यही कारण था कि दिल्ली में छोटी सी नौकरी से अपना कैरियर प्रारम्भ कर विज्ञापन उद्योग के क्षेत्र में एक विशेष पहचान बनाई एवं अपने तीनों लड़कों को विज्ञापन उद्योग में सहभागी बना लिया।

ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति।

प्रधान सम्पादक

कलवार समाज की महासभा में बोले सीएम-

– श्रीमत शंकरदेव के पूर्वज यूपी से आए थे असम

ढेकियाजुली: अखिल असम कलवार समाज की चौथी महासभा में भाग लेते मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्वशर्मा

मोदी को तीसरी बार पीएम बनाने का किया आग्रह

कुमार रवि जायसवाल

ढेकियाजुली : अखिल असम कलवार समाज की चतुर्थ महासभा, ढेकियाजुली में आज दूसरे दिन मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्वशर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस मौके पर सीएम ने कहा कि असम एक समृद्ध राज्य है, इसकी अपनी विरासत और परंपराएं हैं। इसके इतिहास, परंपरा, कला एवं शिल्प हर किसी को आकर्षित करते हैं। इसलिए यहाँ आने वाले सभी लोग असम में एकीकृत हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि कलवार समुदाय के लोग व्यापार के लिए असम आए थे और वे यहाँ की मिट्टी, पानी और हवा में विलीन होकर रह गए। उन्होंने कहा कि असम में अब शांति है, अब असम में उग्रवाद की समस्या नहीं है। इसलिए जो लोग व्यापार करते हैं, उन्हें स्वतंत्र मन से अपना व्यापार करना चाहिए और असम के विकास में भागीदार बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि असम और उत्तर प्रदेश का घनिष्ठ संबंध है। उन्होंने कहा कि महापुरूष श्रीमंत शंकरदेव के पूर्वज उत्तर प्रदेश से असम आए थे। श्री रामचंद्र की जन्मस्थली उत्तर प्रदेश भारत के जन-जन की आत्मा है। यहाँ राम मंदिर का निर्माण हुआ है, यह देश के प्रत्येक नागरिक के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि श्रीरामचंद्र पूरे देश के लिए एक महान आदर्श हैं। श्रीरामचंद्र भारत की विरासत की पृष्ठभूमि है। इसीलिए हिंदुओं को भारतीय परंपराओं को संरक्षित करने के लिए एकजुट होना चाहिए। हमें रामचंद्र के आदर्श को लेकर आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि राम मंदिर की स्थापना से भारत में पाँच सौ वर्षों की मुगल गुलामी का अंत हो गया है। यदि प्रधानमंत्री श्री मोदी और दस वर्ष देश के प्रधानमंत्री रह जाते हैं तो अमरीका और चीन जैसे देश भारत के पीछे रह जाएंगे। देश की जनता को चाहिए कि नरेंद्र मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बनें, भारत को विश्वगुरु के रूप में स्थापित करने के लिए नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश में ऐसे भी दौर रहे हैं जब छत्रपति शिवाजी, दुर्गादास राजपूत, लाचित बरफुकन जैसे वीरों का जन्म हुआ। आज हमारे लिए गौरव और सौभाग्य का क्षण है कि हमें अपने जीवनकाल में नरेंद्र मोदी जैसा अच्छा नेता मिला है। मुख्यमंत्री के ढेकियाजुली की विरासत और आजादी का जिक्र किया। अखिल असम कलवार समाज की केंद्रीय समिति के अध्यक्ष संतोष जायसवाल की अध्यक्षता में आयोजित खुली सभा में बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तारकिशोर जायसवाल, ढेकियाजुली के विधायक तथा मंत्री अशोक सिंघल, अनुपमा जायसवाल, बहराइच (उत्तर प्रदेश), बिहार के विधायक पवन जायसवाल, उत्तर प्रदेश के चंदौली के विधायक रमेश जायसवाल, झारखंड के हजारीबाग के विधायक मनीष जायसवाल ने भी सभा को संबोधित किया। अखिल असम कलवार समाज की चतुर्थ महासभा के आज अंतिम दिन सुबह 8 बजे यहाँ के लक्ष्मीनारायण मंदिर से श्री श्री सूर्य षष्ठी पूजा समिति कि प्रांगण तक विशाल शोभायात्रा के साथ मनमोहक झांकियाँ निकाली गई। अखिल असम भोजपुरी परिषद की शोणितपुर जिला समिति तथा ढेकियाजुली आंचलिक समिति के सौजन्य से छठ पूजा पर आधारित एक झांकी निकाली, जिसे देखकर लोग मंत्रमुग्ध हो गए। वहीं शोभायात्रा में विभिन्न जाति जनजाति के लोगों द्वारा झांकी निकाली गई। शोभायात्रा में बोड़ो और नेपाली आदि के अलावा नाम कीर्तन दल भी शामिल रहे। इसके बाद 11 बजे मंच पर आसन ग्रहण एवं सभा प्रारंभ हुआ। उक्त सभा में अतिथियों का स्वागत एवं भाषण हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान बुजुर्गो एवं स्वतंत्रता सेनानी ठगी राम बोरा (103) को मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने सम्मानित किया। इस सभा में मुख्य अतिथि ने कलवार समाज की स्मारिका का विमोजन किया। इसके पश्चात कलवार समाज के प्रतिभाशाली युवाओं को सम्मानित किया गया। वही महामानव डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल एवं संविधान संशोधन विषय पर विचार-विमर्श किया गया।

कुमार रवि जायसवाल

कलवार समाज ने कई रत्न देश को दिये : मुख्यमंत्री

– ढेकियाजुली, 7 जनवरी (ख़.सं)।

अखिल असम कलवार समाज को चतुर्थ महासभा शोणितपुर जिला अंतर्गत भोटपाड़ा स्टेडियम में 6 और 7 जनवरी को दो दिवसीय विभिन्न कार्यक्रमों के साथ आयोजित की गयी। कार्यक्रम के अनुसार आज सुबह करीब 9 बजे शहीद नगरी ढेकियाजुली लक्ष्मी नारायण (ठाकुर बाड़ी) मंदिर से डाकबंगला तक शोभायात्रा निकाली गयी। उक्त शोभायात्रा में राज्य के सभी जिले से कलवार समाज के लोगों ने हिस्सा लिया। शोभायात्रा में विभिन्न सांस्कृतिक नृत्य, दल अपने-अपने परंपरागत परिधान में कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उक्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रूप में राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा 11:30 बजे उपस्थित हुए। मुख्यमंत्री के भोटपाड़ा पहुँचते ही विधायक तथा मंत्री अशोक सिंघल के निवास स्थान तक भाजपा कर्मियों ने फूल बरसाते हुए डॉ. हिमंत विश्व शर्मा का स्वागत करते हुए जिंदाबाद के नारे लगा रहे थे। मुख्यमंत्री ने मंच पर आते ही उपस्थित हजारों लोगों का अभिवादन किया। कलवार समाज की तरफ से मुख्यमंत्री का स्वागत फूलाम गामोछा, कलवार समाज के अंग वस्त्र, जापी और सराय भेंट कर गर्मजोशी से सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री के स्वागत में कलवार समाज के गीत कैसे गोदबाई हो गोदनैवा गीत पर नृत्य किया गया। साथ ही छठ पूजा गीत पर नृत्य प्रस्तुत किया गया। मुख्यमंत्री के साथ विधायक मानव डेका, गणेश कुमार लिम्बु, कृष्ण कमल तांती, शोणितपुर जिला आयुक्त देव कुमार मिश्र उपस्थित थे। मुख्यमंत्री की उपस्थिति में केंद्रीय अध्यक्ष संतोष कुमार जायसवाल ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि शहींद नगरी ढेकियाजुली को शहीदों को नमन किया। असम में 12 लाख कलवार समाज के लोग रहते हैं, भगवान बलभद्र और अर्जुन के वंशज हैं। जायसवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री शर्मा के शासन काल में असम में रहे हिंदी भाषी निर्भय हैं, जो कि काबिले तारीफ है। संतोष जायसवाल ने कहा कि 29 दिसंबर को अल्फा गुट के साथ मुख्यमंत्री के नेतृत्व में जो समझौते का प्रयास किया गया, उसके लिए संतोष कुमार जायसवाल ने मुख्यमंत्री को धन्यवाद दिया। जायसवाल ने कहा कि देश में दो ही लोग गारंटी दे सकते हैं, वह है केंद्र में नरेंद्र मोदी और असम में डॉ. हिमंत विश्व शर्मा। अमृत काल में बन रहे श्री राम मंदिर के संदर्भ में कहा कि मुख्यमंत्री कलवार समाज आप की वानर सेना हैं। आप जब चाहे हमारी मदद ले सकते हैं। हम लोग हमेशा तैयार हैं। उन्होंने कहा कि अति शीघ्र ही प्रधानमंत्री को बलभद्र की मूर्ति सौंपी जायेगी। मुख्यमंत्री को भविष्य का प्रधानमंत्री कहा। उन्होंने भाषण के पश्चात मुख्यमंत्री को भगवान बलभद्र का विग्रह भेंट किया। आम सभा को संबोधित करते हुए बिहार के उपमुख्यमंत्री तारकेश्वर जायसवाल ने कहा कि कलवार समाज आप के हित तलवार उठा सकता है। मुख्य अतिथि अनुपमा यादव ने अपने तेज तरार भाषण में कहा कि कलवार समाज हमेशा आप के पीछे खड़ा रहेगा। स्वाधीनता की लड़ाई में शहीद हुए असम के वीरों को नमन किया। झारखंड से आये मनीष जायसवाल ने कहा कि 80 करोड़ हिंदुओं की धड़कन हैं मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा। काशी से आये विधायक रमेश जायसवाल ने कहा कि 140 करोड़ लोगों के प्रिय हैं राज्य के मुख्यमंत्री। स्थानीय विधायक तथा असम सरकार के कैबिनट मंत्री अशोक सिंघल ने कहा कि कलवार समाज भाजपा से जुड़ा हुआ है। कलवार समाज के साथ राम मंदिर दर्शन करने जायेंगे। मुख्यमंत्री ने अपने भाषण का आरंभ नये वर्ष की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ढेकियाजुली पवित्र भूमि है। मुख्यमंत्री ने स्वाधीनता संग्राम में शहीद हुए असम के वीरों को नमन किया। संतोष और शिवाजी को समाज जोड़ने के लिए धन्यवाद दिया। मुख्यमंत्री ने अन्य प्रदेश से आये अतिथियों से आग्रह किया कि कामख्या का दर्शन जरूर कर के जायें। कलवार समाज का कई अहम योगदान है, जिसने कई रत्न देश को दिया। असम में एक समय में आतंक का माहौल था लेकिन आज असम में सभी असमिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के कारण पाँच सौ वर्षों की गुलामी खत्म हो गयी और आज राम मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा होने जा रहा है। डॉ. शर्मा ने कहा कि 22 जनवरी के बाद श्रीराम लल्ला का दर्शन करें। आगामी लोकसभा चुनाव में 400 सीट दिलाने का आह्वान करते हुए मोदी को तीसरी बार देश का प्रधानमंत्री बनाना है। कार्यक्रम में बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, असम, बंगाल आदि राज्य के कुल 13 सांसद और विधायक उपस्थित थें।

विशेष सवांदाता

CM Attends Kalwar Samaj Meet at Dhekiajuli

GUWAHATI, Jan 7: The fourth central general meeting of the All Assam Kalwar Samaj that started on January 6 with a two-day progamme concluded at Dhekiajuli today evening, said a press release.

Attending the programme on the second day, Chief Minister Himanta Biswa Sarma said, "Assam is a rich state. It has its own heritage and traditions, its history, traditions and arts and craft attrat everyone; so everyone who comes here gets integrated into Assam." He further said that the people of the Kalwar community had come to Assam for trade and they merged with the soil, water, and air of this place.

The Chief Minister said that there is peace in Assam now, there is no problem of extremists in Assam and, therefore, those who do business should do their business with a free mind and become partners in the development of Assam.

The Chief Minister further said that Assam and Uttar Pradesh have a close relationship. He said that the ancestors of the Mahapurush Srimanta Sankardev had come to Assam from Uttar Pradesh. This is the birthplace of Lord Sri Ram. Uttar Pradesh is the soul of the people of India. The Ram temple is being built in the State and it is a matter of pride for every citizen of the country. He further said that Sri Ram is a great role model for the entire country. The Chief Minister mentioned the heritage and independence of Dhekiajuli.

In the open meeting organised under the chairperson of Santosh Jaiswal, president of the Central Committee of All Assam Kalwar Samaj, former Deputy Chief Minister of Bihar Tarkishore Jaiswal, Ashok Singhal, Dhekiajuli MLA were present.

Five distinguished individuals – editor of Dainik Puvoday Ravi Shankar Ravi, Dr Lakshmi Niwas Kalwar, Ram Manohar Jaiswal, Amit Jaiswal, Rajesh Boro – were honoured with the Kalwar Ratna Samman.

End of era of Extremism in Assam: Himanta

GUWAHATI, Jan 7: Chief Minister Himanta Biswa Sarma said that era of extremism has come to an end in the state and that lasting peace has prevailed.

Sarma was speaking on the occasion of fourth central general meeting of All Assam Kalwar Samaj, in Dhekiajuli.

Sarma further said that as peace has prevailed in the state the business community could carry on without fear and apprehension and become part of the development story of the state.

Affirming that Assam and Uttar Pradesh have close relationship Sarma said that ancestors of Mahapurush Shrimanta Sankardeva had come to Assam from Uttar Pradesh. "Uttar Pradesh is the birthplace Lord Shri Ram. Uttar Pradesh is the soul of the people of India. Ram temple has been built here," he said.

He further said that the people of Kalwar community had come here to Assam for trade and they merged with the soil, water and air of this place. The chief minister also said that if Modi remained the Prime Minister of the country for another ten years then countries like America and China will be behind India, "The people of the country want Narendra Modi to become the Prime Minister of the country for the third time, India should become a world leader. Narendra Modi should be made the Prime Minister of India again to establish himself as a leader. He said, " Sarma said. In his speech, the chief minister also mentioned the heritage and independence of Dhekiajuli. In the open meeting organised under the chairmanship of Santosh Jaiswal, president of the central committee of All Assam Kalwar Samajh, former deputy chief minister of Bihar State Tarkishore Jaiswal, Ashok Singhal, MLA of Dhekiajuli assembly constituency and cabinet minister of the state Government were also present.

Special Report on
visit of C.M. Assam

जायसवाल जागृति

आजीवन सदस्यता आवेदन पत्र

1. पूरा नाम .....

2. शैक्षिक योग्यता .....

3. आवासीय पता .....

.....

.....

पिन कोड :.....

फोन : .....

4. व्यवसाय / कार्यालय .....

.....

.....

पिन कोड :..... फोन/मो. : .....

5. विशेष सामाजिक कार्य

प्रस्तावक :

आवेदक के हस्ताक्षर

अनुमोदक (महासचिव)-M. 9868241044

आजीवन सदस्यता शुल्क : रू : 1500/-

भुगतान विधि : चेक, ड्राफ्ट, ऑनलाइन

जायसवाल जागृति खाता विवरण :-

Axis Bank खाता संख्या 015010100247337, IFSC UTIB 0000015

ONLINE भुगतान के तुरंत बाद

कुर्यात् सदा मंगलम्

नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य हैं। उचित होगा यदि आप या तो दो मोबाइल नं. दें अथवा एक मोबाइल और एक लैंडलाइन टेलीफोन नम्बर भी अवश्य दें।

वैवाहिकी

नोटः सदस्यों/पाठकों की सुविधा हेतु 'वैवाहिकी' को अंग्रेजी अल्फाबेट्स के क्रम में अर्थात अभिभावकों के नामों के अनुसार (वर्णक्रमानुसार) संकलित/वर्गीकृत किया गया है। मांगलिक एवं सामान्य वर्ग को अलग-अलग शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया गया है।

''वैवाहिकी' शुल्क

प्रत्येक अभिभावक / विज्ञापनदाता से अंतिम पृष्ठ पर ग्राहक / सदस्यता के लिए दर्शाए गए 1500/ रु. के शुल्क में वैवाहिक विज्ञापन के प्रकाशन का शुल्क शामिल है। पत्रिका की एक प्रति उन्हें भेजी जाएगी। सुधी एवं सम्मानित विज्ञापनदाताओं से यह भी निवेदन है कि वे पत्रिका में विज्ञापन के माध्यम विवाह तय होने पर मंगल-निधि के रूप में अपनी सामर्थ्य के अनुसार यथेष्ट सहयोग राशि भेजने की कृपा अवश्य करें, क्योंकि इस स्तर की पत्रिका के प्रकाशन पर संस्था को आर्थिक व्यय का भार भी वहन करना पड़ता है।

विवाह सम्बन्ध तय हो जाने पर प्रधान/कार्यकारी संपादक मोबाइल को सम्बन्धित क्रम संख्या की सूचना देते हुए टेलीफोन अथवा कोरियर द्वारा पत्र भेजकर तुरंत सूचित करें। सदस्यता शुल्क अथवा विज्ञापन की राशि नीचे दिए गए पते पर भेजें। हमारे **AXIS Bank** के **A/C No.** 0150101-00247337 **IFSC-UTIB-0000015** में सीधे जमा कराके हमें तदनुसार सूचित करें। स्मरण रहे, **Net-Banking** द्वारा जमा की गई राशि की रसीद या उसकी प्रतिलिपि सलंग्न करना नितान्त अनिवार्य है।

'विशेष सूचना'

''वैवाहिकी स्तम्भ'' के अंतर्गत 'मांगलिक वर्ग' एवं 'सामान्य वर्ग' के अतिरिक्त एक तीसरा वर्ग *''तलाकशुदा (Divorcee) विधुर, विधवा आदि अन्य वर्ग''* भी आरम्भ किया गया है। हालांकि हमारी दृढ़ मान्यता है कि परिवारों में यह स्थिति किसी भी स्थिति में आनी ही नहीं चाहिए। हर स्थिति में विवाह की पवित्र संस्था का प्रत्येक पक्ष को सम्मान देते हुए उसे बनाये रखना चाहिए। किंतु देखा गया है कि कहीं मिथ्या दंभ व **Ego** के कारण तो कहीं अन्य अपरिहार्य कारणों से अलगाव प्रत्येक पक्ष के लिए अवश्यम्भावी हो जाता है। अतः जीवन के बिखरे सूत्रों को नए सिरे से पिरोना भी अनिवार्य हो जाता है। इसलिए इस विशेष वर्ग की आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह स्तम्भ आरंभ किया गया है। यदि कोई सज्जन अपना या लड़के-लड़की का नाम गोपनीय रखना चाहते हैं तो इसकी भी व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे बंधुगण या तो हमसे या फिर संबंधित क्रमांक विशेष के टेलीफोन नम्बर से सम्पर्क कर सकते हैं। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः''। अस्तु।

आजकल समाज का एक बड़ा वर्ग प्रोफेशनल कारणों से विदेशों में स्थायी या अस्थायी रूप से बस गया है। इनकी ओर से भी अपने संतानों के वैवाहिक सम्बन्ध के लिए हमारे पास पूछताछ हो रही है। अतः इस वर्ग विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनिवासी भारतीय **(NRI)** वर्ग स्तंम्भ आरंभ किया गया है।

विशेष सूचनाः जिन वैवाहिक विज्ञापनदाताओं का विज्ञापन पिछले तीन वर्षों से लगातार प्रकाशित किया जा रहा था, उनके वैवाहिक विज्ञापन अब प्रकाशित नहीं किए जा रहे हैं। अतः ऐसे जो भी विज्ञापन-दाता पुनः आगे भी अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित कराने के इच्छुक हैं, वे कृपया हमारे कोषाध्यक्ष श्री पंकज जायसवाल अथवा श्री माखन चौधरी, उपाध्यक्ष, (वित्त) मो0-99112113033 से तुरंत सम्पर्क करके **M-9818426123, 011-41687467** *एवं 1500/-रु. का शुल्क प्रषित करके विज्ञापन पुनः प्रकाशित करवाने का कष्ट करें।*

राशि रेखांकित चेक, रेखांकित बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा ''जायसवाल जागृति'' के नाम से देय होना चाहिए। शुल्क भेजते समय अपना पूरा नाम पता, पिन कोड आदि स्पष्ट लिखें ताकि पत्रिका आपको नियमित रूप से मिलती रहे। <u>विशेषः</u>- जिन सज्जनों को डाक से पत्रिका प्राप्त करने में असुविधा हो रही हो, वे कृपया 200 रु. (दो सौ रुपये) वार्षिक शुल्क अलग से प्रेषित कर कोरियर अथवा ***Regd. Post*** *द्वारा पत्रिका मंगवा सकते हैः-*

सम्पादक मण्डल

(कृपया वैवाहिकी सहयोग के लिए अन्तिम पृष्ठ देखें)

अति विनम्र निवेदन

अभिभावकों से यह विनम्र अनुरोध है कि भविष्य में शुभविवाह निश्चित होने अथवा शुभ विवाह सम्पन्न होनें पर जायसवाल जागृति को यथाशीघ्र अवश्य सूचित करें ताकि हम अपनी संस्था की शुभकामना एवं बधाई संदेश वर-वधु के लिए प्रकाशित कर सकें। आप के सहयोग की अपेक्षा में जायसवाल जागृति।

सम्पादक मण्डल

अनिवासी भारतीय (NRI) वर्ग

1. **अभिभावक–**Anil Kumar Jaiswal (Engineer), Prop. Shubham Builders, H.No. 2708, DLF City, Phase-IV, Gurugram, (Near Galaria Market Shopping Complex), M.9811663284, (0124) 2386815
   पुत्र–Abhimanyu Jaiswal, DOB, 27 January 1994, 5'9", MBA Finance (New York USA) Noridian Healthcare Solution, LIC Compensation Consultant, House: West FARGO, North Dakoota, U.S. Phone: (940) 3909979
2. **अभिभावक–डा. देवेन्द्र कुमार जायसवाल (बहरीन के अस्पताल में डॉक्टर) माताजी: प्रीति जायसवाल (बहरीन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की लेक्चरर) फोन न.–91. 9871971380, (+973) 5393228 बहरीन) कोठी C-565 NRI City, Sector Omega-II, Greater Noida, U.P. प्रतिष्ठित परिवार, अधिकांश दिल्ली में प्रतिष्ठित परिवार, अधिकांश दिल्ली में**
   पुत्री–नेहा जायसवाल, जन्मतिथि–23-8-1994, 5'2", साफ रंग गेहुँआ, Doing Master in Computer System in Australia (Final Semester).
3. **अभिभावक :** श्री मनोज कुमार गुप्ता, (Sr. Sec. Officer Afcs) 1240/C-5 प्रीत विहार, चाणक्य अपार्टमेंन्ट के सामने आदर्श नगर, नमोदा रोड, जबलपुर-482001 (मध्यप्रदेश), Ph : 09752418123, 8349231125 **पत्र व्यवहार का पता:** श्री श्रीराम जायसवाल Retd SP/CBI, 10 शांति निकेतन, 89, नर्मदा रोड, जबलपुर (म.प्र.)-482001
   पुत्र : सोमेश कुमार, 22-4-1991, (5:10 AM, जबलपुर) 5'6", सुन्दर स्मार्ट, B.Tech. MS(CS), मोर्गन स्टेनली में Technical Associate, न्यूयार्क (अमेरिका) पैकेज 1 लाख डॉलर +बोनस।
4. **Father-** Dr. K. Kant Jaiswal has his own property with gas station in USA. Contact No. 001-6019544901 (Whatspp)
   Daughter : Unnati Jaiswal, DOB- 16-Oct-2000, Time of Birth-9:50 AM, Birth Place- Sirsa, Qualification-Graducation, now pursuing Master degree in Science education (Biology)

मांगलिक वर्ग

A1. **अभिभावक :** श्री बलजीत कुमार जायसवाल 5/सी, एवन कालोनी, नवीन नगर, सहारनपुर (उ.प्र.)-247001 ड रू 9412453810
   पुत्र : डॉ. कमल जायसवाल (आंशिक मांगलिक), 5'8", 15-9-87, गेहुंआ, B.P.T, MPT (Neuro physiothe rapist नोएडा स्थित Health Care Comp. Pvt में कार्यरत, पैकेज 5 लाख रुपये वार्षिक।
2. **अभिभावक: राजकिशोर जायसवाल,** A-106/1, Fourth Floor, Joshi Colony, I.P. Extension, Delhi-110092, Mob-9717546924, 9810950426
   पुत्री (1)- रीतू जायसवाल (मांगलिक) 11-8-1990, 4'9", colour Normal, B.com (Hons) CA (Inter)
   पुत्री (2)- अल्का जायसवाल (आंशिक मांगलिक) 2-10-1992, 4'9", colour wheatish, B.Com (Hons), CA (Foundation)
3. **अभिभावक- श्रीमती अन्नपूर्णा गुप्ता पत्नी स्व. श्री संतोष कुमार गुप्ता**, म. नं. 1306, गली नं. 23, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, वैस्ट करावल नगर, दिल्ली-110094, M.-9818289471, 011-22933951
   पुत्री- सृष्टि (मांगलिक), जन्म 30-9-1989, जन्म समय शाम 6:00 बजे दिल्ली में, 4'10" गोरी, बी.ए., मास्टर डिग्री माँश कमनिकेशन, रेडियो, टी.वी. जनर्लिज्म डिप्लौमा, सर्विस Asst. Managar Marketing, Salary 20,000 P.M.
4. **अभिभावक: विजयकुमार जायसवाल**-टिम्बर मर्चेन्ट, सी-94/1, चन्द्रपुरी, चांदबाग, भजनपुरा रेडलाइट के पास, दिल्ली-110094 फोन नं. 09999285302
   पुत्री-मेघा, (मांगलिक) जन्मतिथि-04 अगस्त 1989, 7 बजे सायं (दिल्ली), साफ रंग, 5 फिट 2 इंच, शिक्षा-**सी.ए., एम. बी.ए.** प्राइवेट कम्पनी ओखला, दिल्ली में कार्यरत, पैकेज 10-12 लाख वार्षिक। स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।
5. **अभिभावक :** अनिल कुमार जायसवाल, 41/1-A/1 गली.14, ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली-110054, M : 9210705572
   पुत्र (1) : हिमांशु जायसवाल **(मांगलिक)**, B.A. 5'8" जन्म 17-2-1993 (9.30 AM, Delhi) गोरा, प्रो. मयंक एंटरप्राइस (Ladies garments & Accessories) तथा Lace के होलसेल व्यवसायी। **आय-2 लाख रुपये मासिक।**
   पुत्री (2) : आकांक्षा **(मांगलिक)**, 5'3" जन्म 17-2-1993 (9.05 AM Delhi) गोरी, MBA (final) from DU.
6. **अभिभावक :** श्री जुगल किशोर जायसवाल (व्यवसायी) मण्डी चौक, विकासनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
   पुत्री : स्वप्निल जायसवाल, (आंशिक मांगलिक) M.Tech (Comp. Sc), 5'4", 26-10-1989, (8.35AM, देहरादून) MNC नोएडा में कार्यरत, पैकेज 2.50 लाख रुपये।
7. **अभिभावक–**श्री शिव प्रसाद जायसवाल (दिल्ली सरकार में Class-I अधिकारी) पता–391 F, पॉकेट-2, फेज-I, मयूर विहार, दिल्ली-110091(011)-22753484, **फोन न.–** 9599959013
   पुत्र–अप्रतिम जायसवाल (मांगलिक) जन्मतिथि–4-8-1992, (8.03 PM इलाहाबाद) 6'1', गेहुआ B.Tech, fidelity International, नोएडा में कार्यरत, पैकेज 10 लाख।
8. **अभिभावक-**श्री तेज नारायण जायसवाल (प्रतिष्ठित व्यवसायी) 104A/360, रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.) M.-9839027212, 9657129022 Email : aalekhjaiwswal@yahoo.com
   पुत्र-आलेख (आशिक मागलिक) एकलौता पुत्र, 23-06-1990, 5'8" गेहुआ आकर्षक एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व प्रशिक्षित B.Tech, Business हेतु प्रोफेशनली क्वालिफाइड या टीचर कन्या को वरीयता।
9. **अभिभावक–**अखिलेश जायसवाल, जायसवाल फार्मा 171ए, ठेठरी बाजार चौक, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश, फोन न.– 9532252230, 9911515253

पुत्री–सुष्मिता जायसवाल, **(मांगलिक)**, जन्मतिथि–11-11-1992, (सुल्तानपुर) 5'3', fair, M.Tech (E.C.) Gold Medalist, Ph.D Ist Year M.N.N.IT. Allahabad U.P.

10. **अभिभावकः** Rajeev kumar Jaiswal, 35 Swami Vivekananda Marg Prayagraj Uttar Pradesh, Mob. 9336901230, 9415238934

पुत्रः Rajat Jaiswal. (Varun Jaiswal), B.tech, DOB. Age 30, (electrical home appliances) wholesale and retail Firm name-shree electrical & Co Prayagraj

11. Father-Shri Dinesh Chandra Jaiswal (Business Man) Address: 113, Lukarganj, Beharikuti, Allahabad (UP) Contact No. 9305094705, 9453993978 Guardian Subhash Jaiswal M.no 9695959000

Daughter-Kr Arpita Shilpi Jaiswal DOB 5th Dec 1985 Birth Time 04:26 AM Place of Birth Allahabad (Uttar Pradesh) Height 5.5" Complexion ' Fair & Charming Nature Religious, Mild, Soft Spoken, Diligent Hobbies 'Reading, Cooking, Listening Music Qualification B.SC, MBA Occupation : Deputy Manager- Operations (Matrix Cellular - Delhi) Language Known ¥ Hindi & English

सामान्य वर्ग

1. **अभिभावक :** श्री अरुण कुमार चौधरी, कोशी एक्सरे क्लिनिक, एम.जी.मार्ग., खगड़िया विहार-851204 M : 9431417963
पुत्री : श्वेता कुमारी, 5'5" जन्म 9-9-1988, (समस्तीपुर) B.C.A, गोरी स्लिम, PNB रायपुर में Probationary Officer.

2. **अभिभावक :** श्री अनिल कु. जायसवाल 160, अनूप नगर रोठा रोड, मेरठ-250001 (उ.प्र.) M : 9219613863
पुत्र : अंकित जायसवाल, 4-11-1993 (9.25 PM मेरठ, 5'6", गेहुँआ, B. Com., ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, वार्षिक आय 4 लाख स्मार्ट व्यक्तित्व।

3. **अभिभावक :** श्री ओमप्रकाश जायसवाल (चावल के थोक व्यवसायी) D-II, 397-398, पहली मंजिल, Sector-7 रोहिणी, दिल्ली-110085 M : 9899424368, 8178845541
पुत्र : सुधीर कुमार जायसवाल, 22-2-1988 (7.42 AM सिलीगुड़ी, प. बंगाल), 5'7", IDI MIA, नोएडा में Sr. Software Enginner, B.Tech, साफ, स्मार्ट व्यक्तित्व, Email : Sudhirjustme@gmail.com.

4. **अभिभावक–**श्री अनिल कुमार जायसवाल, (Retd. Supdt. Archeological Survey of India)–74/22, Shipra Path, Mansarovar, Jaipur फोन न.–0759792110, 09929660874
पुत्र–आकाश जायसवाल, जन्मतिथि–5-11-1988, (4.35 AM देहरादून) 5'10', M.Com, MBA (IBS) Credit manager, Barclays Bank) पैकेज 17.5 लाख, शिक्षित परिवार, स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

5. **अभिभावक :** स्व. श्री बिहारी लाल जायसवाल दिल्ली दरवाजे बाहर,दारू गोदाम के पास, कोठिया पावी मोहल्ला, अलवर (राजस्थान) M : 7014453944, 9667152823, 9309232213 **पुत्र (1) :** रिंकू, 10-12-1994, 12th, ITI, self Business. **पुत्र (2) :** पिंकू 6-6-1996, Diploma in mechanical, self business.

6. **अभिभावक :** श्री सी.पी. गुप्ता (Sr. Advocate), 193, कल्पना नगर, सिविल लाइन्स, इटावा-20600। प्रतिष्ठित परिवार (M) 9410485758, 7417715565
पुत्री : डॉ. निधि गुप्ता, जन्म-24-01-1980, (16.20 P.M. इटावा उ.प्र.), MBBS, DOMS, (GRMC ग्वालियर), Pursing MD in Microbiology (BHU), 5 फुट 1 इंच, स्लिम, सुन्दर, गौरवर्ण, आकर्षक, स्मार्ट व्यक्तित्व। पेंटिंग पठन-पाठन, पाक-कला एवं गृह-सज्जा का शौक। चार वर्ष तक Rural PGI, सैफई इटावा के नेत्र विभाग में Sr. Resident, परिवार में अन्य सदस्य सिविल जज अथवा मेडिकल व्यवसाय में संलग्न।

7. **अभिभावकः श्रीमती चंद्रकांता,** 5 जॉली कॉम्प्लेक्स अभियन्ता नगर, नाशिक (महाराष्ट्र)-422008 M. 9871262622, 8983574660
पुत्र- गौरव, 29-04-1982 (04: 16P.M. दिल्ली), 5'8", B.C.A. Deals in Finance and Share Market, Rs 30,000/-P.M. शिक्षक, बड़ी बहिन कनाडा निवासी।

8. **अभिभावक–**श्री देवेन्द्र जायसवाल, पता–D-219 आनंद विहार, दिल्ली-110092, फोन न.–9212725140, 9555541050
भतीजी–मेघा जायसवाल, जन्मतिथि–16-12-1984, 5'2", MA (ECO), B.Ed, Pursuing Ph.D. स्मार्ट fair, Hobbies : Reading, teaching.

9. **अभिभावक**-श्री फुलेन्द्र चौधरी, सम्पर्क डॉ. सत्यदेव गुप्ता जायसवाल L-1/56, श्री कृष्ण पुरी, बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) M-9308741023
पुत्री-प्रियंका चौधरी, B.A., 5'6" 4-9-1988 अति सुन्दर गोरी, स्लिम, दिल्ली पब्लिक स्कूल में टीचर, पति की अल्प बीमारी के कारण मृत्यु दो पुत्र क्रमशः 9-10 वर्ष बच्चों को नाना-नानी रखने को तैयार, योग्य संस्कारी वर अपेक्षित विधुर भी मान्य।

10. Father's- Shri G.L. Chouksey, Retd. From Forest dept., M.P. Govt., Bhopal, 43 Prakash Nagar, Ayodhya Bypass road, Piplani, Bhopal-462022 Ph. 7987142364, 9981770414.
Daughter : MEENAL CHOUKSEY, 09-06-1985 (Time 00.10), Prakash Nagar, Bhopal, M.P., Height-5'.3", Fair, B.Sc., MBA (Finance), PGDCA, Manager, F.C.I. (Govt. of India), West Zone, M.P. Region, 10 Lakhs P.A.

11. **अभिभावक-** गंगा राम जायसवाल, **पता:** Station Road, Purani Basti, Near purani Thana Basti, District Basti (UP)-272002 M.-9044015597, 8604262492
पुत्र- विशाल जायसवाल, 5'7" 15-1-1987 Qualification B.A. profession; SBI Life Insurance Advisior + SBI ATM Guard, Income 2.5 Lac.

12. **Fathers:** Girvar Singh Rai- (Railway Contractor) In front of Jamuna bai Temple, 70 Colonypura, Ghasmandi, Gwalior (M.P.) 474003; Mob. 9329092587
Daughter: Neha Rai, DOB: 27.01.1995 (5:00 AM) Place of Birth: Ashok Nagar, Madhya Pradesh, Complexion: Fair Height: 5'7"
Qualification: LL.B, B.A. Programme 12th Standard (M.P. Board) Faculty of Law (University of Delhi) Lady Shri Ram College for Women (University of Delhi)

13. **अभिभावक :** श्री हरि प्रकाश जायसवाल म.न. 1292/28 फ्रेन्डस कॉलोनी, सिद्धेश्वर मंदिर के पास, झांसी (उ.प्र.) -282001 M : 07460000268, 09839419372
पुत्र : विकास जायसवाल, 29 वर्ष, कद 5'8" . B.Arch. Master in Architecture (N.I.T. Bhopal) राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत **आय 1 लाख- रु. प्रतिमाह।**

14. **अभिभावक :** श्री इंदकुमार जायसवाल (B.Tech, MBA)] Asian Paints Ltd, Mumbai में वरिष्ठ पद पर कार्यरत 402 धनशिला अहिंसा मार्ग, खार (पश्चिम) मुंबई-400-052 M. 09820215011/09820194569 (मूल निवास-इलाहाबाद)
पुत्री : स्मृति, 8-9-1985 B.M.S. (Bachelor of Management Science), M.Com, CFA (Leve l I & II), MBA (from Mumbai), 5'2", स्लिम सुंदर आकर्षक मुंबई स्थित बैंक ऑफ अमेरिका में कार्यरत, अच्छा वेतन।

15. **अभिभावक-** श्री कृष्णा प्रसाद एवं सविता चौधरी, F124, पॉडव नगर गली न० 6, दिल्ली- 110092, मो० 919560444808 (सुलतानगंज (बिहार) के रहने वाले हैं।)
पुत्री (1) निक्की, उम्र 31 वर्ष, उजली गोरी 5'10" कम्प्यूटर ग्राफिक्स में कैरियर, बी.ए (अर्थशास्त्र) प्राइवेट कंपनी दिल्ली में नौकरी, पाक कला में प्रवीण।
(2) सोनी, उम्र 28 वर्ष, सुन्दर, गोरी 5'5" कम्प्यूटर ग्राफिक्स की जानकारी। बी.ए. (अर्थशास्त्र) दिल्ली में प्राइवेट नौकरी।

16. **अभिभावक-** मुकेश कुमार जायसवाल, स्टेट बैंक वाली गली, मकान नं. 1597, कच्ची मंडी कोसी कलामथुरा-281403 M.-8533800619, 7906018745
पुत्र- रोहित जायसवाल, 6'1" 27-5-1988 (8:25 PM Kosikalan) B.A. Rajasthan University Exam by D.G.C.A. (all cleared) CPL and PPL, Licence Business Lazy Mozo Back Peeker Foreigners Guest House at Civil Line Jaipur (Rajasthan)

17. **अभिभावक : श्रीमती मीना देवी जायसवाल,** D. 14/88, टेढ़ी नीम, दशाश्वमेघ, वाराणसी (उ.प्र.) M 9935470506
पुत्र- सूरज कुमार जायसवाल 15-07-1989 (6.20 P.M. वाराणसी) 5' 5", स्मार्ट, आकर्षक ग्रेज्युएट, B.H.U में Music Teacher तथा सितार और तबला आदि वाद्य उपकरणों के व्यापारी, स्वयं का मकान।

18. **अभिभावक-**श्री मोहनीश जायसवाल, (व्यवसायी), फोन न. -9654778803
भाई-श्री प्रशान्त जायसवाल, 26-6-1990, (10.33 AM) 5'7', B.Com, spectacle frames wholeseller, स्मार्ट, पैकेज 1 लाख प्रति माह।

19. **अभिभावक :** श्री ओम प्रकाश चौकसे (किसान) एवं श्रीमती आभा चौकसे, करेली, नरसिंहपुर (म.प्र.) M : 9826611582
पुत्री : वसुन्धरा चौकसे, 17.8.1988ए (करेली म.प्र. 6.03 AM) 5'7", B.E. (IT) from LNCT Bhopal. Rank Asstt. इंडियन कोस्ट गार्ड में Commandant, Air station चेन्नई में Logistics office के पद पर तैनात 3-5 वर्ष की service seriority.

20. **अभिभावक :** श्री ओम प्रकाश जायसवाल Prop. Navjoyti Enterprises, ब्लॉक UP, प्लाट नं. 55 प्रथम मंजिल पीतमपुरा, दिल्ली-110034, M : 9810562034 Email : rahul.regard@gmail.com.
पुत्र (1) : राहुल, 02-01-1989, (5.35,pm कोलकाता), 5'7" गौरवर्ण, स्मार्ट, MBA, स्वयं का व्यवसाय (Electrical Accessories)
पुत्र (2) : विनय, 26-05-1990, (4.17,pm दिल्ली) MCA, 5'8", MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज, गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।
पुत्री (1) : नमिता, 24-08-1992, (8.15,am कोलकात), 5'2", B.Tech (MDU University), MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।

21. **अभिभावक :** प्रदीप कुमार जायसवाल (Business man), मकान नं. 1076, Ward No. 3 कैनाल रोड, हर्वटपुर (देहरादून)-248142, M : 91-7017792611, 91-9412150835
पुत्री : कनिका जायसवाल, 5'2" जन्म 16-7-1990, M.Com, वर्तमान में Del. Ed. कर रही है तथा विद्यालय में पढ़ा भी रही है। तथा बैंक की तैयारी भी कर रही है। गोरी, इकहरा वदन, सुन्दर।

22. **अभिभावक:** प्रमोद कुमार (सुपुत्र डॉ. सत्यदेव गुप्ता) C/o L-1/56 श्री कृष्णपुरी बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) फोन 9430060645, 9308741023, 0612-2541587
पुत्री-मुदिता 15-3-89, 5'4" B.A. (Hons. Eng.) PGDM, सुंदर, गोरी, आत्मनिर्भर संस्कारी वर अपेक्षित।

23. **अभिभावक :** श्री प्यारे लाल जायसवाल, (व्यवसायी), 176, मूनगली, गार्डन, साहुकार लाइन, हलद्वानी (नैनीताल) उत्तर प्रदेश
पौत्र : आकाश कुमार, पारिवारिक कारोबार में सलग्न सुंदर, स्वस्थ, स्मार्ट, आकर्षक, 25 वर्ष, B.Tech, जन्म 15-8-1991, (02:42 pm हलद्वानी)।

24. **अभिभावक :** श्री पी.सी. जायसवाल, 23/47/111 महादेवी भवन, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश-211006 Mob. : 0532-2500624, 09415702805, Email: abhishekjaiswal128@gamil.com
पुत्र : अन्शुल जायसवाल 10-04-1987, 5'10" Fair, Slim, Handsome, कॉनवेन्ट एजुकेटेड, B.Tech (Electronics Communication) राष्ट्रीयकृत बैंक में असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत, Civil Services के लिए प्रयासरत।

25. **अभिभावकः प्रदीप कुमार जायसवाल,** नियर सागर आर्ट, P.O. Kharmanchak, Bhagalpur (Bihar) Pin-812001 फोन-8709162766, 8252924240
Email = rimajaiswal64@gmail.com
पुत्री- रीमा जायसवाल : 30-3-1991, 5'1", रंग- साफ, M.Com, (ACCT) Diploma in Computer Application. Banking. संगीत व पाकशास्त्र की रूचि।

26. **अभिभावक :** श्री रमेश बाबू जायसवाल (Ex-Air India), गौत्र-सौगारा, सी-7/207, यमुना विहार, दिल्ली-110053 (M) 9818970975
पुत्री : शिल्पा जायसवाल 26-11-1995, (7.00 A.M. Delhi) 5'3", B.A. (History Hon.), Doing D.I.E.T. from Gwalior in 2nd year, सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट।

27. **अभिभावक :** श्री राकेश जायसवाल (Own two renowned Hotels at Moga, Real Estate Business, and Rental Income), M : 9316273798, 9888043798
पुत्र : शुभम जायसवाल, B.A, LL.B, Preparing for Judicial, 5'8", 26-1-1991, (3.11PM, मोगा) गोरा, आकर्षक।

28. **अभिभावक :** श्री राजेश कुमार, 56/L-I, कृष्णपुरी, साउथ बोरिंग रोड, पटना-800001, M-9234757531, 8521342371.
पुत्रीः मुदिता जायसवाल 15-3-89 5'4", Fair, B.A, PDGM, Comp. Sc., सम्पन्न परिवार अपेक्षित वर, बिहार पटना के समीप और सर्विस या व्यवसाय हो।

29. **अभिभावक :** श्री सुरेन्द्र कुमार जायसवाल (Engineer), D-3, Rachna Vihar, Borkute Layout, Narendra Nagar, Nagpur-440015 (M) 09595483195, 09372718546,
Email : skjaiswal5@rediffmail.com
पुत्र : अनुराग जायसवाल, जन्म 28.2.1980, (5'9')] रंग-गेहुँआ, B.Com (Computer Application), Nagpur University, Working as Accountant with M/s GAMON India Ltd., Posted at Mumbai.

30. **अभिभावक :** श्री संतोष कुमार जायसवाल (प्रसिद्ध व्यवसायी) जायसवाल निवास, सोना बाबू का गैरेज, हाजीगंज, पटना सिटी पटना (बिहार) M : 8252518584, (0612)-2616236, Whatsapp : 9835298796
पुत्र : हितेष जायसवाल, 5'8", जन्म 19-9-1989 (पटना), LL.B., B.Com., NSSL लिमिटेड, नागपुर में Asstt. G.M. पैकेज 12 लाख रुपये; वर्तमान पता : 101F, Block 5, रिंग रोड त्रिमूर्ति नगर, नागपुर (महाराष्ट्र), सुंदर, अत्यंत स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

31. **अभिभावकः श्री सुरेशचंद जायसवाल,** प्रो. रामचंद्र शिव रेवडभ अलवर, मकान नं. 710, आबकारी गोदाम के सामने, ईव्ज चौराहा, मेरठ शहर M. 9837426871, 9808114635
पुत्र- अनुज कुमार जा., (ऐडवोकेट) आयु 32 वर्ष, 5'8", B.Com., LL.B. मेरठ कोर्ट में वकालत कर रहे हैं।

32. **अभिभावक-** राजकुमार वालिया, (Rd. JE) H.No. 473 Dalima Vihar, Rajpura, Dist. Patiala (Pb.)-140401 M.-9888027110
पुत्र- अमित कुमार वालिया, 5'7", 12-8-1975 (05:45am S Nabha Pb) Australia Citizen, Fiar Taxi operator, 40 lac package

33. **अभि० –** डा. एस.डी. घनेटवाल (जायसवाल), B-1/8 गांधी पथ चित्रकूट योजना वैशाली नगर जयपुर (राज.) -302021, M 09413900991, 0141-4020789
पुत्र– सिद्धार्थ घनेटवाल (जायसवाल) (15-2-1992 जयपुर, राजस्थान), B.Tech. com. Science Software Engineer in HPE Bangalore 6', अच्छा पैकेज बी.टेक. तथा कार्यरत कन्या अपेक्षित।

34. **अभिभावक–**श्री सुरेश कुमार जायसवाल (सरकारी सेवा) वार्ड नं. 4, लक्ष्मीबाई मार्ग, खाटी कुंडी चौक, खिलचीपुर जिला-रायगढ़ (म.प्र.) फोन न.–7879161099, 9669401914
पुत्री–आस्था जायसवाल, जन्म–6-12-1992, 26 वर्ष (19.55 खिलचीपुर) 5'6', M.Tech (IT), T.C.S. इंदौर में सेवारत पैकेज 5.6 लाख

35. **अभिभावक–** प्रोफेसर डा० टी० एन० चौधरी (रिटायर्ड प्रोफेसर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट) जवाहर लाल रोड (चैम्बर ऑफ कामर्स के पास) सरैयांगज, मुजफ्फरपुर (बिहार) 842001 मोबाइल नं०. 9835229883, (0621)-2246105
पुत्र– यशस्वी आलोक 38 वर्ष गोरा 5'7", MBA, MCA एवं M.Tech निदेशक कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेकनोलाजी। आय 15 लाख प्रतिवर्ष गोरी टेक ग्रेजुएट कन्या अपेक्षित।
पुत्री– डा० रजनी जायसवाल BHMS, MBA गोरी 5'2" HR Manager in MNC नई दिल्ली, 36 वर्ष, पैकेज 10 लाख।
नातिन– मुदिता जायसवाल (पटना निवासी) अत्यंत गोरी सुन्दर 5'5" बी.ए. (इंगलिश) एम.बी.ए. की छात्रा पिता रि० शिक्षक श्री प्रमोद कुमार निवासी L1/56 श्रीकृष्णापुरी, पटना-8001

36. **अभिभावकः वीरेन्द्र कुमार जायसवाल (बिजनेसमैन),** Sumrit Mandal Campus, Jail Road, Tikamanhji, Bhagalpur M.: 943121533, 8969255995
पुत्र- आदित्य जायसवाल, 27-5-1988, (5.15 pm) 5'2", milky white, MBA, Asst. Manager, Canara Bank.

37. **अभिभावक–**श्रीमती विभा देवी (पत्नी स्व. ध्रुव नारायण प्रसाद गुप्ता) फोन न.–7488196750, 9560290732, 9911515253 (श्री सुनील, मामाजी)
पुत्री–राधा, जन्मतिथि–17-2-1989, (वेतिया पश्चिम चम्पारण) 5'4', fair, B.Sc. (Hons) in Zology.

38. **अभिभावक–**श्री किशन लाल राय, फोन न.–925056773, 9990252526 Redt. from DDA, Sultan puri, Delhi
पुत्र–संदीप राय, जन्मतिथि–12-7-1990, (दिल्ली) 5'8", B.A. दिल्ली सिविल डिफेंस में जाब, 25,000/- मासिक स्मार्ट, साफ रंग।

39. अभिभावक : Om Praksah Jaiswal, A cropolis flat no. 206, J-block Gothapatna, Odisha. Pincode-751003; Mob : 7750982025; E-mail : ajoytce@gmail.com, ssuniti1286@gmail.com

पुत्री: Omrita Jaiswal : DOB : 26/10/1990, Time : 7:30 pm, place : Pallahara (Odisha) Height : 5'5", complexion : fair, Education : MSc agriculture (Agronomy) BSc agriculture, Professional details : Working in Odisha govt. in Horticulture department as a Gazetted rank officer posted near Bhubaneshwar.

40. अभिभावक : Chanderkanta 5, Jooly Complex Abhiyanta Nagar, Nashik (Maharastra)-422008, Mob : 9871262622, 8983574660

पुत्र: Gaurav, DOB : 29/4/1982, Time 4:16 PM Delhi, Height : 5'8", Qualification : BCA, professtion ; Deals in finance and share market, Income : Rs 30,000/-pm, Mother Teacher, Elder sister settled in Canada.

41. अभिभावक : Rakesh Prasad Jaiswal () (Retired from Air Force, Maternal Grand Parent - Rajendra Nagar, Patna, Bihar, Mobile No. 9818780624, 9910174532; Email ID - rakesh@basawatech.com

पुत्री: Sakshi Jaiswal: DOB - 18th Sep 1993, Qualification - MA in English, B. Ed, CTET (Part I & II) Cleared. Advanced Diploma in Italian Language. schooling from Air Force Bal Bharati School, Lodhi Road, New Delhi. BA English (Hons) from Delhi University, B. Ed from IP University, Advanced Diploma in Italian Language from Daulat Ram College, DU, MA in English.

42. Father: Santosh Jaiswal (Dy. Director, ECS), (Home Town Gorakhpur, U.P.) D-2/10, Phase-I DRDO Township, CV Raman Nagar, Banglore, Karnataka Mob- 9958014369, 9873341668

Son: Rishabh Jaiswal, DOB 16-10-1997, B. Tech. from (BHU) Varanasi, Software Development Salary Package - 12 Lacs /p.a

43. Father: Ramesh Chandra Jaiswal, Rupani Sarees, Ambedkar Chowk Waidhan, Dist. Singrauli (MP) - 486886 Phone:- 9425389974

Daughter: Mansi Jaiswal, DOB 1-1-1994, 5ft 4-Inch, Complexion Fair, B. Tech. from IIT Allahabad, Working as Software Engineer in Microsoft. Salary Package - 18 Lacs /p.a

44. अभिभावक–श्री शैलेश राज मेवाड़ा, ACB, Office Street, आदिनाथ नगर, टैगोर नगर पाली, राजस्थान मो. न.–9462998760

पुत्र–मुकेश मेवाडा, जन्मतिथि–28-4-1989, 5'8", सायं 4.15 बजे, पावी, B.. LLB. साफ रंग।

45. अभिभावक : श्री के.के. जायसवाल व्यवसायी म.न. 2838, सै-15, सोनीपत, हरियाणा M : 9354824454

पुत्र : सिद्धार्थ जायसवाल, 10-9-1990 New Delhi, 6", 10 to 15 वार्षिक आय sale, purchases and aMC's of industries Genset, सुन्दर, पढ़ी लिखी, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए।

46. अभिभावक: श्री दिनेश कुमार जयसवाल Geology Dept. University of Allahabad, **Mob.** 9452695293, Address-21 A/1 केसरिया रोड़ चकिया इलाहाबाद,

पूत्री: आयुशी जायसवाल, DOB-24-02-1997, 7:45AM इलाहाबाद, 5'1", B.Com, MBA GB bykgkckn Working as a Enquiry officer, cahspor Microcredit Ltd, Varanasi, Package 5 Lakh/P.A.

47. अभिभावक: श्री राधेश्याम जायसवाल, सोती चौराहा, बड़हलगंज, जिला गोरखपुर पिन 273402, **मो.** 9935572972, 8527394426

पुत्र: अतुल कुमार जायसवाल, रंग साफ़, 5'7", जन्म वर्ष 1990, B.Com, M.Com, CA Final, M P में फाइनेंस मैनेजर.

48. अभिभावक: Sunil Kumar Gupta-ASC/RPSF; 204/148, Allen Ganj Prayagraj (U.P.) 211002; **Mob.** 7376484177, 8887842502, 9450181498

पुत्र: Siddharth Gupta, B. Tech. C.S., Age: 26 years; Hight:5'4"; Working in NMC, Required Graduate Virgo. Working/ Nonworking.

49. अभिभावक: Awadhendra Kumar (Retired from GAIL India Ltd as Dy. Gen. Manager.) Mob. 8826700440, 7081907573 Email ID: anujjaisal.101455@gmail.com Address: A-40, GAIL apartment, sector-62, NOIDA Distt: Gautam Budh Nagar, Uttar Pradesh- 201309

पुत्र: Anuj Jaiswal 29 Years, DOB:15 July 1992, Time:07:30 AM, Place: Allahabad, Uttar Pradesh, Gotra: Kashyap, Height: 5'5" Complexion: Medium, Body Structure: Normal, Educations B. Tech Chemical Engineering. Professions Manager (E3) Brahmaputra cracker and polymer Ltd. Income: INR 1700000 / Year

50. अभिभावक : श्री आनन्द कुमार जायसवाल, 28/A, 40 फीट रोड, पटेल नगर, मुगलसराय, चन्दौली, पिन 232101. मोबाइल न.–7376552127, 7007097405

पुत्र : कौशल जायसवाल 5'10", 29 वर्ष, सुन्दर, स्मार्ट, आकर्षक, ग्रेजुएट, एम.बी.ए. नरसीमुंजी से पत्राचार माध्यम, पैकेज 6 रु. लाख

51. अभिभावक–सुरेश शाह Businessman (Proprietor at Shah Electronics, Lajpat Rai Market, Delhi) **मो.न.–**9818625007

पुत्र–सिद्धार्थ शाह **जन्मतिथि–**04-April-1992, 5'7', Pursuing CFA (Chartered Fianancial Analyst) Graduation : B.Com(Hons.) from B.R. Ambedkar College, University of Delhi, Occupation : Propriator at Fans Manufacturing Business in Moti Nagar, Delhi (Also works in family owned business)

52. अभिभावक : C.P. Antal (रिटार्यड Escutive Engg. (PWD) President Esstt. New Delhi, B-3/728 एकता गार्डन, पटपड गंज, दिल्ली **मोबाइल न.–**9760666029

भतीजे : लव कर्णवाल, कुश कर्णवाल जन्मतिथि 10/12/93

AM, 5'7", B.Com.+Diploma in Engineering, Working Service Engineering ICU Ventilater

53. **अभिभावकः** Anil Kumar Jaiswal- Electronic Engineer, 122A/11, Gautam Nagar, New Delhi-110049, Mob. 98106 01579;E-Mail:jkanil@hotmail.com
पुत्रीः Mayuri Jaiswal, B. Tech. Bio-Technology, DOB. 13-06-1993, Time: 01:47 AM; Place: Bareilly; Height: 5' 6"; Deputy Manager in reputed company of Noida.

54. **अभिभावक :** श्री कृष्ण कुमार जायसवाल, (Retd Delhi Govt.) 1/11445, Subhash Park Shahadara Delhi-32 Ph : 9818655927, 9250134627
पुत्र : तुषार जायसवाल, 13-5-1992, Delhi, 5'10", सुन्दर स्मार्ट, MBA (IT) B.Tech Engineer Noida vegetarian family, 5 Lac P/A

55. **अभिभावक :** श्री सुरेश कुमार जायसवाल, (Business man) R-5/114 Raj Nagar Gzb.-201002 UP Ph : 9313546502, 9927752659
पुत्री : रिचा जायसवाल, 15-1-1998, (7:12 PM, दिल्ली) 5'4", BBA (GGSIPU Delhi) Advance Diploma in culinary Arts, APCA Bangalore.

56. **दिल्ली स्थित प्रसिद्ध NIFT (National Institute of Fashion Technology) से 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के माध्यम से Leather Fashion Technology में दक्षता प्राप्त 24 वर्षीय (13-2-1997) ग्रेज्युएट सुन्दर गौरवर्ण, सुशील सुयोग्य स्मार्ट कन्या के लिये प्रतिष्ठित परिवार के सुशिक्षित, सुस्थापित योग्य वर की आवश्यकता है। कृपया सम्पर्क करें: दिल्ली M-9013262811**

57. **अभिभावकः** Mr Ranjit Choudhary, Surya Nagar, Ramprastha Colony, Delhi, India Phone no: +91 9717405875
पुत्रः Rishabh Choudhary, Philadelphia/ New York DOB & Place of Birth: 04/11/1993: 21.45, Alwar, Rajasthan Height: 5.7" Education: MS in Business Analytics from Drexel University, Philadelphia, USA - 2021 B.Tech in Electronics & Electrical Engineering from Rajasthan Technical University, India - 2017.

58. **अभिभावक :** भोला नाथ जायसवाल (सरकारी नौकरी), F-83 कुंवर सिंह नगर, दिल्ली-41
मोबाइल न.–9968936545
पुत्री : सुनीता जायसवाल 5'2", 04 -01- 1995, सुन्दर, गोरा, 12वी पास / दिल्ली डिप्लोमा - नर्स (G N M) पश्चिम विहार प्राइवेट हॉस्पिटल मे कार्यरत ।

59. **Father-** Late Mr Devesh Kumar Jaiswal Mother's Meenu Jaiswal (Rtd School Principal) Contact - 9899289937
Son : Harsh Vardhan Jaiswal, DOB: 18th April 1994 Birth Time: 5:30 AM, Height: 5'8" Qualification- B.Tech from IIIT-Delhi Working in a MNC in Delhi, Package: 37 lacs

60. **Father-**Madan Lal Jaiswal S/O late Murli Chand Jaiswal from Lodha Mandi Peeth Bazar Jwalapur Haridwar (Uttrakhand) 249407 Ph. No.- 9012654987
Daughter-Khushboo Jaiswal, Date of birth-1 July 1993, Birth place-Jwalapur Hridwar, Height- 5'2'' Colour complextion- fair yellowish Qualification- graduate with B.A, knowledge of basic computer with tally Work experience- teaching and accounting work.

61. **Father-**Shri Jai Prakash Jaiswal, Retired, 163, Panchwati enclave, Sector 4A , Shatabdi Nagar, Delhi road, Meerut. Contact Number : 9759913561.
Son. Sanchit Jaiswal, Date of Birth : 22 April 1993 Time of Birth : 7:18 AM Place of Birth : Modinagar, Uttar Pradesh Rashi : Varishabha (Taurus) Complexion : Wheatish Height : 5 feet 9 inches Education : Master of Business Administration from Arunachal University. Bachelors of Hotel Management & Technology from AKTU, Lucknow. Job/Occupation : Brand Ambassador for Brown Forman at T-3 IGI Itnl Airport, New Delhi. Salary : 7-8 lacs.

62. **Father-**Mr. Alok Kumar Gupta, Retired (Indian Air Force) Delhi Contact : 9711289365, 9654122623
Son-Ragesh Jaiswal, D.O.B : Sep,1995, Height : 6'0" Graduation : BTech from IP University (2015-2019) Designation : Currently working as Senior Business Analyst in Polestar Solution, Noida (It's been 3 Years) Salary : 30 L.P.A.

63. **Father-**Sh. Kishan Lal Rai, Retired From (DDA), Sultan Puri New Delhi, Contact No : 9990252526, 7015301485, 7027064031
Son-Sandeep Rai (Sonu) Dob :12/07/1990 (12:12PM) Birth Place : Delhi Height :5'8 Manglik :Yes Education : B.A (Delhi University) Delhi Transport Corporation (Govt) Salary : 30000/-

64. **Father-**Piyush Singh Jaiswal, Service, now started his own business Indirapuram, Delhi/NCR
Son-Kshitij Singh, Dob : 08/11/1994(non-maglik) Time: 5:54 am (Rourkela) Height: 5°10" Phone: 8376915924 Qualification- B.E. (IIT Gandhinagar- Electrical) MBA (IIM Lucknow) Job: Searce, Pune, 27 Lakhs(present), RELIANCE JIO (R&D), MUMBAI (previous)

65. **Father-**Dr Avneesh Jaiswal, MD in Pediatric private practitioner, 759 Civil Lines, Opposite distt Judge, Sitapur Phone no: 9335156018(Mama) 9236036557(Mother)

Son-Dr. Satvik Jaiswal. Age:29years Height: 6 feet Weight: 80 kg Education: MBBS, MD in Pediatrics English, Hindi Birthdate: September 21,1993 non medico will be also considered.

66. Fathers: Dr Ram kumar Jaiswal MBBS MS (Optha) HOD BRD Medical college Gorakhpur. Mobile no 9452450502(mother)
Daughter: Dr Nikita jaiswal MBBS Currently Preparing For Neet Pg And Non PG JR 28years medium built and fair. Preferably looking for doctor only (postgraduate) pursuing or completed.
Son: Dr Nikhar jaiswal MBBS preparing for NEET PG 29 years medium built and fair. Mobile:- 9452450502 (mother).
Preference Medico girl pursuing or completed post graduation

67. Fathers: Anil Jaiswal (BusinessMan), Buxar, Bihar
Daughter: Ekta Jaiswal, D.O.B - 21/01/1999, Height:- 5.2, Complexion:- Fair
Education: Post Graduate (MBA), Working as HR in MNC (Birlasoft Ltd.) M:- 7761962755

68. Fathers: Ram Swaroop Prasad Jaiswal, Obra, Aurangabad, Bihar
Son: Krishna Jaiswal, D.O.B-22/05/1993, Height:- 5.9, Complexion Fair, Education: Graduate History Hons. from Delhi University, Persuing M.C.A from (IGNOU) Occupation: Family Business, Brother :- Ajay Jaiswal (Dwarka, Delhi) Mobile:- 9990372173, 9798498982

69. Fathers: Virender Chaudhary Business Man in Trading of electrical and electronics industry (Manufacturing /Import/Export) Own Company: - M/s Chaudhary enterprises, Delhi
Son: Shravan Kumar Chaudhary, D.O.B - 19.08.1991, Gotar- Kashyap Height:- 5.8
Education: B.Tech. Electrical and Electronics from Guru gobind singh university, Delhi (Regular) Occupation: Business Man in Trading of electrical and electronics industry (Manufacturing/Import/Export) Own Company: M/s Daksh Enterprises, Delhi
Mobile:- 9811243318/ 9899955473

70. Fathers: Arun Jaiswal, Post AGM in Yamaha moter cycle Live in Faridabad, Haryana, Mobile No 9971240907, 9999450614
Son: Kshitij Jaiswal, Date of birth 9-3-1995 3:10 P.M. Height 6' feet Complexion. Wheatish B. Tech in Computer Science, Jaypee institute of Technology Noida, Job Nice Technology pune, Package 25 lac +

71. Mama : Sunil Kumar Jaiswal B-749, New Ashok Nagar, Gali No. 22 East Delhi-96 M. 9911515253
Daughter: RADHA SONI, Height: 5' 3" Complexion: Fair Birth Details: 17 February 1989 Bettiah (West Champaran, Bihar) B.Sc. (Honors) in Zoology from Delhi University.

72. अभिभावकः ममता जायसवाल w/o स्व. श्याम जी जायसवाल (शिक्षा विभाग में सरकारी जॉब) हनुमत नगर कालोनी साकेत हॉस्पिटल के पीछे आयोध्या (फैजाबाद) मो. न.–9793465640
पुत्री- सौम्या जायसवाल (आंशिक मांगलिक) 5'1" 23–04–1995 रंग साफ, स्मार्ट, सुन्दर B.Sc., B.T.C. (Up Tet, C.Tet Qualification हेतु सरकारी जॉब या प्राइवेट जॉब वाला वर की आवश्यकता है लोकल शहर और सरकारी जॉब को प्राथमिकता।

73. Father- Dharmendra Jaiswal, Address-UP Chitrakoot karwi, Contact-73795 97331/ 73790 35195
Daughter- Anchal jaiswal, Birth date-10/12/ 1997, Birth Time-10:10 pm, Birth place-Chitrkoot karwi UP, Height-5'3", Education-M. S. C in (chemistry), Complexion-Fair, Diet-Vegetarian.

74. Father- Shri Sudhakar Jaiswal, Business man Address-Civil line ITI road Fatehpur UP, Contact-9169809259
Son- ABHISHEK JAISWAL, Mangalik, Birth date-19-09-90, Birth Time-10:10 pm, Height-5.11, Education-Graduation Kirori Mal College University of Delhi, Occupation: Manager (Scale 2) in IDBI Bank, Income : 14 lakhs pa.

75. Father- Sh. Rajendra Kumar Jayaswal, PA to Collector(Rtd) Gwalior M.P Govt. Address: Main Road Daulatganj Lashkar Gwalior, M.P-474001 , Contact-9425336094, 9425745385
Son- Mr. Aditya Jayaswal, Birth date-06.09.1989, Birth Place: Gwalior, M.P, Birth Time-09:16 am, Height-5'6.5'', Education: B.E (Electronics & Communication), Schooling-KV NO.1 , Occupation: Govt. Job, JTO BSNL, Income : 10 lacs p.a.

76. Father- Dinesh Chandar Jaiswal, 113 Bihari Kuti lukarganj, Contact-9305094705
Son- Sudhakar Jaiswal, Education: MA, Civil Line ITI Road-Fatehpur UP, Pin code 212601, Contact:9169809259

77. Father- Umesh Chander Jaiswal, Occupation: Retired from Ministry of Tourism and civil aviation. Mob-+91-9968135156
Son- Abhay Jaiswal, DOB: 19th August 1996, Time of Birth: 05:55, Place of Birth: Delhi, Height: 5 feet 11 inches, Complexion: Wheatish. Education B.Sc (3 years degree course from Indian Institute of Hotel Management, Gwalior), Post Graduation: Hotel Management (level 8) from New Zealand with Pacific International,

Hotel Management School, Occupation-Working as senior duty manager at 5-star Rydges Hotel, Rotorua, New Zealand since 2020.

78. Girl's Name:- Unnati Jaiswal, D.O.B. :- 16 October 2000, Time of Birth:- 9.50 AM., Place of Birth :- Sirsa Haryana, Qualification:-Graduation Doing Master of Science (Biology), Status :- Permanent USA resident doing Govt Job in School as Science Teacher, Contact No. kkantj72@gmail.com, What's app msg only :- 001-601-926-7776, 001- 601-668-6286
Boy: Anshuman Jaiswal, DOB 1-9-1999, Time of Birth: 9.20 PM, Place of Birth Allahbad, U.P. Doing Master of Bio-informatics, Vally State USA What's app msg only : 001-601-926-7776, 001- 601-668-6286

79. Father- Parveen Jaiswal, Residence: #639, Jaggi Garden, Ambala City,b Haryana, 134007, Contact No: +91-87083-95607
Son-Aman Jaiswal, Date of Birth : 30.6.1997, Time of Birth : 9:12 PM, Place of Birth : Ambala City, Height : 5.5 ft, Education : MCA, BCA (Kurukshetra University) Profession : Digital agency in Ambala (Website Design, Development, Digital marketing), Income : INR 50,000 + Month.

80. Father-Ravinder Nath Jaiswal, Occupation: Employee, Contact Person : Ravinder Nath Jaiswal, Contact Number : 9811404531, Email ID : Ravindernathjaiswalegmailcom
Daughter- Pooja Jaiswal, Date OF Birth : 25-March-1998, Place OF Birth : Delhi, Gotra : Kashyap, Height : 5'1, Complexion Fair, Bachelors : Bachelors of Commerce, Work : Fraud Prevention Analyst.

81. **अभिभावक: कांता जायसवाल,** RZ/G-1, नया रोशनपुरा, एक्सटेंशन (40 फुटा राड) नजफगढ़ दिल्ली-110043 फोन-9555983861
पुत्र-नीतिश कुमार जायसवाल 3-9-1992 (समय 1.30 AM), 172 से.मी. साफ रंग, केन्द्रीय राजस्व (लेखा) विभाग में स्टेनोग्राफर ग्रेड-2 सरकारी नौकरी।

तलाक शुदा (Divorces'sr), विधवा (Widow)

1. **अभिभावक-** श्री आनन्द स्वरूप जायसवाल, 10/26, सेक्टर-3, राजेन्द्र नगर साहिबाबाद 201005 (गाजियाबाद) उ.प्र., M.-9871262622
पुत्र- उत्तम कुमार, 35 वर्ष, **तलाकशुदा,** कोई संतान नहीं है, जन्म 23-07-1977 (मथुरा, 10.10 P.M)

2. **अभिभावक :** श्री श्यामसुंदर जायसवाल, ठाकुर विलेज, कांदिवली (East) Ph 400101
पुत्र : Divorcee 38 वर्ष, 5'8" सुन्दर, स्लिम, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिभाशाली, कांवेंट प्रशिक्षित, B.Com, LL.B. व्यवसाय में सुस्थापित, **विवाह के बहुत थोड़े समय पश्चात ठोस कारणों से अलगाव हो गया।** सुन्दर, शिक्षित अच्छे परिवार की कन्या अपेक्षित। विवरण प्रेषित करें E-mail : vivah6@hotmail.com

3. **अभिभावक :** स्व0 रमेश सिंह वर्मा, H.No. 12, आनंद गार्डन, राजेन्द्र पार्क पुलिस स्टेशन के पास, रेलवे स्टेशन के पास गुड़गांव-122001, M : 9136760393
पुत्र : राकेश सिंह **(तलाकशुदा)**, 34 वर्ष, मैट्रिक पास, 5'5", स्वस्थ, गेहुआ रंग, अपना मकान, अपनी किराने की दुकान।

4. **अभिभावक :** श्री अजय कुमार जायसवाल H.No. 485 मेसर्स आयुष फ्लोर मिल्स पोस्ट घोड़ासहन जिला पूर्वी चम्पारण (बिहार)-845303
पुत्री : अर्पिता जायसवाल (तलाकशुदा), 32, वर्ष 5'5", रंग गोरा सुंदर सुशील ग्रेजुएट मानसिक तनाव के कारण संबंध विच्छेद सुंदर शिक्षित परिवार, संतान रहित वर अपेक्षित।
Email: Subu4u87@gmail.com, Mob. No. 9560356897

5. **अभिभावक :** श्री रामचन्द्र चौधरी, (Acctt, Hotel Midway), A-1/231, सेक्टर-4, रोहिणी, दिल्ली-110085, M-9211098672, Email : dchoudhary90@gmail.com
पुत्री : ज्योति चौधरी **(तलाकशुदा)**, PGDFT, M.Com (Du), Adriel High School, Delhi में शिक्षिका, जन्म 12-1-1988, 5'4" वेतन 15000/- प्रतिमाह, अन्य शिक्षेतर गतिविधियों में सक्रिय भाग।

6. **अभिभावक: श्रीमती मीना जायसवाल,** (W/o स्व. राजेन्द्र जायसवाल) संस्कृति अपार्टमेंट Upper Ground Floor, 4, Plot No. 225, Niti Khand-I, Indirapuram संस्कृति रेंजीडेंसी गाजियाबाद-201010(यू.पी.)फोन-8448219160, 9415132661
पुत्री- सुमन (तलाकशुदा) 27-08-1988 (वाराणसी, 3 AM), 29 वर्ष, 5'3", साफ रंग, एम.ए. (इग्लिश)।

7. **अभिभावक:** Sh. Y.P. Ahluwalia, 109 Nimri Colony Ashok Vihar Phase-IV Delhi-110052, M : 9868704809
पुत्र- Aman Walia, (7th Ocober 1974,) Govt Service in M.C.D. as Astt Sanitary Inspector (Pure Vegitarian) **तलाकशुदा,** Height 5'8", fair, salary 50,000+स्मार्ट।

8. **अभिभावक: श्रीमती सम्पूरन जायसवाल,** (W/o स्व. सुरेश कुमार जायसवाल) G-194-195, जहांगीर पुरी, दिल्ली-33 फोन-9873809288, 9684750486
पुत्री- अंजू जा. (तलाकशुदा कोई बच्चा नहीं) 28-07-1979 (दिल्ली, 7 AM), 5'3", M.B.A., गेहूंआ रंग, प्राइवेट सर्विस 15,000/- मासिक।

9. **अभिभावक: रिटायर्ड इंजीनियर वेस्टर्न रेलवे, Pelican-15, Aakriti Eco city, Bhopal-462039 7666933311; sjaiswal69@yahoo.co.in**
सुनील जायसवाल (तलाकशुदा), 23-7-1969, 6'1", complexion very fair, MBA (Finance) from Institute for Technology and Management, Mumbai, BE(CS) from Nagpur University. Annual Income 25 lacs to Rs. 30 lacks per annum.

10. **अभिभावक: डा. शीतल पी. जायसवाल,** (Chief Excutive & President Mehta Group of Campanies, 2/92, Liberty Grandionagar, Ghatkopar (E) Mumbai-400077, M.-7758970403, 9869461650, Email: krs3ram@gmail.com
पुत्र-संदीप जायसवाल (तलाकशुदा) 2-08-1972 (वाराणसी, युपी, 5'11", B.E. (Production), MS(USA) Fair & Handsome, AS (Applied Science, USA) presently working at US Multinational in Mumbai, package 48 Lac p/a.

जायसवाल जागृति के संस्थापक

श्रद्धेय स्वर्गीय श्री पन्ना लाल जायसवाल, श्रद्धेय स्वर्गीय श्री बाल्मिकी चौधरी, श्रद्धेय स्वर्गीय श्री राजा राम जायसवाल

जायसवाल जागृति के पदाधिकारी (2021-2023)

डॉ अशोक चौधरी (अध्यक्ष): 9810056923
श्री बृजमोहन जायसवाल (महासचिव) : 9868241044
श्री माखन चौधरी (वित्त व्यवस्था) : 9911213033
श्री पंकज जायसवाल (कोषाध्यक्ष) : 9818426123
श्री अशोक कुमार जायसवाल : 9818581776
श्री नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल 9582793033

जायसवाल जागृति संस्था नीति निर्धारण/प्रबन्ध समिति

श्री कृष्णदास चौधरी : 9868801751
श्री कैलाशनाथ गुप्त : 8882019312

व्यवस्था एवं सहयोग

श्री बृजमोहन जायसवाल (प्रत्रिका प्रेषण प्रभारी) 9868241044
श्री हरिशंकर जायसवाल (छायाकार) : 9811131914
श्री शीतल प्रसाद जायसवाल (वैवाहिकी व कार्यक्रम व्यवस्था): 7827621475
श्री अजय जायसवाल (Website + संयोजक युवा मंच):
9990372173, 9818389050

महत्त्वपूर्ण सूचना (1)
'जायसवाल जागृति' सदस्यता-शुल्क

सदस्यता शुल्क की दरें इस प्रकार हैं:

संरक्षक सदस्य : **11,000/-** रु. (परिचय रंगीन फोटो सहित)
अधिष्ठाता सदस्य : **5,100/-** रु. (विस्तृत परिचय फोटो सहित)
सम्मानित सदस्य : **2,500/-**रु. (संक्षिप्त परिचय फोटो सहित)
आजीवन सदस्य : **1500/-** रु. (7 वर्ष के लिए)

विज्ञापन-दरें

आवरण (कवर) चौथा पृष्ठ	: **5,100/-** रु.
आवरण (कवर) द्वितीय पृष्ठ (संरक्षक)	: **11,000/-** रु.
आवरण (कवर) तृतीय पृष्ठ	: **3,000/-** रु.
विशेष रंगीन पृष्ठ	: **2,500/-** रु.
साधारण पृष्ठ	: **1,500/-** रु.
साधारण आधा पृष्ठ	: **750/-** रु.
साधारण चौथाई पृष्ठ	: **400/-** रु.

ध्यानाकर्षण : जिन माननीय सदस्यों की वार्षिक सदस्यता पूर्णतः समाप्त हो गई है, सदस्यगण कृपया **1500/-** रु. का शुल्क पत्र प्रेषित करके आजीवन सदस्य बन जाएं, अन्यथा उनकी सदस्यता स्वयमेव समाप्त हो गई है। नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य कर दिया गया हैं। ध्यान रखें। जिन सदस्यों को हमारे प्रामाणिक प्रयासों के बावजूद डाक से पत्रिका नहीं मिल पाती है, वे कृपया एक वर्ष का 200 रुपये का अग्रिम कोरियर-शुल्क प्रेषित करके कोरियर से पत्रिका मंगा सकते है। राशि हमारे कोषाध्यक्ष के निम्नलिखित पते पर प्रेषित की जा सकती है।

महत्वपूर्ण सूचना (2)
जायसवाल जागृति वेबसाइट

Jaiswal Jagriti Has Launched It's Own Website

कम्प्यूटर क्रान्ति एवं सूचना-विस्फोट **Computer Revolution & Information Explosion** के इस युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना किसी भी जीवन्त संस्था के लिए अनिवार्य हो गया है। फलतः स्वजाति बंधुओं के लाभार्थ **www.jaiswaljagriti.com** नामक वेबसाइट का शुभारंभ किया गया है। हमारा **Email; jaiswaljagrity@gmail.com** है। आप इससे सम्बन्धित किसी भी जानकारी के लिए हमारे युवा मंच के सचिव, तथा वेबसाइट प्रबंधक श्री अजय कुमार जायसवाल *(Sr. Software Engineer)* से उनके **Email:ajayjaiswal.india@gmail.com** तथा मो. न. 9990372173 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

बन्धुवर, समाज के हर तबके के लोगों को अपने लड़के-लड़कियों के लिए योग्य सम्बन्धों के चयन में कुछ न कुछ कठिनाइयाँ तो अवश्य पेश आती हैं, चाहे उसका सामाजिक अथवा आर्थिक स्तर कुछ भी हो। अतः अब आपकी सुविधा के लिए आप हमारे वेबसाइट में आपके विवाह योग्य लड़के-लड़कियों का फोटो सहित विवरण प्रकाशित करा सकते हैं। इसके लिए फिलहाल मात्र 500 रु (पांच सौ रुपये) का शुल्क रखा गया है। आप शुल्क की यह राशि निम्नलिखित दो में से किसी भी एक पते पर डिमांड ड्राफट / चेक या मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते है।

आप अपनी राशि हमारे **AXIS Bank** के **A/C no. 015010100247337, IFSC-UTIB-0000015** में भी सीधे जमा करा सकते हैं। किंतु इसकी रसीद अथवा इसकी फोटोप्रति हमारे पास निम्नलिखित में से किसी एक पते पर अवश्य भेंजें, अन्यथा यह पता लगाना मुश्किल होगा कि यह राशि किसने प्रेषित की है।

टाइपसेटिंग : शुभम् ग्राफिक्स : 9811021617 प्रभास गुप्ता
Email : shubhamprabhas@gmail.com

सम्पादकीय पत्र व्यवहार
नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल
विश्वनाथ भवन, बी-36, सैक्टर 23, नौएडा-201301
मोबाइल नं. 9582793033

कोषाध्यक्ष, जायसवाल जागृति
पंकज जायसवाल
17-डी, एम आई जी, डी.डी.ए. फ्लैटस्,
गुलाबी बाग, नई दिल्ली-110007
दूरभाष: 011-41687487 मोबाइल : 9818426123